दिसंबर - 2015
वर्ष - 14 अंक - 1

सुगन्ध

VIZAG STEEL
Pride of Steel

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका

धारणाएँ निराश भी करती हैं...

प्राय: मनुष्य का मस्तिष्क संवेदनाओं और अनुभूतियों के आधार पर कार्य करता है। अक्सर हम जैसा सोचते हैं, वैसा ही व्यवहार करते हैं, भले ही हमारा सोचना उचित हो या ना हो। कभी-कभी तो हम अपनी धारणाओं के इतने गुलाम हो जाते हैं कि दूसरे तर्कों का विरोध करने लगते हैं। जब धारणाएँ बहुत प्रबल हो जाती हैं और हम उनके विरुद्ध सोच भी नहीं सकते तो हमारे भीतर विक्षिप्तता का संचार होने लगता है और हम विक्षिप्त सा व्यवहार करने लगते हैं। इसीलिए वैज्ञानिक तर्कों में सत्य के अन्वेषण पर ही अधिक बल दिया जाता है।

जैसाकि हमारे समाज में नदियों को पवित्र, जीवन दायिनी और सर्वथा शुद्ध माना जाता है। इसीलिए धार्मिक अनुष्ठानों में नदी के पवित्र जल का उपयोग व संस्कारों को नदियों के किनारे करने का प्रचलन है। ऐसी ही धारणाओं के कारण गंगा और देश की तमाम नदियों में शवों को फेंका जाता था और माना जाता था कि पवित्र नदियों में दाह-संस्कार करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। दूसरी धारणा यह है कि पूजा सामग्री आदि को बहते हुए जल में ही विसर्जित किया जाना चाहिए। नदियों के मामले में ही तीसरी धारणा यह है कि नदी के बहते जल में गंदगी को अवशोषित करने की अद्भुत क्षमता होती है। इसीलिए शहर के नालों से लेकर औद्योगिक कचरे को नदियों में बहा दिया जाता है और स्वच्छ रहने का ऐलान कर दिया जाता है।

जबकि नदियों के संबंध में वस्तुत: तीनों धारणाएँ गलत हैं। फिर भी आयुर्वेद को महान और नदियों को माँ मानने वाले समाज ने अपनी गलत धारणाओं के कारण नदियों का क्या हाल कर रखा है, वह सब जगजाहिर है। जिस गंगा की पवित्रता के बारे में कहा जाता था कि गंगा में अमृत बहता है। आज उसी गंगा में लोग स्नान करने से डरने लगे हैं। उसकी गंदगी को देख नाक-भौंह सिकोड़ने लगे हैं। साथ ही एक नई धारणा बनने लगी है कि भारत में नदियों का जल विषाक्त हो चुका है। इसलिए यह संभव है कि भविष्य में हमारी भावी पीढ़ी नदियों की पवित्रता की बात को सिरे से नकार दे और नदियों के पास जाने से नाक-भौंह सिकोड़ने लगे।

हमारी राजभाषा हिंदी भी कुछ इसी तरह की गलत धारणाओं की शिकार है। आजादी से पहले देश की संपर्क भाषा हिंदी ही रही। स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के बीच बातचीत की भाषा हिंदी ही रही। आजाद भारत के लगभग सभी हिंदीभाषी राज्यों में प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम हिंदी अथवा उर्दू रही। हिंदी से मिलती-जुलती भाषाओं वाले राज्यों में हिंदी के प्रति अगाध प्रेम रहा, इसीलिए बंगाल, महाराष्ट्र, पंजाब और गुजरात आदि राज्यों के विद्वानों ने हिंदी में रचनाएँ कीं। हिंदीतर भाषी राज्यों में भी हिंदी के समर्थन में आंदोलन और अभियान चलाए (कुछ राजनीतिक विरोधों को छोड़कर) गए। लेकिन देश के नौकरशाहों और राजनेताओं ने देश में ऐसी धारणा का निर्माण कर दिया कि हिंदी में कामकाज करना अभी कठिन है। इसलिए देश में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित नहीं किया जा सका और इसके लिए आज तक जद्दोजहद करना पड़ रहा है।

यह भी सच है कि आज हिंदी जानने वालों की औसत संख्या सन् 1947 से अधिक है और राजभाषा के रूप में इसका बेहतर प्रचार-प्रसार भी हुआ है। साथ ही सन् 2011 की जनगणना के मुताबिक भारत ही नहीं, वरन् विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या में बहुत बढ़ोत्तरी हुई है। टी वी चैनलों के लोकप्रिय कार्यक्रम और हिंदी फिल्में देश के कोने-कोने में देखी जा रही हैं। देश में अधिकांश लोग हिंदी जानते हैं, फिर भी देश में ऐसा माहौल है कि शासन-प्रशासन का काम हिंदी में नहीं किया जा सकता।

आश्चर्य तो तब होता है, जब कोई हिंदीभाषी हिंदी में कहता है कि 'मुझे हिंदी नहीं आती।' पूर्व में इसी स्थिति को विक्षिप्तता की स्थिति कहा गया है। हिंदी के मामले में बनी हमारी गलत धारणा की वजह से आज गाँव-गाँव में मशरूम की तरह अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोले जा रहे हैं, जिनमें अप्रशिक्षित व असफल लोग अध्यापक बनने लगे हैं और प्रशिक्षित अध्यापकों वाले हिंदी अथवा प्रादेशिक भाषा के माध्यम वाले सरकारी प्राइमरी स्कूल गरीब बच्चों के पालन-पोषण का केंद्र मात्र बन कर रह गए हैं, जबकि सभी वैज्ञानिक शोध प्रतिपादित कर रहे हैं कि आरंभिक शिक्षा यदि अपनी ही मातृभाषा में दी जाए तो बच्चों की ग्राह्यता बेहतर होती है और उनका समुचित मानसिक विकास होता है।

राजभाषा हिंदी के विकास के संकल्प की धारणा के साथ 'सुगंध' का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ और आशा करता हूँ कि राजभाषा हिंदी के प्रति स्थापित धारणा बदलेगी और वास्तविक धारणा उसे विस्थापित करके अजस्र धारा के साथ पुष्पित-पल्लवित होगी। साथ ही आप सभी को स्वयं अपने और अपने सहकर्मियों की ओर से मंगलमय नववर्ष की कामनाएँ।

संपादक

विषय सूची

'सुगन्ध'
वी एस पी की त्रैमासिक गृह-पत्रिका
वर्ष-14 अंक-1 दिसंबर, 2015

संपादक
ललन कुमार

उप-संपादक
वी सुगुणा
गोपाल

संपादकीय कार्यालय
राजभाषा विभाग
कमरा सं.243, पहला तल
मुख्य प्रशासनिक भवन
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
विशाखपट्टणम-530 031
दूरभाष व फैक्स: 0891-2518471
मोबाइल: 9989317329 & 9989888457
ई-मेल: vspsugandh@rediffmail.com
vspsugandh@gmail.com

'सुगन्ध' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और उनके प्रति 'विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र प्रबंधन' जिम्मेदार नहीं है।

'सुगंध' पत्रिका हमारे संगठन के वेबसाइट 'www.vizagsteel.com' के 'Publications' लिंक में भी उपलब्ध है।

सृजनात्मक स्तंभ

कहानी

विजया नर्सिंग होम — डॉ राम प्यारे प्रजापति — 9
श्मशान ज्ञान — श्री चित्रेश — 15
चलो न पापा! — श्रीमती लक्ष्मी रानी लाल — 32
पड़ोसी — श्री शैलेंद्र तिवारी — 41

बाल-सुगन्ध

सहज पके तो मीठा होय — मास्टर लक्ष्मी नारायण — 37
एक और एक ग्यारह — मास्टर मयंक राज — 38
एक और एक ग्यारह — सुश्री फिजा तहसीन — 39

कविता

डॉ जय शंकर शुक्ल की कविताएँ — 22-23
श्री सुरेंद्र प्रबुद्ध की कविताएँ — 24-25

लेख

भारतीय अर्थव्यवस्था में 'मेक इन इंडिया' का महत्व — श्री भास्कर पट्नायक — 5
भारत के लिए लड़नेवाली अंग्रेज महिला 'एनी बेसेंट' — श्री सुभाष सेतिया — 13
कार्य-पद्धति एवं प्रशिक्षण की अनिवार्यता ... — श्री वी अप्पाजी कुमार — 19
मान बहादुर सिंह की कविता: सृजन के रंग — श्री सुरेश चंद्र शर्मा — 29
रोजर उर्फ कोठी वाला कुत्ता (व्यंग्य) — श्री अशोक गौतम — 34
भारत में सौर ऊर्जा के बढ़ते कदम — श्री नीरज हंस — 45

मानक स्तंभ

अध्यात्म - दान — 40
संगीत सरिता — 28
वी एस पी के बढ़ते कदम - तकनीकी सेवा विभाग — 35-36
आओ भाषा सीखें — 48
कार्य-कलाप — 26-27

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 23 दिसंबर, 2015 को आयोजित हुई। समिति के अध्यक्ष एवं संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने सबसे पहले पिछली तिमाही के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा हिंदी में किये गये कार्य की समीक्षा की। तत्पश्चात मार्च, 2016 से पहले 'मेक इन इंडिया' विषय पर अखिल भारतीय स्तर की राजभाषा संगोष्ठी के आयोजन करने का सुझाव दिया। उन्होंने सुझाया कि सभी विभागों में एस ए पी (SAP) के प्रपत्रों को पहचानकर उन्हें यथाशीघ्र द्विभाषी में परिवर्तित करने हेतु प्रयास किये जायें। अध्यक्ष महोदय एवं समिति के सदस्यों ने खान एवं वित्त विभागों के कर्मचारियों को हिंदी के प्रयोग हेतु अभिप्रेरित करते हुए उन विभागों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की सिफारिश की। बैठक में निदेशक (परियोजना) श्री पी के महापात्रा, निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद, निदेशक (प्रचालन) श्री डी एन राव एवं कार्यपालक निदेशकगण तथा महाप्रबंधकगण उपस्थित थे। बैठक का संचालन सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने किया।

आपकी पाती ✉ हमारी थाती

आदरेय संपादक जी,

'सुगंध' का जून अंक मिला। पलाश की फ्लैशबैक से हिंदी-उत्थान के प्रति प्रयत्नशील रहने की संपादकीय 'आइये पलाश बनें...' में अच्छी प्रेरणा भरी गई है। कथा-साहित्य पूर्व की भाँति ही सशक्त, प्रेरक और मर्मस्पर्शी है। अपनी कहानी 'स्वर्ग लोक में वफे पार्टी' के बारे में अपने ही मुँह से टिप्पणी क्या करूँ? पर, शेष तीनों ही कहानियाँ अच्छी कहानियाँ हैं। श्री गोपाल जी की 'धत् तेरे की' कहानी सारगर्भिता एवं भावुकता, श्री मदन सैनी की 'सहधर्मिणी' यथार्थ एवं नसीहत तथा डॉ मंजु शर्मा की कहानी 'आवारा बच्चे' मानवतावाद एवं मार्मिकता के लिए विशेष उल्लेखनीय हैं। मेरी दृष्टि में डॉ मंजु शर्मा की कहानी सर्वश्रेष्ठ कहानी है, तो 'सहधर्मिणी' के नायक यश की तरह भीरू मर्द अपवाद स्वरूप ही होते हैं। श्री ललन कुमार का लेख 'शरद जोशी...' व्यंग्यकार जोशी जी पर जोशीला चित्रण है। श्री सुभाष सेतिया के लेख 'भारतीय किले...' में किलों का सम्यक एवं सजीव वर्णन पढ़कर मजा आ गया। श्री सुजीत आर कर का व्यंग्य 'लगा वर्दी में दाग...' एक ओर यथार्थ के अति निकट है और दूसरी ओर गुदगुदी से भरपूर। अध्यात्म में 'मौन' का कितना गुणगान करें, कम है।

'बाल-सुगंध' स्तंभ में सर्वस्व श्रेष्ठ है। शेख शमीम बानू, किरण हरदे, गुरुविंदर सिंह तथा फरमान अली अंसारी, सभी की कविताएँ अच्छी लगीं। मास्टर गुरुविंदर सिंह की 'सुनो जवानों! गोली मारो बालीवुड के गानों को, भारत की पहचान बनाओ इन्कलाब के नारों को' पंक्तियों की जितनी प्रशंसा की जाय कम है, तो मास्टर फरमान अली की कविता 'दो शिकायतें...' सर्वश्रेष्ठ है। शमीम बानू बेगम का 'सपना' बहुत अच्छा लगा। असल में इस दुनिया में कुछ भी अपना नहीं है। यदि कोई अपना है तो वह सपना ही है और सपना अच्छा हो, फिर तो बल्ले ही बल्ले। कविता के पन्ने अच्छे हैं। राष्ट्रीयता एवं मानवीयता के तारों से बुनी श्री चांद शेरी के मुक्तक और गजलें सराहनीय हैं। श्री चक्रधर शुक्ल के 'दोहे' भी सशक्त हैं। 'जरा गौर करें' हर बार की तरह ही सशक्त है।

- श्री ओम प्रकाश 'मंजुल', पीलीभीत

लेखों और कहानियों के साथ-साथ संपूर्ण 'सुगंध' पत्रिका को सुधारने और संवारने में संपादक मंडल का अविरल योगदान बहुत सराहनीय है। मेरे विचार से 'सुगंध' पत्रिका 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की भावना से काम करते हुए आगे बढ़ रही है। तकनीकी एवं वैज्ञानिक ज्ञान के साथ ही साहित्य की लगभग सभी विधाओं के विकास एवं संवर्द्धन का काम कर रही है। 'धत् तेरे की...' कहानी में असाधारण आदर्श झलकता है तो वहीं दूसरी ओर 'सहधर्मिणी' कहानी में एकतरफा प्रेम का भाव दीखता है। ऐतिहासिक प्रमाणों के प्रत्यक्ष साक्ष्य के रूप में किलों के संदर्भ में लिखा गया लेख, घर बैठे तत्कालीन समाज का चित्र प्रस्तुत कर रहा है। चक्रधर शुक्ल के मर्मस्पर्शी मुक्तक समाज के चिंतन को प्रदर्शित करते हैं तो कुँवर जावेद की गजलें राष्ट्रीयता की पुट से सराबोर हैं। सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी के व्यंग्य के अंश किसी को भी सहज गुदगुदा देते हैं। 'आवारा बच्चे' कहानी में सामाजिक यथार्थ का उद्घाटन है तो वहीं 'स्वर्गलोक में वफे पार्टी' में लेखक ने गंभीरता से गुप्त संदेश देने का प्रयास किया है। 'राम की मुस्कान' के माध्यम से सीख देने के प्रयास के लिए लेखिका को धन्यवाद।

- श्री बारनाल पापाजी, विशाखपट्टणम

'सुगंध' पत्रिका नियमित पढ़ने को प्राप्त हो जाती है, हार्दिक आभार। निरंतर उपयोगी आलेख, कहानी, कविताओं के संग अन्य तमाम रचनाओं से सजी-सँवरी एवं अलंकृत पत्रिका 'सुगंध' हर पल एक अमिट प्रभाव छोड़ती है। आप सभी को हार्दिक धन्यवाद।

- श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव, रायगढ़

श्रीमान संपादक महोदय,

सादर अभिवादन! मित्र सुकवि चक्रधर शुक्ल की कविताओं का प्रकाशन आप द्वारा संपादित 'सुगंध' के जून अंक में देखने के लिए मिला। स्तरीय सामग्री का चयन संपादक का प्रमुख दायित्व होता है, जिसका निर्वहन बखूबी किया गया है। हाइकु, मुक्तक, दोहे, कविताएँ, लेख सभी उत्कृष्ट लगे। श्री गोपाल जी की कहानी 'धत् तेरे की', डॉ टी हैमावती का लेख 'राम की मुस्कुराहट' तथा चाँद शेरी के मुक्तक प्रशंसनीय हैं। बच्चों की सामग्री देकर आपने वर्तमान की नींव पर भविष्य को सजाने-सँवारने का काम किया है। आपके संपादन में पत्रिका दीर्घजीवी होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

- डॉ अशोक कुमार गुप्त 'अशोक', कानपुर

भारतीय अर्थव्यवस्था में 'मेक इन इंडिया' का महत्व

- श्री भास्कर पट्नायक -

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने **25** सितंबर **2014** के दिन विज्ञान भवन से 'मेक इन इंडिया' अभियान का विधिवत उद्घाटन किया। इस समारोह में राज्य सरकारों, व्यापारिक संस्थाएँ, प्रवासी भारतीय व्यापारियों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अग्रणी उद्यमियों, प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों, मंत्रियों, अधिकारियों, राजनयिकों एवं पत्रकारों आदि ने भाग लिया। सरकार ने इस योजना को अमलीजामा पहनाने के लिए मंजूरी दे दी है। 'मेक इन इंडिया' अभियान के तहत पूँजी-माल की उत्पादकता को बढ़ावा दिया जाना है, अर्थात भारत को एक मुख्य उत्पादक केंद्र के रूप में विकसित करना योजना का उद्देश्य है। इसी क्रम में विदेशी कंपनियों को भारत में अपनी उत्पादन इकाइयों की स्थापना हेतु प्रेरित किया जा रहा है। विदेशी निवेशकों को विनियामक एवं नीतिगत मार्गदर्शन तथा विनियामक अनुमतियों की प्राप्ति में सहायता प्रदान की जाएगी।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतीयों के लिए इस मुहिम का मतलब है 'अस्तित्व की लड़ाई और विकास' और विदेशियों के लिए 'एक अच्छा मौका।' देश में निर्मित होने वाले उत्पादों के लिए बृहद बाजार भी मौजूद है। किंतु, निवेशकों के अभिमत में हमारे सरकारी तंत्र में कई प्रशासनिक, कानूनी, वैधानिक अड़चनें हैं, जिनमें सुधार लाने की आवश्यकता है। अत: हमारा प्रयास एक प्रभावशाली और सहयोगपरक प्रशासन सुनिश्चित करना होगा, ताकि निवेशकों में सुरक्षा के भाव का निर्माण हो। यदि इन समस्याओं पर हम उचित ध्यान दे पाते हैं तो विदेशी लोग यहाँ खुल कर निवेश कर सकते हैं।

सामान्य बिक्री कर (GST), जो **01.04.2016** से लागू किया जाना प्रस्तावित है, से उत्पादन क्षेत्र में लगभग **3%** की वृद्धि की संभावना है। हमारी कर प्रबंध प्रणाली के माध्यम से उत्पादों की लागत कम होनी चाहिए। वित्तमंत्री ने **19.02.2015** को 'सिंगल विंडो पोर्टल' का भी उद्घाटन किया है, जिसमें इस अभियान के प्रति सरकार के रवैये और नीति के बारे में विवरण दिया गया है। इसके अंतर्गत केंद्र सरकार की **11** सेवाओं को जोड़ा गया है। **14** विनियामक अनुमतियों को eBiz पोर्टल से जोड़ा गया है। सिंगल विंडो प्रणाली के माध्यम से सभी प्रकार की अनुमतियों के शीघ्र व सरल निपटान का प्रयत्न किया जा रहा है। इसके लिए श्रमिक हितों को संरक्षित करते हुए इकाइयों को बंद करने हेतु सरलतम एंव शीघ्र निर्गमन नीति वाले तंत्र की अभिकल्पना की गयी है। विनियामक पद्धति को और भी सुगम बनाने एवं निवेशकों की शिकायतों को कम करने हेतु भारत सरकार इनसे संबंधित सभी कानूनों, पद्धतियों, तौर-तरीकों का बारीकी से संवीक्षण कर रही है।

प्रतिरक्षा संबंधी उत्पादों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कुछ उद्योगों को लाइसेंस मुक्त किया गया है। औद्योगिक लाइसेंस की वैधता को

> 'मेक इन इंडिया' के माध्यम से निजी एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों की प्रतिभागिता बढ़ेगी और अर्थव्यवस्था के अधिकांश क्षेत्र में प्रतिस्पर्धापूर्ण निर्माण के द्वार खुलेंगे। इससे आयात पर देश की निर्भरता कम होगी। भारत का बाजार विस्तृत और व्यापक होंगे तथा इनमें तेजी आएगी। देश में बनी वस्तुओं की कीमत कम होगी। निर्यात बढ़ाकर राजकोष को भरा जा सकता है। राष्ट्रभर में मूलसंरचना का निर्माण होगा। पूँजी लागत कम होगी। इससे प्रतिव्यक्ति आय भी बढ़ेगी और लोगों की जेब एवं देश के खजाने में बचत बढ़ेगी। बचत बढ़ने से निवेश बढ़ेगा। निवेश बढ़ने से पूँजी बढ़ेगी। पूँजी बढ़ने से मूलसंरचना में इजाफा होगा। इससे रोजगार बढ़ेगा और कुल मिलाकर भारत दुनिया में एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर सकेगा।

3 साल तक विस्तार किया गया है। कार्य-समय को लचीला बनाने, प्रशिक्षुओं की ग्राह्यता बढ़ाने एवं कार्यस्थल में आवश्यकता और संदर्भ के अनुसार प्रशिक्षण देने हेतु उद्योगों को कहा गया है। श्रम-कानूनों में संशोधन किया जा रहा है, ताकि श्रमिकों की नियुक्ति एवं निष्कासन आसान हो और उत्पादकों को प्रोत्साहन मिले। सभी विभागों/राज्य सरकारों को परामर्श दिया गया है कि ऐसा विनियामक माहौल तैयार करें कि एक एकीकृत प्रणाली के माध्यम से सभी विवरणियों का ऑन लाइन फाइलिंग किया जा सके। इस बात को सुनिश्चित किया गया है कि विभागीय अधिकारियों द्वारा बिना अनुमोदन के निर्माण इकाइयों का किसी तरह का निरीक्षण नहीं किया जाएगा, ताकि उनके कार्यकलापों में अनुचित हस्तक्षेप को घटाया जा सके।

हाल ही में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश नीति का उदारीकरण भी किया गया है। निर्माण, परिचालन, रखरखाव, कुछ निर्दिष्ट वास्तविक ढाँचागत परियोजनाओं के क्षेत्र में स्वत: प्रवृत्त तरीकों से 100% विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की अनुमति दी गई है। प्रतिरक्षा के क्षेत्र में विदेशी निवेश की सीमा को मौजूदा 26 प्रतिशत से 49 प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया है। राज्य सरकार के निर्माण, आधुनिकीकरण, खुदरा से संबंधित परियोजनाओं में 100% विदेशी निवेश की अनुमति दी गई है।

विशेष आर्थिक/निवेश क्षेत्र तथा पिछड़े इलाकों में निवेश हेतु निवेशकों को कर छूट आदि दिए जा रहे हैं। औद्योगिक क्षेत्रों में वैश्विक स्तर का ढाँचा और स्वच्छ प्रौद्योगिकी के साथ-साथ कौशल विकास केंद्र उपलब्ध कराए जा रहे हैं। उद्योगों के साथ-साथ जनोपयोगी सेवाओं जैसे परिवहन, पर्यावरण सुरक्षा, आवास, प्रशासन आदि का ढाँचागत विस्तार किया जा रहा है। देश में सभी दिशाओं के लिए एक समर्पित माल-भाड़ा और औद्योगिक गलियारे की स्थापना की जा रही है। स्मार्ट सिटी की परिकल्पना भी इस अभियान में सहायक सिद्ध होगा।

लेकिन कई राज्यों में उद्योगों अथवा उद्योग समूहों के लिए आवश्यक समीपस्थ भूमि खासकर बिहार, पश्चिम बंगाल, ओड़ीशा जैसे पूर्व के राज्यों में उपलब्ध कराना कठिन हो रहा है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में उद्योगों के लिए भूमि अधिग्रहण एक खर्चीला, पेचीदा और क्लिष्ट मामला है, क्योंकि इसके लिए उद्योगपतियों को कई राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक आंदोलनों को झेलना पड़ता है। ऐसे कई संदर्भ हैं, जब उद्योगपतियों को अपने प्रस्तावों को बीच में ही छोड़ना पड़ा है। दूसरी ओर अधिकांश उद्योगपति भी भूमि अधिग्रहण करके उसका उपयोग निहित उद्देश्यों के लिए नहीं करते अथवा दुरुपयोग कर रहे हैं।

राज्य सरकारों को भी जमीन अधिग्रहण से संबंधित मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है, क्योंकि जब हम भारत में निर्माण की बात करते हैं, तो अंतत: यह निर्माण राज्यों में ही होंगे। इसलिए राज्य सरकारों को अपनी राजनैतिक विचारधारा के आधार पर आर्थिक विकास की गति को आगे ले जाने से मुकरना नहीं होगा।

विकास संबंधी आकाँक्षाओं से हमारे देश की मूलसंरचना की अपर्याप्तता की स्थिति मेल नहीं खाती। भारत में अब भी 2/3 बिजली कोयला से पैदा होती है। माँग की आपूर्ति नहीं होने के कारण कोयला महंगे दाम पर आयात करना पड़ रहा है। इसके मद्देनजर सरकार हरित ऊर्जा के उत्पादन हेतु पहल कर रही है। इस तरह संभावना है कि आगामी 15 से 20 सालों में भारत दुनिया का एक महत्वपूर्ण कार्बन-रहित अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

भारतीय बंदरगाहों के कार्पोरेटीकरण को प्रोत्साहित किया जा रहा है। तटवर्ती क्षेत्रों में विशेष आर्थिक गलियारों का निर्माण किया जा रहा है। मूलसंरचना के क्षेत्र में पीपीपी के आधार पर निजी एवं सरकार की भागीदारी पर जोर दिया जा रहा है। एक निर्यात श्रृंखला में परिवहन, बंदरगाह, सड़क, रेल, बिजली, पानी इत्यादि का ढाँचा, कम लागत पर श्रमिकों की उपलब्धता, पर्याप्त जमीन, कार्पोरेट ब्रांड बाजार, सरलीकृत कर प्रणाली और श्रम कानून, एक प्रभावशाली विधि व्यवस्था, स्पष्ट विनियमन एवं अनुमति विधान इत्यादि की आवश्यकता होती है। मेक इन इंडिया की गतिविधियों में इन सभी घटकों की कार्यशीलता को बेहतर बनाने हेतु आवश्यक सुधार लाए जा रहे हैं। देश में 67% माल ढुलाई सड़कों के माध्यम से हो रही है। इसलिए इस अभियान में सड़कों के विकास के साथ-साथ रेलसेवा को भी जोड़ने का निर्णय लिया गया है, ताकि देश में सभी प्रांतों को राष्ट्र की मुख्यधारा और आर्थिक विकास से जोड़ा जा सके। वर्ष 2015-16 के बजट में राष्ट्रीय निवेश एवं ढाँचा निधि को स्थापित करने की घोषणा की गई है। हर साल इस निधि में 20000 करोड़ रुपए उपलब्ध कराए जाएँगे और इस राशि का ढाँचा क्षेत्र की निजी कंपनियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए उपयोग किया जाएगा। कार्पोरेट कर को 30% से 25% तक घटा दिया गया है। संपत्ति कर को संपूर्ण रूप से हटा दिया गया है । बजट से संबंधित इन प्रयासों से हम देश-विदेश के निवेशकों में सकारात्मक संकेत भेजने में सफल हो पाए हैं। सब से पहले मेक इन इंडिया के लिए 25 उद्योगों के विकास पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, जिनमें हम बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं या भविष्य में करने की संभावनाएँ हैं। इनमें संचार माध्यम, नवीकृत

ऊर्जा, छोटे चार-पहिया वाहन, परमाणु संयंत्र की स्थापना आदि शामिल हैं। कई अन्य उत्पादन क्षेत्रों को भी इसमें जोड़कर इस अभियान को और भी विस्तृत एवं व्यापक बनाने की योजना है। लेकिन सरकार का प्रयास तभी सार्थक होंगे, जब विज्ञान, तकनीकी और अन्वेषण के हाथ गरीब से गरीब लोगों तथा देश के कोने-कोने तक पहुँचे। परंपरागत और स्थानीय ज्ञान पद्धतियों तथा तकनीकों को हम मेक इन इंडिया अभियान में जोड़ सकते हैं और स्थानीय आधार पर समस्याओं का हल ढूँढ़ सकते हैं। लेकिन हमें शोध और अनुसंधान पर ज्यादा निवेश करना होगा। इसके लिए उद्योगों और विश्वविद्यालयों, प्रयोगशालाओं एवं शोध संस्थानों के बीच समन्वय होना जरूरी है, ताकि नवीनतम ज्ञान और आविष्कारों का हमारी उत्पादन इकाइयाँ भरपूर लाभ उठा सकें। कार्पोरेट जगत के निगमित सामाजिक दायित्व को भी मेक इन इंडिया अभियान से जोड़ा जाना चाहिए, क्योंकि निगमों को भी इससे लाभ मिलना तय है।

आज काम के अभाव में लोग गाँव छोड़ शहरों की तरफ भाग रहे हैं। लेकिन इस योजना से गाँव और शहर के बीच की खाई मिटेगी। मेक इन इंडिया अभियान से ग्रामीण स्वावलंबन और आत्म विकास की भावना में बढ़ोत्तरी होगी। बार-बार इस बात की ओर इशारा किया जा रहा है कि भारत की कुल जनसंख्या में 65%, यानि 1.2 विलियन लोग 35 साल से कम उम्र के हैं। सन् 2020 तक राष्ट्र की औसत आयु 29 हो जाएगी। यदि युवापीढ़ी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक, इंजीनियर, तकनीकीविद और आविष्कारक के रूप में विकसित करना है तो हमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाओं एवं उसी स्तर की सोच को विकसित करना होगा। इससे न केवल देश का भविष्य सुरक्षित होगा, बल्कि देश की युवाशक्ति के कौशल का भरपूर उपयोग हो सकेगा तथा भविष्य का रास्ता और प्रगतिशील बनता जाएगा। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का मानना है कि देश के विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को जीने का कौशल नहीं सिखा रहे हैं, क्योंकि हमारी शिक्षा व्यवस्था में युवापीढ़ी को तकनीकी शिक्षा में सक्षम बनने की शिक्षा नहीं दी जा रही है। उनका मानना है कि देश को आई आई टी नहीं, बल्कि आई टी आई जैसे संस्थानों की जरूरत है। नई सरकार द्वारा लिए गए प्रारंभिक निर्णयों में कौशल विकास एवं औद्योगिक क्षेत्र विकास के लिए एक अलग विभाग की स्थापना की गई है।

भारत की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है। निर्माण क्षेत्र में रोजगार बढ़ने से सेवा क्षेत्र पर भी इसका गुणक प्रभाव पड़ता है और इससे सेवा क्षेत्र में भी रोजगार सृजन की संभावना बढ़ती है। मेक इन इंडिया के अंतर्गत हम ऐसे कौशल और उद्यमिता का विकास करना चाहते है कि हमारे उद्योगों में रोजगार का सृजन हो और जो लोग रोजगार पायें, वे उद्योग को अपने कौशल से आगे बढ़ाएँ। इसीलिए वर्ष 2015 के बजट में उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए स्टार्ट-अप की संकल्पना को प्रोत्साहित करने का मन बनाया गया है, ताकि नौकरी ढूँढ़ने वाले हमारे नौजवान नौकरी सृजक बन सकें। आज हम हर साल 2 मिलियन नौकरियों का सृजन कर पा रहे हैं, जबकि हर साल 12 मिलियन लोग रोजगार की तलाश में निकलते हैं। अब मेक इन इंडिया से ऐसी आशा है कि 2022 तक भारत लगभग 1000 मिलियन लोगों को रोजगार दिलाने की स्थिति में आ जाएगा। एक अनुमान के अनुसार सकल घरेलू उत्पाद के 1% के मूलसंरचना क्षेत्र में निवेश से हम प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में 3.4 मिलियन अतिरिक्त लोगों को रोजगार दिला सकते हैं। अत: मूलसंरचना के क्षेत्र में निवेश करना निहायत जरूरी है।

निर्माण क्षेत्र का भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कुल अंशदान 17% है। सरकार ‘मेक इन इंडिया’ के सहारे अगले दशक में इस क्षेत्र की हिस्सेदारी को 25% तक बढ़ाने का प्रयास कर रही है। सन् 2011 में इस क्षेत्र ने लगभग 60 मिलियन लोगों को रोजगार का अवसर प्रदान किया। इस प्रकार कृषि क्षेत्र के बाद निर्माण क्षेत्र भारत में दूसरा सबसे बड़ा विनियोजक है।

निर्माण क्षेत्र में सूक्ष्म और छोटे उद्योगों की हिस्सेदारी लगभग **90%** एवं भारत की औद्योगिक उत्पादकता में **50** प्रतिशत है। कई सर्वेक्षणों ने यह दर्शाया है कि बड़े उद्योगों की तुलना में छोटे उद्योग काफी हद तक वाणिज्यिक बैंक सेवाओं से असंतुष्ट हैं, क्योंकि उनके अनुसार बैंक सही समय पर पर्याप्त मात्रा में ऋण देने में संकोच करते हैं। इन उद्योगों की आवश्यकताओं के मुताविक कुछ नवोन्मेषी और नये उत्पादक नमूने को आविष्कार करना होगा। सिड्वी-इडबी जैसे विकास बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं को भी इस दिशा में और भी सक्रिय होकर काम करना होगा। जो छोटे और मध्यम उद्यम आज बैंक ऋण प्राप्त करने से वंचित हैं, उनके लिए दिल्ली में सूक्ष्म इकाई विकास पुनर्वित्तीय अभिकरण की स्थापना की गई है। 'मेक इन इंडिया' के अंतर्गत छोटे लघु, मध्यम उद्यम क्षेत्र के लिए खास तौर पर क्या किया जा रहा है, इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं निकाला जाए कि मेक इन इंडिया में इस क्षेत्र को महत्व नहीं दिया गया है। सरकार की धारणा यही है कि उत्पादन क्षेत्र में सभी प्रकार के उद्योगों की वरीयता समान है। हमारा कर्तव्य है कि इसके लिए विदेशी निवेश का स्वागत किया जाय तथा भारत में निवेश करने के इच्छुक कंपनियों के आगमन का रास्ता आसान किया जाय। इस अभियान को बैंक ऋण से जोड़ने के लिए रिजर्व बैंक ने हाल के महीनों में दो बार रेपो दर को अभूतपूर्व रूप से कुल **05%** तक कम किया है और इस तरह उत्पादन इकाइयों को सस्ते दामों पर कर्ज देने के लिए बैंकों पर दवाव बढ़ा है।

दुनिया के बाजार में भारत का हिस्सा सिर्फ **1.7** प्रतिशत ही है। हमारे सकल घरेलू उत्पाद में निर्माण क्षेत्र से संबंधित निर्यात का अंशदान मात्र **10%** है, जबकि जापान, चीन, अमेरीका जैसे विकसित देशों का **40%** के आसपास है। रिजर्व बैंक के अध्यक्ष श्री रघुराम राजन के मत के अनुसार हम मेक इन इंडिया अभियान को तब तक गति नहीं दे सकते हैं, जब तक हम अपने निर्यात को परिमाणात्मक रूप में वढ़ा नहीं लेते। उनके अनुसार भारत तभी एक महत्वपूर्ण उत्पादक देश के रूप में उभर सकता है, जब इसकी वस्तु तैयारी मात्र घरेलू बाजार के लिए ही नहीं, बल्कि निर्यात के लिए भी हो। बाजार की परिस्थितियाँ आज हमारे निर्यात के लिए अनुकूल नहीं हैं। 'मेक इन इंडिया' की सफलता के लिए अर्थव्यवस्था के सभी कारकों को उद्दीप्त करना होगा, ताकि एक जीवंत और गतिशील अर्थव्यवस्था के माध्यम से आर्थिक सुधारों को सकरात्मक रूप में स्पंदित किया जा सके।

माननीय वित्तमंत्री अरुण जेटली के अनुसार यदि पूँजी लागत को हम कम कर पायें तो उत्पादन क्षेत्र के विकास को रफ्तार दिया जा सकता है। भारत में कुशल कामगार एवं कुशल काम दुनिया में सबसे किफायती दर पर उपलब्ध हैं। इसलिए जो विदेशी कंपनियाँ भारत में आकर नवोन्मेषी एवं उच्च्य तकनीक के क्षेत्र में निवेश करेंगी, उन्हें कम लागत का लाभ मिलेगा। हमें उत्पाद तैयार करना है और उत्पादों के किस्म भी परिमाणात्मक रूप से बढ़ाना है। इन वस्तुओं की गुणवत्ता भी प्रतिस्पर्धी होनी चाहिए, तभी तो उनकी माँग विश्व बाजार में बढ़ेगी। व्यापार बढ़ने से कर्मचारियों के वेतन और अन्य लाभ स्वत: बढ़ जायेंगे। आज दुनिया के लोग भारत की बढ़ती जनसंख्या, और मध्यम वर्ग की प्रचुर संख्या को देखते हुए भारत को एक बहुत बड़े बाजार के रूप में देख रहे हैं। भारत सरकार को उम्मीद है कि इस नई पहल से देश में निवेश की सुविधा बढ़ेगी एवं व्यापार और निवेश के क्षेत्र में विदेशी संबंध मजबूत होंगे। अमेरीका, चीन, जापान, रूस, तजाकिस्तान, मंगोलिया, उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान, तथा कई अन्य देशों की जो यात्रा प्रधाममंत्री ने हाल के दिनों में की है, उससे इस कदम को बहुत बल मिला है और मित्र देशों के उद्यमियों मे एक सकारात्मक भाव उत्पन्न हुआ है। साथ में भारत के लुक ईस्ट नीति, ब्रिक्स तथा सार्क जैसे अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर देश-विदेश के राजनीतिज्ञों, व्यापारियों और उद्योगपतियों से किए गए समझौते से इस अभियान को गति मिलेगी।

अंतत: 'मेक इन इंडिया' के माध्यम से निजी एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों की प्रतिभागिता बढ़ेगी और अर्थव्यवस्था के अधिकांश क्षेत्र में प्रतिस्पर्धापूर्ण निर्माण के द्वार खुलेंगे। इससे आयात पर देश की निर्भरता कम होगी। भारत का बाजार विस्तृत और व्यापक होंगे तथा इनमें तेजी आएगी। देश में बनी वस्तुओं की कीमत कम होगी। निर्यात बढ़ाकर राजकोष को भरा जा सकता है। राष्ट्रभर में मूलसंरचना का निर्माण होगा। पूँजी लागत कम होगी। इससे प्रतिव्यक्ति आय भी बढ़ेगी और लोगों की जेब एवं देश के खजाने में बचत बढ़ेगी। बचत बढ़ने से निवेश बढ़ेगा। निवेश बढ़ने से पूँजी बढ़ेगी। पूँजी बढ़ने से मूलसंरचना में इजाफा होगा। इससे रोजगार बढ़ेगा और कुल मिलाकर भारत दुनिया में एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर सकेगा। इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्र की प्रगति, उन्नति एवं मानव विकास है।

- प्रवंधक
आंध्र बैंक कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय
कृष्णनगर, महारानीपेट
विशाखपट्टणम

विजया नर्सिंग होम

- डॉ राम प्यारे प्रजापति -

लखनऊ शहर का एक जाना-पहचाना नाम, एक अजीब शख्सियत, जिनका नाम विज्ञान अखबारों से लेकर गली-मुहल्लों तक प्रचारित-प्रसारित, होम के गेट पर सेक्यूरिटी गार्ड, बगल में रजिस्ट्रेशन रूम, सामने कोई शख्सियत बैठी है - 'ऊँची मूविंग चेयर पर, आँखों पर बड़े-बड़े काले ग्लास का चश्मा, ऊँची नाक, कंधे तक लटकते घुँघराले बाल, सफेद पैंट-शर्ट पर पिंक कलर की टाई, शर्ट के ऊपर सफेद जैकेट, सामने मेज पर पड़ा आला, आले का आधा भाग गले में लिपटा, जो शोभा बढ़ा रहा है, लंबी कद-काठी, आजानुबाहू कुल मिलाकर गंभीर व्यक्तित्व लोगों में चर्चा का विषय रहा।

नर्सिंग होम में कुल **6** कक्ष, कक्ष में **48** बेड, दो और चिकित्सक एक लेडी एक जेंट, दो वार्ड ब्वॉय्स, **2** नर्से, **2** स्वीपर कुल मिला कर नौ का स्टाफ, सभी अत्याधुनिक मशीनों और उपकरणों से सुसज्जित शहर का प्रतिष्ठित नर्सिंग होम, जिसकी परिचयात्मक होर्डिंग नगर के हर चौराहे पर लगी है, जिसमें लिखा है, 'आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित नगर का एक मात्र होम' प्रोफेसर डॉ असगर अली।

डॉ असगर अली ने अपने जमाने से होम चलाया था, जिसकी इंतकाल हुए अस्सी वर्ष हो गए। अपनी एक-एक पैसे की कमाई बड़ी ईमानदारी से होम में लगाते गए तथा साधारणतया अपने परिवार का उसी से भरण-पोषण करते गए। वंदों की ओर से उन्हें एक-एक दिन में हजारों दुआएँ मिलती गईं। अपने चौथे पन में भी उन्हें खुदा की इबादत का मौका न मिलता तो वे कहते, 'चलो इन्सान की सेवा मालिक की सेवा है।' बड़े ही नेक इरादों से वे तामीरदारों की सेवा करते। यदि किसी को होम पर आने का एक बार अवसर मिला तो वह डाक्टर का भक्त बन जाता। वे अपनी तरह से दवा और मालिक की तरफ से दुआ माँगा करते। होम कारिन्दों की जन्नत लगता, इसलिए लखनऊ वासी उन्हें धरती पर भगवान मानते रहे।

डॉ असगर अली में बीमार मरीज के प्रति चुहुलपन भरा रहता। मरीज को देख कर हँस कर कहते, 'मलेरिया से डर गए, बुखार तो एक छींक में उतर जाता है, पथरी तो डर से सरक पड़ती है, टूटी हड्डियाँ मुझे देखते ही जुड़ने लगती हैं', कहकर किसी का सिर थपथपाते तो किसी का गाल, मरीज भी हँस उठता। दवा थोड़ी, परहेज ज्यादा। इसके अलावा योग-व्यायाम रोगी को करने के लिए कह कर नीम के नीचे सोने, उसकी गुठलियाँ चूसते रहने की बात अवश्य बताते।

डाक्टर के बारे में एक चर्चा विशेष रूप से प्रचलित है, जिसे होम के लोग खाली समय में लोगों से बताया करते कि वे अपने वालिद को अपने साथ रखते थे। तब जब वालिद का इंतकाल हो गया था, वे अस्सी वर्ष पूरे कर चुके थे। डाक्टर साहब उनका भी जन्म-दिन इसी होम में मनाया करते थे। उस दिन मरीजों को फल और भोजन की व्यवस्था होम की तरफ से की जाती थी। होम के स्टाफ भी सबेरे से ही खुश मिजाज रहते। दुर्योग था कि उन्हें मकान पर दिल का दौरा पड़ा तो डाक्टर साहब को होम पर पड़ोसी ने खबर की। डाक्टर साहब होम से घर जल्दी गए, परंतु वालिद का इंतकाल हो चुका था। डाक्टर उन्हें अंतिम सलाम कर होम पर आ गए। तब तक दो दिल के दौरे के रोगी होम में एड्मिट हो चुके थे। जो भी सुनता कि डाक्टर साहब के वालिद नहीं रहे, घर पर तशरीफ लाता। परंतु वहाँ तो ताला लटक रहा था। लाश अंदर थी। झुँझलाकर काशिम मियाँ होम पर पधारे और डाक्टर के करीब जाकर बोले, 'वाह जनाब, पैसे के लिए पागल हो गए हो? और वालिद की लाश घर में तन्हा पड़ी है, आप होम पर मरीज गिन रहे हो।' काशिम मियाँ की आवाज में कर्कशता थी। डाक्टर ने उस बूढ़े से सलाम करते हुए कहा, 'चाचाजी इंशाअल्ला वालिद तो हमसे जुदा हो गए। इंतकाल के बाद फिर कोई चीज शेष नहीं रह जाती, हाँ अगर शेष रह जाती है तो बस धरम-करम। उस धरम-करम का निर्वहन मैं कर रहा हूँ। कल उनकी मिट्टी होगी तो देखा जाएगा। अगर मैं होम पर न आता तो दो मरीज कल मेरे वालिद के साथ ही सुपुर्देखाक हो जाते। संयोग था, अल्लाह ने पनाह दे दी। वे स्वस्थ हो गए। मेरा यह

> 'मियाँ, ये भाग्य की रेखायें अब मिटा देनी होंगी। सोच को सकारात्मक और रचनात्मक बनानी होगी। मैं भी किसी की लाड़ली रही। खून के रिश्ते बड़े मजबूत होते हैं। माताएँ सोचती हैं कि बेटी हो जाय तो हमारी कोख पवित्र हो जाय। उन्हीं बेटियों को बेचने में आप को शर्म नहीं आती। सात समुद्र पार उन्हें किस खता की सजा दी है। बेटी हो तो दो कुलों को जोड़ती है। उन्हीं का आप दिन भर कत्ल करते हैं। ऊपर से चाहते हैं कि हमारे खून साथ रहें। यह खुदा के यहाँ कहाँ संभव है। आयशा उसी की परिणति है।

धरम लाश की देखभाल करने से बड़ा है।' यह कह कर डाक्टर ने मियाँ को बैठने का इशारा कर स्वयं मरीजों के बीच चले गए और दूसरे दिन सगे-संबंधियों के बीच वालिद को सुपुर्देखाक किया गया।

होम पर आज तीसरी पीढ़ी काविज है। डाक्टर रशीद होम के उत्तराधिकारी हैं। तव से होम स्टाफ भी नया-पुराना होता गया। होम में अब डाक्टर और रोगी दोनों बदल गए। तभी एक उम्र दराज व्यक्ति होम में प्रवेश करके डाक्टर से कहता है, 'डाक्टर साहब मेरा रोगी बाहर खड़ा है।' डाक्टर ने हाथ के इशारे से कहा, 'तो उसे अंदर ले आइए।' 'नहीं, पहले हमें आप से पर्सनल बातें करनी है।' अभिभावक कुछ गर्जमंदी से हाथ जोड़े बोला।

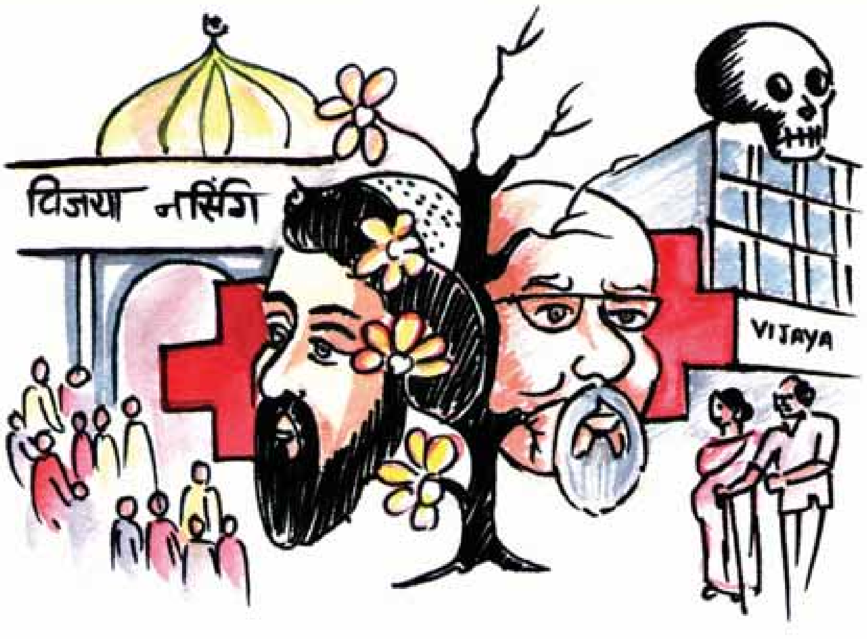

डाक्टर ने हाथ से बुजुर्ग को बैठने का इशारा करते हुए कहा, 'बताइए पिताजी क्या आदेश है।' 'साहब, बहू है, चार बेटियाँ पहले ही हो चुकी हैं। फिर पैर भारी है। अगर खुदा न खास्ता फिर बेटी हो गई तो, जमीन-जायदाद बिक जाएगी। समाज में व्याप्त दहेज मैं नहीं झेल पाऊँगा।' यही कह कर उसने डाक्टर के पैर पकड़ लिए।

डाक्टर ने हँसते हुए बुजुर्ग का हाथ थामते हुए कहा, 'तो बताओ हमें क्या करना है। साहब, लड़की है या लड़का, इसका निर्णय आप को करना है। एक बार जुआ और खेलेंगे।' यह कह उस व्यक्ति ने फिर दोनों हाथ जोड़ लिए। डाक्टर को क्या परेशानी थी? अब तो उस होम पर वही सब होता ही है। न तो पहले की तरह जानकार डाक्टर है, न तरह-तरह के रोगी। मोटी फीस लिए दिन भर में दो-चार रोगी होम चलाने के लिए काफी हैं।

गर्भिणी को लैब में बुला परीक्षण शुरू हुआ। थोड़ी देर में परिणाम फिर वही। वह रिपोर्ट उस अभिभावक के लिए बदहोशी की दवा निकली। वह अचेत, विक्षिप्त, बोझिल और पसीने से तर-बतर बेंच पर पसर गया। होम में स्टाफ आश्चर्य भरी नजरों से नजारा भाप रहे थे कि डाक्टर ने कुछ नुस्खे उन्हें सुझाये, तव वह अपनी पूरी चेतना में लौटा। कुछ पलों के बाद डाक्टर से बोला, 'साहब हमारा धरम हिन्दू है। कल मेरे मरने पर मुखाग्नि कौन देगा? कौन कन्धा लगायेगा, पिण्डदान कौन करेगा, पुन: वार्षिक तर्पण कौन करेगा? बिटिया जाति तो पराई है, बेटे के बिना आँगन पवित्र नहीं होता है। फिर दहेज भी देने पर लड़की के बाप को टहलुआ और घर को टक्साल घर समझते हैं...। डाक्टर साहब आज की गुप्त सलाह सिर माथे लेकर जा रहा है। फिर अभी तो छ: माह का समय है।' यह कह कर वह आदमी होम से स्त्री सहित बाहर चला गया।

पहले की तरह आज भी पश्चिमी देशों के एक-दो लोग होम में कुछ सूँघ रहे हैं। गाइड की भूमिका के लिए चाय वाले टूटी-फूटी अंग्रेजी, अरवी-फारसी जानते हैं। वे चायवाले के साथ होम में आये हैं। सौदा भी कुछ ही पलों में हाथ में आ गया। वे बहरीन, दुबई, सउदी अरब के व्यापारी हैं जिन्हें मानव तस्करी में महारत हासिल है। वे अपने साथ नवजात बच्चे पैदा करनेवाली माताएँ लाते हैं, जिनके स्तनों में ताजा दूध बह रहा हो। होम में कितनी अनब्याही माताएँ बच्चे छोड़कर चली जाती हैं। उनका सामाजिक सम्मान बच्चे से बड़ा होता है। लोक तंत्र ने उन्हें पराया बना दिया है। इसी का फायदा उठा होम से लेकर विदेशी लाभ कमाते है और मुल्क के बाहर एक दुनिया बसाते हैं।

सौदा पटते ही एक महिला होम में आयी। बच्ची को उठा, गोदी में ले मुँह चूमा, गाल थपथपाई। फिर उसे अपने ओगरे स्तनों से लगा लिया। दूध का घूंट अंदर जाते ही शिशु के व्यवहार बदल गए। अब कौन कहेगा कि ये जच्चे-बच्चे मिलावटी हैं। यह काम कभी पशु व्यापारी करते थे, परन्तु वही अब मानव व्यापार में प्रचलित हो गया है। फिर वे माँ-बेटी सरहद के पार दूसरी दुनिया में पहुँच जातीं।

डाक्टर रशीद की पुत्री आयशा उसी नर्सिंग होम में पैरा मेडिकल कोर्स कर रही थी। वह रूप-रंग, कद-काठी से हृदय पर साम्राज्य करनेवाली थी। कुछ संयोग कहे या विधि का विधान, एक विदेशी व्यापारी एक दिन उस पर रीझ गया। हँसते-मुस्कुराते ज्यों ही दोनों में गुड मार्निंग हुई कि आँखें चार होते देर न लगी। उस दिन तो व्यापारी अपना माल समेट अपने वतन चला गया। दूसरी बार जब आया तो वह आयशा से बोला, ‘डाक्टर आयशा आप के लिए दूर देश से कुछ गिफ्ट लाया हूँ। प्लीज एक्सेप्ट इट।’ कह कर बड़ी विस्मयकारी दृष्टि से वह उसे देखने लगा।

‘थैंक यू’, कह कर आयशा ने गिफ्ट अपनी रैक में रखते हुए उस अजनबी को प्यार भरी नजरों से देखने लगी। फिर तो प्यार की मंद बयार बहने लगी। वह पहले ही दिन आयशा की आँखों में बस गया। कुछ ही देर में वह ‘खुदा हफीज’ कह कर बगल वाले कमरे में चला गया था।

आयशा मन ही मन सोचने लगी, ‘आखिर यह कौन है गोरा-चिट्ठा, लंबी कदकाठी का हँसमुख, दिल पर डेरा डाल गया। बदले में चेन, घड़ी, पर्स और कैमरा, नंबर फीड सिम वाला मोबाइल दे गया। आयशा के भीतर ही भीतर समुद्र उमड़ने लगा। अब उसका मन होम में कम लगता। मोबाइल में फीड उसी का फोटो वह रह-रह कर निहारा करती। कभी उसकी साँसें लंबी खिंचती तो कभी खुश हो कहती, ‘अब तो अल्लाह ने अपनी नेमत से सब कुछ दे दिया।’ उसने आज तीसरे दिन मोबाइल का एक नंबर डायल किया तो संयोग ही था, ‘गुडमार्निंग’ वाली आवाज उसे सुनाई पड़ी। वह भाव-विह्वल हो उठी। फिर उसी दिन से दोनों में दो-चार बार बातें रात से दिन तक हो जाया करतीं। फिर तो वे नेट से स्क्रीन पर आमने सामने बातें भी करने लगे। कुछ समय बीतता गया।

एक दिन वही व्यापारी होम में फिर दाखिल हुआ और होम का छोटा नहीं, बड़ा बेशकीमती खजाना आयशा को लेकर चला गया।

डाक्टर रशीद के छोटे से परिवार में खलबली मच गई। माता-पिता की बड़ी प्यारी संतान थी। करीम बड़ा और आयशा छोटी थी। आयशा के होम से गुम हो जाने की खबर आग में पड़े मिर्च की तरह चारों ओर फैल गई। बिरादरी जनों में भी सुगबुगाहट हुई। अब होम के कारनामों का भंडाफोड़ हो गया। लोग तरह-तरह की बातें कहने लगे, जितने मुँह-उतनी बातें। डाक्टर की पत्नी रुबिया को करारा धक्का पहुँचा। अब तो बिरादरी की जगह-जगह बैठक होने लगी। समाजी ठाट पर डाक्टर रशीद की धज्जियाँ उड़ने लगीं। डाक्टर असगर के जमाने और डाक्टर रशीद के समय की तुलना होने लगी।

अब डाक्टर रशीद न तो मजलिसों में जाते, न जलसों में। उन पर लोग तरह-तरह के दोष मढ़ देते। पंचायतों में तरह-तरह के फरमान सामने आए। लोगों ने उनके किए-कराए पर आग उगला। अब उनके खैर मकदम के लिए कभी कोई उनके सामने न आया। सबसे पीड़ादायक समाचार पंचायत का फरमान रहा। कोई मुस्लिम बिरादरी करीम की शादी नहीं करेगा। जो बेटियों का बाजार विदेशों में लगा रहा हो, हमारी आँधी आबादी से खिलवाड़ कर रहा हो, सामाजिक बहिष्कार और हुक्का-पानी बंद। ‘बिरादरी का निर्णय तो भगवान का निर्णय था। अब किसमें ताकत है समुद्र से टकराने की। निर्णय तो निर्णय था।

डॉ रशीद की पत्नी रुबिया को तब ज्यादा पीड़ा हुई, जब डॉ रशीद को मुल्क पर धब्बा लगाने वाला करार किया गया। लिंग जाँच से लेकर बेटियाँ बेचने वाला, मुल्क की बदनामी कराने वाले डॉ रशीद को इंसान का दुश्मन करार किया। डॉ रशीद एक-दो जगह मित्रों के यहाँ गये। परंतु किसी ने उनका खैर मकदम न किया। किसी ने उनसे कोई तालुकात नहीं रखा तो वे शर्मिंदा होकर घर आ गए। डॉ रशीद सोच रहे थे कि वे कौन सी चीजें थीं, जिनमें मेरा कुनबा आसमान छू रहा था। आज ये सब क्या है? बेटी ने तो दिल के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और इकलौते करीम के लिए कोई बेटी वाला नहीं आ रहा है। अपना भी अब कोई कद्र नहीं रहा। डॉक्टर घोर चिंता में डूब गए। मन ही मन बड़बड़ाने लगे। मेरे संबंधियों ने भी मुझसे मुँह मोड़ लिया। यह बकते हुए आरजू की मुद्रा में बोले, ‘खुदा खैर कर फिर वही पुराने दिन दे दे।’ खामोश हो दोनों हाथों की लकीरें देख ही रहे थे कि पत्नी रुबिया ने धीरे से डॉक्टर रशीद का हाथ पकड़ लिया।

‘मियाँ, ये भाग्य की रेखायें अब मिटा देनी होंगी। सोच को सकारात्मक और रचनात्मक बनानी होगी। मैं भी किसी की लाड़ली रही। खून के रिश्ते बड़े मजबूत होते हैं। माताएँ सोचती हैं कि बेटी हो जाय तो हमारी कोख पवित्र हो जाय। उन्हीं बेटियों को बेचने में आप को शर्म नहीं आती। सात समुद्र पार उन्हें किस खता की सजा दी है। बेटी हो तो दो कुलों को जोड़ती है। उन्हीं का आप दिन भर कत्ल करते हैं। ऊपर से चाहते हैं कि हमारे खून साथ रहें। यह खुदा के यहाँ कहाँ संभव है। आयशा उसी की परिणति है। जानवरों में भी खून एक दूसरे से जोड़ता है। रिश्तों की दीवार बेटियों से तैयार होती है। किसी बेटी से रिश्ता जोड़कर तो देखो दिल की दरिया समन्दर हो

जाएगी। बेटी का बाप या माँ होना, संबंध की एक कड़ी को आगे जोड़ना है। वर्तमान समाज आप को नर पिशाच की भूमिका में देख रहा है। पता नहीं, कितने भ्रूण हत्या का पाप आप पर है। किसी बेटी ने आप को जन्म देकर क्या आप से यही आशा की थी? बेटी का व्यापार नहीं, हमेशा दान हुआ है। बहुत हो चुका, अब पाप की कमाई बंद होनी चाहिए। हम मसजिद के सामने इबादत करके जकात से दिन काट लेंगे। पर आपके पाप की कमाई तन के लिए हराम समझेंगे। अगर दो दिनों में सुधार न हुए तो मैं आप का नगर हमेशा के लिए छोड़ दूँगी।

वह चुप हो बड़ी-बड़ी आँखों से घूरती रही। डॉ रशीद की आँखें जमीन में गड़ती जा रही थी। जैसे कोई रत्ना किसी तुलसी का हृदय परिवर्तन कर गई। हृदय में पत्नी के जैसे लात चोट कर रहे हो। चेहरा उतर सा गया। लगा डाक्टर मन ही मन कह रहे हों, 'प्लीज एक्सक्यूज मी, आई एम वेरी सॉरी।' उनके सिर से दौलत का भूत उतर रहा हो। दूसरे दिन ग्लानि भरे मन से वे होम पर आ गए।

दिन, महीने बीतते गए। डॉ रशीद सोच रहे थे, सच है पैसों की लालच आदमी की आदमियत गायब कर देती है। फिर ये पत्थर दिल महिलाएँ और उनके हृदय हीन अभिभावक की सोच निराली है। चलो, 'जब से चेतो तभी से सही' डाक्टर ने मन ही मन निर्णय लिया। आज उनके मन में पैसे के प्रति घृणा भर गई। बेटी का पराये देश चले जाना जैसे उस डाक्टर से कोई कह रहा हो 'क्यों डाक्टर, अब आपको कैसे लग रहा है। इन्सानियत का कत्ल करनेवाले तुम्हारी बेटी भी औरों की तरह कोड़ो पर काम कर रही होगी। भले ही नवाबों की नगरी में तुम अपने को नवाब समझते हो। अरे, खुदा कभी माफ नहीं करेगा। तुमसे पाई-पाई का हिसाब चुकता करेगा। बेटी बेचवा के नाम से जीवन भर पुकारे जाओगे।'

डॉ साहब के पास आज डेलिवरी के लिए वह छः माह पुरानी केस आई है। अभिभावक बेहद खुश होकर डाक्टर साहब को प्रणाम किया। फिर बोला, 'साहब पहचान रहे हैं, मैं वही प्रताप हूँ। लगभग छः माह पूर्व होम में आप से मिला था, हमें लगता है कि शायद आप भूल गए।' वह बनावटी हँसी में खिलखिला उठा।

'नहीं-नहीं, प्रताप जी आप की शकल हमारे ब्रेन में अक्स है और आप का सौदा मेरी डायरी में दर्ज है। व्यवसायी कभी अपना लाभ नहीं भूलता, न किसी मौके को हाथ से जाने देता है। खुदा कसम एक लंबी फेहरिस्त मेरी जेहन में है। वे चेहरे भी मेरी आँखों में कैद हैं, जिन्हें न अपने खून से कोई प्रेम और न ही प्राणी जगत का कोई चिंतन। केवल गर्जमंद कागज के टुकड़े उन्हें बेवफा बनाने के टॉनिक है। देवियों के बाद अप्सरा बनने वाली दुनिया एक नशा है, सुरूर है। मैं ने तो होम पर पर्दे और लगोट की दोनों दुनिया देखी है। आज का इन्सान पौरुष से हट कर मादा होता जा रहा है। ऐसा प्रकृति के किसी जीव में नहीं है। लोग हैं कि थोड़े से सुख के लिए विधान को ताक पर रख देते हैं। डाक्टर रशीद कहते हुए प्रताप जी से आँखे चार करते रहे।

तभी होम में एक मीठी धुन बजी। नर्स बाहर निकली और डाक्टर से बोली 'विजया धरा पर आ चुकी है।' वह पुन: वापस हो ली। प्रताप को काटो तो खून नहीं। वे पेड़ की तरह सूख गए। वे अवाक... नजरें ठहरीं... विस्मित और बदन से पसीना चूने लगा। वे अर्ध चेतना में आ गए। डाक्टर रशीद को सब कुछ समझते देर नहीं लगी। उन्हें लगा होम पर आज नई घटना हो सकती है। फिर संभल कर प्रताप को संभालना चाहा। उन्हें पहले तो वही टॉनिक दी, 'बाबा मैं आप की संतान का सौदा अब नहीं करूँगा। खुदा कसम मैंने वह काम अब सदा के लिए छोड़ दिया। हाँ मैं आपकी मदद जरूर करूँगा', कहते हुए डाक्टर ने प्रताप के सिर पर हाथ फेरा।

'हाँ, मैं विजया को होम के नाम पर गोद लेता हूँ। परंतु यह माँ के पास रहेगी। जो पालन-पोषण में लगेगा, वह सब खर्च होम वहन करेगा। शिक्षा के बाद जब विजया वयस्क हो जाएगी, तब इसकी शादी हिंदू चिकित्सक से कर दूँगा। मैं बेटी आयशा की जगह इसे इकलौती संतान मानूँगा।' डाक्टर रशीद ने बड़े प्यार से प्रताप से कहा। प्रताप ने फिर दोनों हाथ जोड़ लिए। चलो, एक पहचान विदेश जाने से बच गई, सोचते हुए प्रताप की आँखों में आँसू छलछला गए। डाक्टर रशीद की फटकार के नहीं उपकार के। वे हाथ जोड़े डाक्टर के पैरों पर गिर पड़े। डाक्टर ने उन्हें उठाया। वे गमछे से आँसू पोंछते हुए बोले, 'आप धरती के भगवान हैं।'

विधि का विधान कहे या प्रभु की कृपा, विजया की उसी नर्सिंग होम में डाक्टर विजय से शादी हो गई। फिर डॉ विजय और डॉ विजया ने होम की कमान ऐसे संभाली कि डाक्टर रशीद को होम का नाम 'विजया नर्सिंग होम' कर देना पड़ा। बेटी विजया का गुणगान करते डाक्टर जीवन भर माला जपते रहे। फिर तो होम अनाथालय की तर्ज पर चल पड़ा। कुछ लोग तो उसे विजया अनाथालय के नाम से ही जानने लगे।

- ग्राम-पोस्ट: जमखुरी
लंभुआ, सुलतानपुर-222302
उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 9621459399

भारत के लिए लड़ने वाली अंग्रेज महिला 'एनी बेसेंट'

- श्री सुभाष सेतिया -

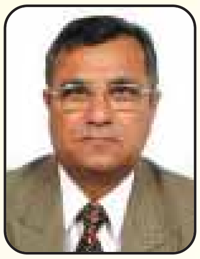

आपने देश को ब्रिटिश सरकार के चंगुल से मुक्त कराने वाले महान पुरुषों व महिलाओं के किस्से पढ़े-सुने होंगे और उन पर फिल्में भी देखी होंगी। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारी आजादी की लड़ाई में कुछ ऐसी विभूतियों ने भी योगदान किया, जो विदेशी थे। इन में से एक महिला तो ऐसी थी, जो ब्रिटिश होते हुए भी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की अग्रणी नेता बन गई। इस अनूठी निडर महिला का नाम था एनी बेसेंट। उनके जीवन की एक खास बात यह थी कि भारत में आकर यहाँ की संस्कृति और समाज से एकाकार होने से पहले उन्होंने अपने देश ब्रिटेन में भी कई तरह के आंदोलन चलाए। उन्होंने अपना आधा जीवन इंग्लैंड में और बाद का आधा जीवन भारत में बिताया और भारत की धरती पर ही उन्होंने आखिरी साँस ली।

एनी बेसेंट का जन्म **1** अक्टूबर, **1847** को लंदन में एक आयरिश परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम विलियम पेज वुड और माता का नाम एमिली मोरिस वुड था। जब वे पाँच साल की थीं तो उनके पिता का देहांत हो गया। उनकी माँ एक बोर्डिंग हाऊस चलाकर बच्चों का पालन करने लगी। लेकिन उनकी माँ ली हालत बहुत खराब थी। इसलिए उन्होंने एनी के लालन-पालन की जिम्मेदारी अपनी एक सहेली एलिन मरियट को सौंप दी। मरियट ने एनी को अपनी बेटी की तरह पाला और उसे उच्च शिक्षा दिलाई।

1867 में उनका विवाह **26** साल के पादरी फ्रेंक बेसेंट के साथ हुआ। उनके दो बच्चे भी हुए। लेकिन पादरी की धार्मिक कट्टरता और एनी की उदारता तथा निडर स्वभाव में कोई मेल नहीं था। इसलिए **6** साल बाद उनका तलाक हो गया। एनी बेसेंट कहानियाँ, लेख आदि पहले से ही लिख रही थी। तलाक के बाद उन्होंने धार्मिक कट्टरता के खिलाफ तीखे लेख लिखना शुरु कर दिया। अपने ही धर्म के खिलाफ उनके अभियान से बहुत से लोग उनके दुश्मन हो गए। उस जमाने में किसी महिला का इस तरह का विद्रोही तेवर अपनाना बहुत बड़ी बात थी। उन दिनों तलाक की घटनाएँ भी इक्का-दुक्का ही होती थीं। एनी बीसेंट नई चेतना और धर्म निरपेक्षता का प्रचार करने वाली संस्था नेशनल सेकुलर सोसायटी की सदस्य बन गई और महिलाओं से जुड़े मुद्दों तथा मजदूरों के हितों के लिए काम करने लगी। **1877** में एनी बीसेंट ने अपने एक सहयोगी बैंडलाफ के साथ मिलकर परिवार नियोजन के समर्थन में एक पुस्तक प्रकाशित की, जिससे पूरे ब्रिटेन में तहलका मच गया। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर कई महीनों तक मुकदमा चला। आखिर उनके खिलाफ आरोप सिद्ध नहीं हो पाए और उन्हें रिहा कर दिया गया। इस बीच एनी बीसेंट आयरलैंड की आजादी के लिए संघर्ष करने वाली आयरिश होम रूल सभा की सदस्य बन गई। इस तरह वे सामाजिक तथा सांस्कृतिक लड़ाई की सीमा पार कर राजनीतिक क्षेत्र में उतर आई।

13 नवंबर, **1887** में एनी बीसेंट ने मजदूरों के ऐतिहासिक प्रदर्शन की अगुआई की। सभी नेताओं को हिरासत में ले लिया गया। उन्होंने जेल से बाहर रहकर मजदूरों के लिए कानूनी सहायता का प्रबंध किया। **1888** में उन्होंने माचिस उद्योग में मजदूरी करने वाली लड़कियों को उनके हक दिलाने के लिए आंदोलन चलाया। इसके बाद महिलाओं को भी यूनियन बनाने का हक मिल गया।

बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम का एनी बेसेंट के मन पर गहरा असर हुआ। अंग्रेज सरकार के दमन के बारे में उनके मन में गुस्सा पैदा होने लगा। **1913** में उन्होंने 'कामन विल' नाम से साप्ताहिक अखबार निकाला। एक वर्ष बाद उन्होंने दैनिक अखबार 'न्यू इंडिया' शुरु किया। इन पत्रों के माध्यम से वे अपने ही देश की सरकार के खिलाफ आग उगलने लगीं। 'न्यू इंडिया' अंग्रेजी अखबार था, लेकिन उसमें कुछ हिस्सा हिंदी में भी प्रकाशित होता था। वे कांग्रेस की गतिविधियों में हिस्सा लेने लगीं। कांग्रेस में 'गरम' और 'नरम' दल का विवाद हुआ तो एनी बेसेंट ने दोनों पक्षों में मेल कराने की कोशिश की। आखिर **1916** में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में वे दोनों धड़ों को साथ लाने में सफल हो गई।

कुछ ही समय बाद उनकी विचारधारा में नया मोड़ आया। 1891 में वे धार्मिक उदारता का प्रचार करने वाली संस्था थियोसोफिकल सोसाइटी की अध्यक्ष बन गईं। 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में उन्होंने सोसाइटी के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। वहीं उनकी भेंट स्वामी विवेकनंदा से हुई, जिन्हें बाद में उन्होंने 'योद्धा सन्यासी' नाम दिया।

उसी साल एनी बेसेंट पहली बार भारत आयीं। थियोसोफिकल सोसाइटी की सदस्य और अध्यक्ष के रूप में वे इंग्लैंड में ही हिंदू ग्रंथों का अध्ययन कर चुकी थीं और वे भारत से बहुत प्रभावित थीं। उन्होंने गीता का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया। कुछ समय वे बनारस में रहीं। उन्होंने एक भारतीय महिला का रहन-सहन अपना लिया। जल्दी ही वे समाज सुधार, शिक्षा और स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हो गईं। बनारस में उन्होंने सेंट्रल हिंदू स्कूल खोला, जो बाद में कालेज बन गया। इसी कालेज को मदन मोहन मालवीय ने 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का रूप दिया। तमिलनाडु के अडयार में थियोसोफिकल सोसाइटी का मुख्यालय बनाया गया और एनी बेसेंट वहीं रहने लगीं।

बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम का एनी बेसेंट के मन पर गहरा असर हुआ। अंग्रेज सरकार के दमन के बारे में उनके मन में गुस्सा पैदा होने लगा। 1913 में उन्होंने 'कामन विल' नाम से साप्ताहिक अखबार निकाला। एक वर्ष बाद उन्होंने दैनिक अखबार 'न्यू इंडिया' शुरु किया। इन पत्रों के माध्यम से वे अपने ही देश की सरकार के खिलाफ आग उगलने लगीं। 'न्यू इंडिया' अंग्रेजी अखबार था, लेकिन उसमें कुछ हिस्सा हिंदी में भी प्रकाशित होता था। वे कांग्रेस की गतिविधियों में हिस्सा लेने लगीं। कांग्रेस में 'गरम' और 'नरम' दल का विवाद हुआ तो एनी बेसेंट ने दोनों पक्षों में मेल कराने की कोशिश की। आखिर 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में वे दोनों धड़ों को साथ लाने में सफल हो गईं। इससे देश भर में उनका नाम चमक उठा।

भारत स्काउट आंदोलन की शुरुआत का श्रेय भी एनी बेसेंट को जाता है। 1917 में उन्होंने इंडिया ब्वायज स्काउट एसोसिएशन की स्थापना की। 1921 में इसे स्काउट के अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ दिया गया। उन्हें भारत के लिए स्काउट का मानद कमिशनर बना दिया गया। 1932 में एनी बेसेंट को स्काउट आंदोलन का सर्वोच्च पुरस्कार 'आर्डर ऑफ वुल्फ' प्रदान दिया गया।

1917 के कलकत्ता अधिवेशन में उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। कलकत्ता में उनका शानदार स्वागत हुआ। युवकों ने उनकी गाड़ी के घोड़ों को खोल दिया और स्वयं गाड़ी खींचने लगे। एक विदेशी महिला का इतना सम्मान सचमुच मन को छू लेने वाला था। कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में उन्होंने पार्टी को केवल माँगें रखने वाली संस्था से बदल कर जुझारु दल बनाने की पहल की। पहले कांग्रेस अध्यक्ष केवल अधिवेशन के लिए चुना जाता था। किंतु एनी बेसेंट ने नई परंपरा शुरु की और वे साल भर कांग्रेस को और मजबूत बनाने के काम में जुटी रहीं। उन्होंने देश के कोने-कोने का दौरा करके लोगों को अंग्रेजों के अत्यचारों के खिलाफ खड़ा होने के लिए प्रेरित किया। किसी अंग्रेज को अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बोलते देखकर लोगों पर बड़ा असर हो रहा था।

ब्रिटिश सरकार एनी बेसेंट की बढ़ती लेकप्रियता से तिलमिला गई। कई प्रांतों में उनके आने-जाने पर रोक लगा दी गई। उनका 'न्यू इंडिया' अखबार बंद कर दिया गया। 15 जून, 1917 को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी के खिलाफ अनेक प्रमुख लोगों ने सत्याग्रह करने की घोषणा कर दी। कांग्रेस और मुस्लिम लोगों ने उनकी रिहाई की माँग के समर्थन में आंदोलन छेड़ने की धमकी दी। इस पर एनी बेसेंट को रिहा कर दिया गया। रिहाई का देश भर में जोरदार स्वागत हुआ।

तब तक गांधी जी का भारत के राजनीतिक जीवन पर असर शुरु होने लगा था। गांधी जी ने स्वराज्य के लिए सत्याग्रह का एलान किया। लेकिन एनी बेसेंट को मोंटफोर्ड सुधारों पर भरोसा था और वे सत्याग्रह में शामिल नहीं हुईं। इस तरह वे कांग्रेस से अलग हो गईं। लेकिन देश को आजाद कराने के लिए अपने ढंग से कोशिश करती रहीं। 1925 में उन्होंने स्वराज्य के लिए 'कामनवेल्थ आफ इंडिया' नाम का प्रस्ताव तैयार किया और उसे ब्रिटिश संसद में बिल के रूप में पेश कराने का प्रयास किया। 1927 में मद्रास में अधिवेशन हुआ तो वे फिर कांग्रेस में शामिल हो गईं और गांधी जी की माँगों का पूरा समर्थन किया। 1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार में भी वे शामिल हुईं।

उनकी उम्र 80 वर्ष से अधिक हो चुकी थीं और उनका मन राजनीति की बजाय अध्यात्म में अधिक लगने लगा। उन्होंने अपने आपको पूरी तरह थियोसोफिकल सोसाइटी के काम में लगा दिया। लेकिन आजादी के लिए भाषण देना और लेख लिखना जारी रखा। वे आखिरी साँस तक सक्रिय रहीं और सुबह से शाम तक काम में व्यस्त रहतीं। 20 सितंबर, 1933 को अडयार में उनका निधन हो गया।

एनी बेसेंट ने देशवासियों के दिलों में इस कदर अपनी जगह बना ली थी कि उनके नाम का भी भारतीयकरण हो गया और आम लोग उन्हें प्यार से 'बीवी वासंती' के नाम से पुकारते थे।

- सी-302, हिंद अपार्टमेंट्स
प्लाट नं.12, सेक्टर-5
द्वारका, नई दिल्ली-110075
ईमेल: setia_subhash@yahoo.co.in

श्मशान ज्ञान

- श्री चित्रेश -

हनुमंत चोर नजरों से सामने देखते हुए अचानक ही गली में मुड़ गया। हम सब जानते हैं, श्मशान में चिता की लपलपाती खूँखार लपटों के बीच अपने आत्मीय संबंधी के शव को राख में परिवर्तित होते देखकर व्यक्ति क्षण भर में जीवन का सच्चा ज्ञान प्राप्त कर लेता है। धधकती हुई चिता के सामने उसके मस्तिष्क में एक ही बात गूँजती है, एक दिन मेरे शरीर का भी यही अंत होगा। फिर अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए मैं जिन हथकंडों और छल-छद्म को अपनाए हूँ, उनका औचित्य? फिर सही अर्थों में एक मनुष्य की जिंदगी जीने में क्या हर्ज है? हम वैरागी बने घर लौटते हैं और फिर ...

ठीक इसी से मिलती-जुलती स्थिति इन हनुमंत के सामने भी आई थी। पिछले चार-पाँच महीनों से उनके गले में दर्द रहता था। बीच-बीच में जीभ की जड़ के पास छाले भी पड़ जाते थे। खाना तो खाना, पानी पीना भी हराम हो जाता। उसने शहर के जाने-माने फिजीशियन डॉ एम एन राजपूत से इलाज कराना शुरू किया था। कुछ दिनों तक डाक्टर साहब दवाइयाँ अदल-बदल कर उपचार करते रहे, लेकिन न दर्द समाप्त हुआ और न गले के छाले। अंततः उन्होंने पर्चे पर कोई टेस्ट लिखकर हनुमंत से कहा, 'इसे लेकर तुम डॉ विक्रम के बायोप्सी सेंटर पर चले जाओ। टेस्ट होगा, दो दवाइयाँ लिख दी हैं, टेस्ट रिपोर्ट आने तक इसे ही लेते रहो।'

इस मामले की कोई लिखा-पढ़ी थी नहीं। इज्जत पर बट्टा लगने की बात सोचकर गजाधर सिंह ने लेन-देन के मध्य कोई बिचौलिया भी नहीं रखा था। इसलिए यहाँ भी हनुमंत सिंह का प्वाइंट कानूनन मजबूत था। यह दो ही नहीं, छोटे-मोटे और भी मामले थे, जिनकी कानूनी कमियों का फायदा उठाते हुए वह सरासर बेई मानी पर आमादा था। गाँव में अब भी कानून से अधिक व्यवहार को महत्व दिया जाता है। लिहाजा उसे सामाजिक प्रताड़ना झेलनी पड़ रही थी और चिकने घड़े जैसी बेहयायी से वह उसे झेल रहा था। अब तक उसे अपनी मुतफन्नी व्यक्तित्व पर गर्व था, लेकिन आज उसको यह कलंक सदृश लग रहा था।

हनुमंत सिंह अच्छा पढ़ा-लिखा प्राइमरी का मास्टर था। उसे जानकारी थी कि बायोप्सी से कैंसर का पता लगाया जाता है। कैंसर यानी साक्षात् यमदूत, अनजाने ही उसके मन में एक डर समाता चला गया। वह गिरा मन लिए डॉ विक्रम की पैथॉलाजी में आया। टेस्ट के लिए डाक्टर के सहायक ने खून और गले के छालों से पानी के नमूने लिये। इसके बाद वह डाक्टर से मुखातिब हुआ, 'रिपोर्ट के लिए कब आऊँ?'

'बीस को।'

'सर, आज इसमें नौ तारीख ...'

डाक्टर ने उसकी बात बीच में ही काट दी, 'यह सैंपल बंबई भेजे जायेंगे। वहाँ से रिपोर्ट आने में एक हफ्ते से ज्यादा समय लगता है।'

एक ऐसा टेस्ट जिसकी रिपोर्ट बंबई से आएगी। कोई हल्का मामला तो होने से रहा। मन में समाया डर और घना होने लगा। कैंसर की संभावना से त्रस्त व्यक्ति के मस्तिष्क में चरचराकर चूड़ियाँ तोड़ती बीवी और रोते-बिलखते बच्चों की कल्पना कितना कारुणिक और डरावनी होती है, इसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। उसके ये दिन एकदम निराशा के अंधेरे में डूबते-उतराते, हिचकोले खाते बड़ी मुश्किल से व्यतीत हुए।

बीस तारीख को ऐन दस बजे वह पैथॉलाजी में था। सहायक के अभिवादन का जवाब देते हुए उसने उतावली से डाक्टर साहब के बारे में पूछा। उसने बताया, 'भाई की लड़की की शादी में गए हैं।'

'कब तक आ जायेंगे?'

'पच्चीस को।'

आज... यानी पाँच दिन बाद, हनुमंत ने सोचा। चिंता पहले से ही थी, लेकिन अब डाक्टर के न मिलने से वह एकदम असहाय-सा महसूस करने लगा था। सहसा सहायक ने कहा, 'आप बहुत परेशान लग रहे हैं। बैठिए तो सही, आखिर बात क्या है?'

वह एक कुर्सी पर बैठते हुए बोला, 'मेरी बायोप्सी हुई थी।'

'जी... हुई थी।'

'रिपोर्ट आ गई?'

'हाँ।'

'कहाँ है?' पूछते हुए उसका दिल जोरों से धड़क उठा था।

'वह तो डाक्टर साहब की आलमारी में है। चाबी उन्हीं के पास रहती है।'

'कुछ निकला है।'

हाँ।'

उसका हलक एक बारगी सूख गया। स्वयं को नियंत्रण में रखने

का प्रयास करने के बावजूद भी उसने काँपती आवाज में पूछा, 'क्या था?'

'यह तो रिपोर्ट देखने पर पता चल पाएगा।'

अब वह थोड़ा संयमित होने में कामयाब हो गया था। बोला, 'तब आपने कैसे कहा कि कुछ निकला है?'

'दरअसल जब डाक्टर साहब रिपोर्ट पढ़ रहे थे तो गंभीर सोच-विचार की मुद्रा में थे। ऐसा तभी होता है, जब कोई सीरियस मैटर होता है', सहायक ने स्पष्ट किया।

फिर तो हनुमंत के अंदर भूचाल-सा आ गया। सहायक ने जिस ढंग से बताया था, उसमें शक की गुंजाइश ही नहीं थी। कैंसर लाइलाज मर्ज है, इसका मरीज बचता नहीं, यह उसे पता था। साल दो साल जीवन घसीट ले जाने की बात अलग है। यह अवधि भी उनके लिए है, जो महंगे अस्पतालों में पानी की तरह पैसा बहा सकते हैं, यानी बेशुमार दौलत वालों के लिए। उसके जैसा मिडिल क्लास का आदमी तो दो-चार माह के अंदर ही टें बोल देगा। जब जीवन की अवधि मात्र इतनी-सी है तो भविष्य के सपनों का औचित्य...? ये ही वे सपने हैं, जिनके लिए दुनिया भर का झूठ-फरेब गढ़ना पड़ रहा है। घर लौटकर वह ऐसे ही विचारों में घिर गया था और सारी रात करवटों के बीच कट गयी थी।

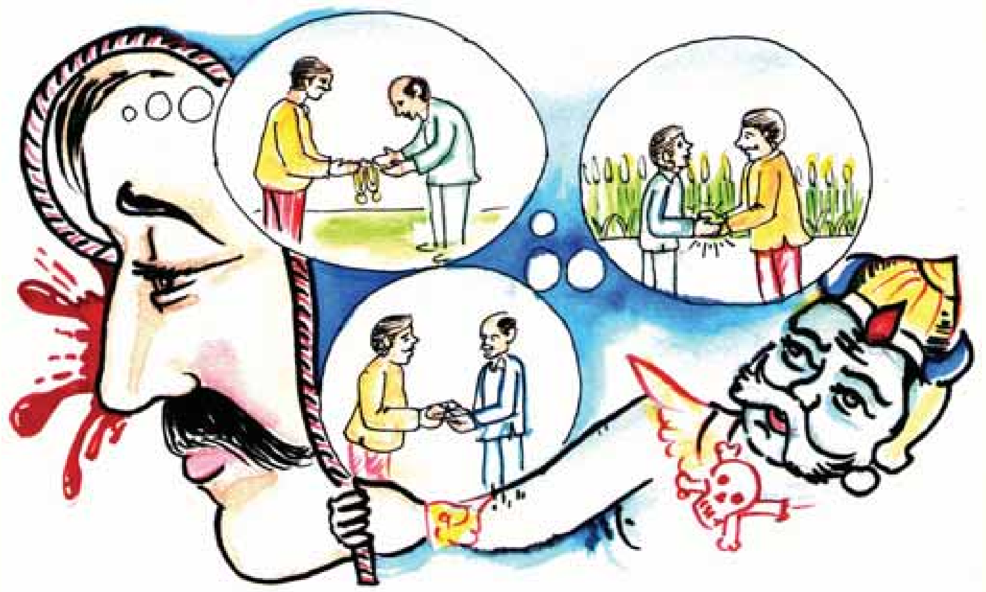

सुबह हनुमंत का सिर भारी था और आँखों में थी रात्रि-जागरण की कड़वाहट। वह दालान से निकलकर सामने नीम के चबूतरे पर बैठ गया। उसके अंदर अजीब-अजीब विचारों का उमड़ना-घुमड़ना जारी था, लेकिन जाहिर तौर पर वह अगहन की रेशमी धूप में फुदकते पक्षियों को एकटक देख रहा था। उसकी पत्नी एक छोटी बाल्टी में गुनगुना पानी और ब्रश वगैरह दे गई। उसने मंजन किया। मुँह-हाथ धोया और दालान की दीवार में जड़े शीशे के सामने खड़ा हो गया। चेहरे का स्याह रंग, बढ़ी हुई दाढ़ी, उलझे बाल, धँसती हुई बड़ी-बड़ी आँखों में लाल डोरे, पिचका चेहरा। हनुमंत आया तो था बाल में कंघी करने, लेकिन आले से उठाई कंघी हाथ में ही रह गई और वह स्वयं को एकटक आइने में निहारने लगा। उसे लग रहा था, इन दिनों वह बेहद कमजोर होता जा रहा है। चेहरे की प्रफुल्लता गायब हो चुकी है और उसकी जगह पनपती जा रही है विचित्र-सी रुक्षता। यह परिवर्तन उसे आसन्न मृत्यु के लक्षण लग रहे थे।

'पिता जी! दवा...।'

हनुमंत ने पलटकर देखा, सुनीता एक ट्रे में पानी का गिलास, चाय, मैरी गोल्ड बिस्कुट लिए खड़ी थी। छोटू प्रमोद के हाथ में दवा का डिब्बा था। उसने झटपट बालों में कंघी किया और सब कुछ छोटी मेज पर रखवा कर फाइबर की कुर्सी पर बैठ गया। सुनीता और प्रमोद दालान से निकलने लगे। वह दोनों बच्चों को बाहर जाते देखता रह गया। उसके मन में धुएँ सा एक विचार उठने लगा... कुछ महीने बाद मुझे एक निहायत कच्ची गृहस्थी छोड़ जानी है। जवान बीवी, ग्यारह साल की सुनीता और पाँच वर्ष का प्रमोद यही बचे रहेंगे, मुझसे खार खाये पट्टीदारों का जुल्म झेलने के लिए। कहने को गाँव है, सगे-संबंधी हैं, किंतु अब तक मैंने उनके साथ क्या किया है? फिर वे मेरे बच्चों को क्यों छोड़ेंगे? मेरे पीछे वे जरूर अपना पुराना हिसाब चुकाना चाहेंगे और बाज की तरह झपट्टा मारकर सारी गृहस्थी तहस-नहस कर डालेंगे। इन्हीं विचारों के बीच हनुमंत ने बिस्कुट-चाय के साथ दवा की गोलियाँ निगल लीं।

हुनमंत सिंह की हैसियत अपने गाँव में नारद किस्म के व्यक्ति की थी। लोगों को पट्टी पढ़ाकर मुकदमेबाजी और फौजदारी के लिए प्रेरित करना उसका शगल था। कहने को वह मास्टर था, लेकिन स्कूल जाना उसे बिल्कुल नापसंद था। महीने में सिर्फ तीन-चार दिन के लिए स्कूल जाता था, वह भी सिर्फ अध्यापक

उपस्थिति पंजिका पर हस्ताक्षर बनाने, ताकि महीने के अंत में बेरोकटोक पूरी तनख्वाह का हकदार बन जाय। इसके अलावा इन दिनों दो नये मामले खड़े हो गए थे, जिनको लेकर इधर वह खासी बदनामी का सामना कर रहा था। एक मामला खुद उसके चचेरे भाई से उलझ गया था। उसके चाचा बजरंग बहादुर मौके पर नहीं थे, इसलिए जमीन की रजिस्ट्री जामवंत यानी हनुमंत के पिता के पिता के नाम हुई थी। बजरंग बहादुर के स्वदेश लौटने पर उसके पिता ने कच्चे बंटवारे में उन्हें भी उस जमीन में आधा हिस्सा दिया था। कई बार जामवंत ने छोटे भाई से कहा भी था कि 'इस जमीन पर अपने हक के लिए मुकदमा करो, मैं बयान कर दूँ। बाद में पता नहीं क्या हो?' बजरंग बहादुर ने कभी इस बात को तवज्जो नहीं दिया...। पर अब दोनों भाई मर चुके थे और गाँव में चकबंदी हो रही थी। हनुमंत ने अपने चचेरे भाई राजवंत को अपने पिता के नाम वाली जमीन से बेदखल कर दिया था। कानूनन यह जमीन अकेले उसी को मिलनी भी थी।

दूसरा मामला गाँव के पूर्व जमींदार परिवार के गजाधर सिंह से फँसा था। गजाधर ने दस साल पहले बहू के हार्ट के आपरेशन के सिलसिले में सोने की करधनी और जड़ाऊ हार गिरवी रखकर उससे मोटी रकम उधार लिया था। बाद में वह रुपया लौटाने की स्थिति में नहीं आ सका था। सिर्फ किसी तरह ब्याज अदा करता आया था। अब उसका नाती कंप्यूटर इंजीनियर बनकर एक विदेशी कंपनी में अच्छे पैकेज पर लगा था। गजाधर सिंह बुढ़ाती में पैसे वाला हो गया था। वह जेवर छुड़ाना चाहता था। लेकिन हनुमंत साफ मुकर गया था, 'कैसा जेवर, मैंने आपका कोई जेवर गिरवी नहीं रखा है।'

इस मामले की कोई लिखा-पढ़ी थी नहीं। इज्जत पर बट्टा लगने की बात सोचकर गजाधर सिंह ने लेन-देन के मध्य कोई बिचौलिया भी नहीं रखा था। इसलिए यहाँ भी हनुमंत सिंह का प्वाइंट कानूनन मजबूत था। यह दो ही नहीं, छोटे-मोटे और भी मामले थे, जिनकी कानूनी कमियों का फायदा उठाते हुए वह सरासर बेईमानी पर आमादा था। गाँव में अब भी कानून से अधिक व्यवहार को महत्व दिया जाता है। लिहाजा उसे सामाजिक प्रताड़ना झेलनी पड़ रही थी और चिकने घड़े जैसी बेहयाई से वह उसे झेल रहा था। अब तक उसे अपनी मुतफन्नी व्यक्तित्व पर गर्व था, लेकिन आज उसको यह कलंक सदृश लग रहा था। अंदर ही अंदर गहरी बेचैनी उसे एक सच्चा इंसान बनकर जीने के लिए मथ रही थी।

इसी समय सुनीता ने आकर खाना तैयार होने की सूचना दी। उसने दवा के डिब्बे से भोजन से पंद्रह मिनट पहले ली जाने वाली टेबलेट निकाली और पानी के साथ गटक लिया। पाँच मिनट बाद वह बाल्टी लेकर नहाने चला गया। ठंडे पानी से वह काफी देर तक नहाता रहा। इस तरह उसकी बेचैन तबीयत को थोड़ी राहत मिल रही थी। जब वह नहाकर लौटा तो उसकी पत्नी खाना परस चुकी थी। खाने की इच्छा तो कुछ खास थी नहीं, लेकिन बेमन से थोड़ा सा खा लिया। इस समय सवा नौ बज रहे थे। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और स्कूल चला गया।

विद्यालय के अन्य अध्यापकों को आश्चर्य था, क्योंकि आज पहला अवसर था, जब वह सही समय पर विद्यालय पहुँचा था। कभी-कभार वह स्कूल आता भी तो बारह-एक बजे और हस्ताक्षर बनाकर फूट लेता था। चूँकि अध्यापक समाज में उसकी हैसियत एक छोटे-मोटे बैंकर की थी। वक्त जरूरत लोग उससे पैसे लिया करते थे। इसलिए उसकी अनियमितताओं को कोई अन्यथा न लेता था। किन्तु अन्य दिनों के विपरीत आज वह अपनी कक्षा सबसे अलग एक पेड़ के नीचे लगाकर बैठा था। कोशिश तो उसने पढ़ाने की भी की, लेकिन मन की उलझन की वजह से सफल न हुआ। वह सोच रहा था, कुछ दिनों बाद जब मेरी मृत्यु हो तो मातमपुर्सी में आये लोगों को झूठमूठ मेरी अच्छाई व बड़प्पन का गुणगान न करना पड़े, बल्कि वे जो कुछ कहें, वह मरने से पहले एक सुधरे हुए आदमी का किस्सा हो। मेरे बाल-बच्चों को बेहतर सामाजिक संरक्षण मिले। उसकी वर्तमान सामाजिक स्थिति को देखते हुए यह संभव न था। इसे संभव बनाने के लिए तरह-तरह के संकल्पों-विकल्पों में डूबते-उतराते विद्यालय की छुट्टी का वक्त हो गया।

हनुमंत जब घर पहुँचा तो सुरमई अंधेरा फैलने लगा था। वह दालान से कुर्सी निकालकर नीम के पेड़ के नीचे बैठ गया। हल्की गुदगुदाने वाली ठंड में बैठना उसे सुखकर प्रतीत हो रहा था। धीरे-धीरे सुरमई अंधेरा गहराकर काला हो गया। अंधेरे में उसके सामने अनेक डरावनी आकृतियाँ बनने-बिगड़ने लगीं। दालान में पत्नी लालटेन रख गई। वह कुर्सी लेकर उधर ही चला गया और लालटेन की उदास-सी पीली रोशनी में बैठा रहा। थोड़ी देर बाद सुनीता खाने के लिए बुलाने आयी। उसने मना कर दिया। हड़बड़ाई-सी उसकी पत्नी आ गई। बोली, 'तबीयत अधिक खराब है क्या?'

'नहीं, दरअसल आज शाम को मैंने एक मित्र के यहाँ खाना खा लिया है।' हनुमंत ने साफ झूठ का सहारा लेकर पत्नी को आश्वस्त कर दिया। वह वापस घर में चली गयी। हनुमंत पूर्ववत दालान में बैठा रहा और जब बैठे-बैठे उसकी कमर दुखने

लगी तो वह बिस्तर बिछाकर पलंग पर लेट गया। किन्तु यह रात भी पिछली रात की तरह करवटों में गुजर गयी। सवेरे जरा-सी नींद आई थी, तभी पत्नी ने जगा दिया। वह बाल्टी में गुनगुना पानी और मंजन-ब्रश लेकर आई थी। वह उठ गया और आधे घंटे के अंदर नित्यक्रिया से निवृत्त होकर घर के आंगन में एक चारपाई खींचकर बैठ गया। पत्नी चाय लेकर आई। उसकी निगाह पति की आँखों पर पड़ी, लाल-लाल अंगारों जैसी दहकती हुई आँखे देखकर वह सशंकित हो गयी। चाय की ट्रे उसके सामने रखते हुए उसने पूछा, 'तुम्हारी आँखें आयी हैं क्या?'

'नहीं तो।'

'फिर इतनी लाल क्यों...?'

'दरअसल पिछली दो रातों से मैं सो नहीं पाया हूँ।'

'क्यों तबीयत...।'

'तुम्हें तो हमेशा तबीयत की फिक्र लगी रहती है। तबीयत-वबीयत कुछ नहीं, कुछ ऐसी बातें मैं सोचता रहा, जिसकी वजह से नींद नहीं आई।'

'ऐसी कौन सी बात थी?'

'मैं सोच रहा था कि भविष्य को सुंदर बनाने के लिए प्रपंच और बेईमानी का सहारा लेना बेकार है। मैं अगली पेशी पर राजवंत को खेत बयान कर दूँगा।'

पत्नी आश्चर्य से उसका मुँह देखती रह गयी। वह हमेशा से यही चाहती थी, लेकिन जब भी हनुमंत से कहती थी, वह बिगड़ जाता था। बात-बात में उसे कम अक्ल और मूर्ख भी बनाता। पत्नी को आश्चर्य चकित देखकर उसने आगे कहा, 'यही नहीं, मैं गजाधर सिंह का जेवर भी लौटा दूँगा।'

पत्नी को वास्तविक प्रसन्नता हुई। उसने मन ही मन पति को सद्बुद्धि देने के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया। तभी हनुमंत ने पुन: कहा, 'एक निश्चय मैंने और किया है। जो तमाम लोग मेरी खेती बंटाई पर करते हैं और फसल पकने पर उनसे सारा अनाज मैं ब्याज और सवाई-डेढ़ी के मद में वसूल कर लेता हूँ न, उनको मैं इस साल से कर्जमुक्त कर रहा हूँ। अब तक उनसे कई गुना वसूल कर चुका हूँ।'

पत्नी खुशी से गद्‌गद हो गई, बोली, 'अब इसी बात पर कायम रहना और देखना जिंदगी कैसे मजे में व्यतीत होती है।' सच, हनुमंत ने जब से यह निश्चय किया, उसकी बेचैनी हवा हो गयी। दिन बीतते गये और पच्चीस तारीख आ पहुँची। वह डॉ विक्रम की पैथॉलाजी में पहुँचा। उसने अभिवादन किया और एक कुर्सी पर बैठ गया। डाक्टर साहब अपनी कुर्सी से उठे और सामने वाली गोदरेज की आलमारी खोलकर उसमें रखी फाइलें उलटने-पलटने लगे। थोड़ी देर बाद एक फाइल निकालकर वे पुन: अपनी कुर्सी पर आ गए। हनुमंत ने धीमे से कहा, 'डाक्टर साव, मेरा कोई टेस्ट हुआ था।'

'हाँ...', कहते हुए वे फाइल से एक नीला कागज निकालकर देखने लगे। फिर उसे मोड़कर लिफाफे में रखते हुए कहा, 'सब कुछ नार्मल है।'

उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। लिफाफा लेते हुए हड़बड़ाकर बोला, 'क्या कहा आपने, वह नहीं है।'

'कुछ नहीं है। जाकर डॉ राजपूत से प्रिस्क्रिप्शन ले लो', डॉ विक्रम ने आश्वस्त किया।

डॉ एम एन राजपूत भी रिपोर्ट देखकर मुस्कुराये। नया पर्चा तैयार करके उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा, 'एक महीने की दवा ले लो। सादी दाल, उबली सब्जी, और पतली चपातियाँ लो। मिर्च-मसाला, तली-भुनी और खट्टा एकदम बंद। जो शंका थी, वैसा कुछ भी नहीं है..।'

डॉ राजपूत के कन्सल्टिंग चैंबर से निकलकर वह बाहर आया तो वह मृत्यु भय से मुक्त था। मेडिकल स्टोर से एक माह की दवा बँधवायी और सड़क पर आ गया। मन हल्का था। दुनिया की रंगीनियाँ लौट आई थीं। पाँच रोज पहले जिन आकांक्षाओं को उसने दफन कर दिया था, वह फिर सिर उठाने लगीं... और वह पुन: अंदरूनी भूचाल से घिर गया। नये मंसूबे डगमगाने लगे..।

बाजार में उस दिन उसका कोई काम नहीं था। चुनांचे वह बस स्टैंड की तरफ बढ़ने लगा। अभी वह धोबियों वाली गली के सामने ही पहुँचा था कि थोड़ा आगे पान की दुकान के सामने राजवंत नजर आया। वह मोबाइल से बतियाता पान ले रहा था। हनुमंत रुककर सोचने लगा, कल सी ओ के न्यायालय में जमीन वाले केस की पेशी है। राजमार्ग से लगी हुई दस बीघा जमीन, यानी करोड़ रुपये की संपत्ति, अगर मैं बयान न करूँ तो कानून मेरे साथ है। फिर मैं बयान ही क्यों करूँ..?

उसने सामने की ओर देखा, राजवंत कान से मोबाइल लगाए इसी ओर आ रहा था। अभी देखेगा तो भइया-भइया करके बयान के लिए दिमाग चाटेगा। उहुं... कौन दिमाग चटाये ... सोचते हुए हनुमंत झट धोबियों वाली गली में मुड़ के आगे बढ़ गया।

- पो.आ. जासापारा
गोसाईगंज-228119
सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 9450143544, 7379100261

कार्य-पद्धति एवं प्रशिक्षण की अनिवार्यता - इस्पात क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में

- श्री वी अप्पाजी कुमार -

जिस उद्योग में कुशल कर्मचारियों की संख्या अधिक होती है, वह दिन दुगुनी-रात चौगुनी वृद्धि करता है। अगर इस्पात उद्योगों को देखा जाए तो भारत में इस क्षेत्र में काफी विकास हुआ है, लेकिन और भी विकास होना अभी बाकी है। यह विकास सिर्फ तकनीक और मशीनों के मामले में ही नहीं, बल्कि कर्मचारियों में भी होना जरूरी है। एक कुशल कर्मचारी अपने दायित्वों के निर्वहन में अहम भूमिका निभाता है।

कौशल विकास 'कभी न खत्म होने वाली एक निरंतर प्रक्रिया है।' इस्पात क्षेत्र में आए-दिन नई तकनीक और नए आविष्कार इजाद किये जा रहे हैं। ऐसे में यह बहुत ही जरूरी है कि कर्मचारियों के कौशल में भी निरंतर विकास होता रहे, ताकि हम स्पर्धा में बने रहें और दूसरों से पीछे न छूट जाएँ। इसके लिए बहुत जरूरी है कि मौजूदा अथवा आने वाली नई तकनीकों की जानकारी एक सटीक व व्यापक प्रशिक्षण प्रणाली के माध्यम से दिलाई जाए। आज हमारा देश तेजी से विकास कर रहा है। यहाँ छोटे-बड़े बहुत से इस्पात उद्योग हैं। इनमें सेल, आर आई एन एल, टाटा स्टील, जे एस डब्ल्यू और एस्सार बड़े उद्योगों के अंतर्गत आते हैं। भविष्य में और भी कुछ अंतराष्ट्रीय इस्पात संयंत्र यहाँ स्थापित हो सकते हैं, जैसाकि अंतराष्ट्रीय इस्पात संघ (World Steel Association) के अनुमान के आंकड़े बताते हैं।

- अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में भारत काफी पीछे है।
- **2013-14** में कुल **81.30** मिलियन टन इस्पात उत्पादन।
- **2014-15** में भारत विश्व का चौथा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक रहा है।
- अगले **2-3** वर्षों में भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक बन जाएगा।
- भारत ढलवाँ लोहे का सबसे बड़ा उत्पादक होगा।
- **2017** तक भारत का कुल इस्पात उत्पादन **122** मिलियन टन प्रतिवर्ष हो जाएगा।

उपर्युक्त तथ्यों से यह साफ पता चलता है कि आगामी वर्षों में भारत विश्व में इस्पात का सर्वाधिक उत्पादक बन सकता है। ऐसे में इस्पात क्षेत्र के कर्मचारियों के कौशल का विकास होना जरूरी है।

1.0 प्रशिक्षण व अनुसंधान विकास कार्यक्रम

सभी सरकारी और निजी उद्योगों में कर्मचारी और अधिकारियों के कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इस्पात उद्योग में भी कौशल विकास के कई कार्यक्रम चलाये जाते हैं। आए-दिन विभिन्न प्रकार के इस्पात उत्पादों का आविष्कार हो रहा है। अनुसंधान और विकास विभाग निरंतर नए तरह के, अधिक मजबूत एवं टिकाऊ इस्पात की खोज में लगा रहता है। विश्व के इस्पात उद्योग में इस्पात की नई श्रेणी की खोज लगातार होती रहती है। इनमें से प्रमुख वे इस्पात उत्पाद हैं, जिनका उपयोग अंतरिक्ष यान, युद्धक विमान, युद्ध पोत, वाहन आदि में होता है। इस तरह के इस्पात की कीमत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत ज्यादा होती है। इस तरह के इस्पात उत्पादों की भारत में काफी कमी है और उनका व्यापक रूप से विदेशों से आयात किया जाता है। इससे देशी मुद्रा विदेशों में चली जाती है और रुपये का अवमूल्यन होता है।

अत: यह अत्यंत आवश्यक है कि इस तरह के प्रमुख इस्पात उत्पादों के उत्पादन और उसे भारत में ही तैयार करने के लिए अनुसंधान करने हेतु कर्मचारियों के कौशल का विकास किया जाए। उन्हें प्रशिक्षण के लिए विदेश भी भेजा जाना चाहिए, ताकि वे सीख सकें कि विदेशों में इस दिशा में कितनी प्रगति हो रही है और उनके काम करने का तरीका कैसा है। भारत के इस्पात उद्योग के लिए आवश्यक है कि वे अपना ज्यादा से ज्यादा लाभांश अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में खर्च करें, जिससे हम भी विशिष्ट इस्पात बना सके और उसका निर्यात कर सकें।

अनुसंधान और विकास के अलावा ऐसे दूसरे पहलू भी हैं, जहाँ कर्मचारियों को प्रशिक्षित करके उनके कौशल का विकास करना बहुत जरूरी है। इन्हीं में से एक है नई तकनीक का उपयोग। भारत में अधिकांश इस्पात उद्योग **20-30** वर्ष पुराने हैं और इनके कर्मचारी भी उतने ही वर्षों से इन उद्योगों में काम कर रहे हैं। ये सभी कर्मचारी पुरानी तकनीक से काम करते आए हैं। लेकिन समय के साथ-साथ तकनीक भी विकसित होती गई और आज बहुत से इस्पात उद्योगों में नवीनतम और उच्च उत्पादकता वाली तकनीक का उपयोग हो रहा है। समस्या यह है कि हमारे कर्मचारी पुरानी तकनीक के आदी हो गए हैं और नई तकनीक का उपयोग करते समय उन्हें झिझक होती है, फिर भी इस झिझक को छोड़ हमें नई चीजों को सीखने के प्रति सदैव उन्मुख होना चाहिए। यह तो रही सीखने व मानव प्रवृत्ति की बात।

2.0 प्रौद्यौगिकी विकास:

वैसे तो तकनीकी विकास को भी दो क्षेत्रों में बाँटकर

देखना अच्छा होगा। एक वह, जो मशीनों और उपकरणों के प्रचालन से संबंधित है तो दूसरा इस्पात बनाने की पद्धति से संबंधित। आइए, इन पर अलग-अलग से विचार किया जाए। पिछले **30** वर्षों में इस्पात बनाने की पद्धति में काफी बदलाव आया है। पुराने दिनों में वात्या भट्ठी के माध्यम से सिर्फ ढलवा लोहा बनता था। बाद में इनसे निम्न स्तर का इस्पात बनने लगा। लगातार अनुसंधान और विकास से इस्पात बनाने की नई पद्धतियाँ विकसित होती गई और आज हम विद्युत आर्क भट्ठी और विद्युत इंडक्शन भट्ठी का भी इस्तेमाल कर रहे हैं। इतना ही नहीं, पहले इंगट से ब्लूम बनाए जाते थे, जबकि आज हम सतत ढलाई मशीन (Continuous Casting Machine) का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिनकी उत्पादन क्षमता काफी अधिक है। लेकिन आज भी ग्राहकों से गुणवत्ता के मामले में बहुत सी शिकायतें मिलती रहती हैं। इसका कारण कर्मचारियों में इस नई तकनीक के सही और सटीक उपयोग के ज्ञान का अभाव है।

वर्तमान में भी भारतीय इस्पात उद्योग के संयंत्र अकुशल कर्मचारियों की समस्या से जूझ रहे हैं और इसी वजह से इस्पात बनाने की सही पद्धतियों का अनुपालन ठीक से नहीं कर पाते, जिसके कारण गुणवत्ता से संबंधित शिकायतें पाई जा रही हैं। इसके लिए कर्मचारियों को सिर्फ कक्षा में दिया जानेवाला प्रशिक्षण काफी नहीं है। उन्हें सीधे दूसरे उद्योगों में नई पद्धति के इस्तेमाल का प्रशिक्षण दिलवाया जाना चाहिए। इससे कर्मचारी सही पद्धति को प्रत्यक्ष रूप से देखते हुए ज्ञान हासिल करेंगे और बेहतर ढंग से सीख सकेंगे। अत: इस्पात बनाने की पद्धति के विषय में कर्मचारियों का निरंतर कौशल विकास करते रहना बहुत ही जरूरी है और इसके लिए समुचित प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाये जाने चाहिए। प्रशिक्षण के बाद सभी कर्मचारियों को आपस में बैठकर विचार-विमर्श करना चाहिए कि उन्होंने जो कुछ भी सीखा है, उसे अपने निजी व्यवहार में किस तरह से उपयोग में लाया जाए और गुणवत्ता संबंधी शिकायतों को कैसे कम किया जाए। प्रबंधन के लिए यह जरूरी है कि वह कर्मचारियों को सही पद्धति के इस्तेमाल के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण दे और इसके लिए उन्हें हमेशा प्रोत्साहित करें।

दूसरी तरफ अब तक जो तकनीकी विकास हुआ है, उसमें नई मशीनें और उपकरण शामिल हैं। पहले जब बहुत से काम मनुष्य द्वारा ही किए जाते थे, बहुत अधिक कर्मचारियों की आवश्यकता होती थी। उपकरण भी बहुत ही निम्न प्रकार के होते थे, जिनसे वांछित परिणाम नहीं मिल पाते थे। परंतु आज बहुत से नए यंत्रों और उपकरणों का आविष्कार हुआ है, जिससे बहुत सारे काम स्वचालित मशीनों द्वारा ही कर लिए जाते हैं, इससे कर्मचारियों की आवश्यकता कम हो जाती है, लेकिन कुशल कर्मचारियों की आवश्यकता बढ़ जाती है। इन नई मशीनों से उत्पाद सटीक और गुणवत्तापूर्ण बनते हैं। उदाहरण के लिए पहले इंगट से ब्लूम बनाए जाते थे, जिसके लिए काफी श्रम एवं व्यय की आवश्यकता होती थी। पर अब ब्लूम सतत ढलाई मशीन से बनाए जाते हैं, जिसमें श्रम और व्यय दोनों कम लगते हैं। अब तो सीधे बिलेट की ढलाई (कास्टिंग) की तकनीक को अपनाया जाने लगा है, इंगट और ब्लूम ढलाई की प्रक्रिया को ही समाप्त कर दिया गया, अर्थात बीच की प्रक्रियाओं में लगनेवाला श्रम और व्यय लगभग नहीं के बराबर हो गया है। हालांकि इन मशीनों की कार्यक्षमता और परिशुद्धता बहुत ही अधिक होती है, पर कभी-कभी कर्मचारियों में इनके सही इस्तेमाल के ज्ञान के अभाव के कारण सब कुछ सुविधाजनक नहीं हो सकता। ये मशीनें काफी महँगी होती हैं। कई बार गलत इस्तेमाल से ये खराब भी हो जाती हैं, जिससे बहुत हानि होती है।

इस्पात उद्योगों में कई तरह के मशीनों और उपकरणों, जैसे कि कास्टिंग मशीन, मोटर, वर्टिकल और हारिजांटल स्टैंड, स्फेरिकल ग्रेफाइट रोल्स, टंगस्टन, कार्बाइड रिंग्स, कांपेक्टर, टर्नस्टाइल्स, क्रेन, लांसिंग, वेल्डिंग और गैस कटिंग मशीन, फर्नेस, कन्वर्टर, कोक ओवेन्स, क्रशिंग मशीन, कन्वेयर बेल्ट, कन्वेयर रोल्स इत्यादि का रोज इस्तेमाल होता है। इन मशीनों और उपकरणों में अधिकांश खराबियाँ (Breakdowns) उनके असुरक्षित तरीके से इस्तेमाल अथवा गलत तरह के उपकरणों या लूज फिटिंग अथवा मानवीय गलतियों से होती हैं। ऐसा नहीं है कि इन्हें इन नई मशीनों के इस्तेमाल का प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। प्रशिक्षण तो दिया जाता है, पर वह पर्याप्त नहीं होता है और इनके प्रशिक्षण के उपरांत कार्य निर्वहण का मूल्यांकन भी नहीं किया जाता है, जिससे यह पता ही नहीं चलता है कि जो प्रशिक्षण दिया गया है, वह पर्याप्त और सही है या नहीं, उसमें कुछ सुधार या परिवर्तन या नए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को जोड़ना है या नहीं, आदि। अत: यह बहुत ही जरूरी है कि प्रशिक्षण उपरांत कर्मचारियों की कार्य दक्षता का मूल्यांकन हो और उनके कौशल को बढ़ाने के नए उपाय ढूँढ़े जाएँ।

इतना ही नहीं, यह भी सच है कि सभी कर्मचारियों की सीखने की क्षमता एक जैसी नहीं होती है। कुछ को सभी विषय आसानी से समझ में आ जाते हैं, तो कुछ को समझने में देर लगती है। कुछ ऐसे भी होते हैं, जिन्हें निरंतर सिखाना ही पड़ता है। अत: सिर्फ कक्षा में ही नहीं, बल्कि उन्हें उनके कार्यस्थल पर भी समय-समय पर प्रोत्साहन और ज्ञान दिया जाना जरूरी है कि मशीनों और उपकरणों को सही तरीके से कैसे इस्तेमाल किया

जाए और खराबियों को कैसे कम किया जाए। इस विषय में क्षेत्रीय स्तर पर काम करने वाले अधिकारियों की भूमिका बहुत अहम होती है, क्योंकि ये अधिकारी ही कर्मचारियों से काम करवाते हैं। अत: इन अधिकारियों और कर्मचारियों दोनों को ही पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

3.0 सुरक्षा:

सुरक्षा आज किसी भी उद्योग की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सुरक्षा का स्थान सर्वोपरि रखा जाता है। जिस उद्योग में सुरक्षा के सभी नियमों का पालन होता है, वहाँ दुर्घटनाएँ बिलकुल नहीं के बराबर होती हैं और अगर इस्पात उद्योग को देखा जाए, तो यहाँ इस्पात बनाने की जो पद्धति है, उसमें काफी सावधानी और दूरदर्शिता की आवश्यकता होती है। इस्पात उद्योग के कर्मचारी, श्रमिक, अधिकारीगण आदि रोज तप्त लौह, द्रव इस्पात, रक्तिम तप्त कोक, तप्त ब्लूम, कई प्रकार के अत्यंत जहरीली और ज्वलनशील गैसों तथा खतरनाक रसायनों आदि के साथ रूबरू होते हुए काम करते हैं। इस्पात उद्योग में बड़े-बड़े मशीनों और भट्ठियों का रोज इस्तेमाल होता है। उपर्युक्त सभी उपकरणों के साथ काम करते समय बहुत सारे सुरक्षा नियमों का पालन करना पड़ता है। एक छोटी सी गलती एक बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है।

अत: यह बहुत ही जरूरी है कि कर्मचारियों, श्रमिकों आदि को मशीनों तथा उपकरणों के उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाए। उनके कौशल का विकास इस तरह से किया जाए कि वे सभी उपकरणों, मशीनों, द्रव इस्पात, गैसों आदि को ठीक से इस्तेमाल कर सकें और इस दौरान उनसे जरा सी भी गलती न हो। कर्मचारियों में जागरूकता लानी चाहिए कि वे सभी पद्धतियों का सही अनुपालन करें और मशीनों का सही तरीके से उपयोग करें, ताकि दुर्घटनाओं को रोका जा सके। कौशल विकास इस तरह का होना चाहिए कि किसी भी प्रक्रिया के साधारण से असाधारण स्थिति में जाने से पहले ही कर्मचारी उसे भाँप लें और दुर्घटना होने से रोक दें। अत: सुरक्षा के मामले में इस्पात क्षेत्र में काफी विकास किया जाना बाकी है।

4.0 पर्यावरण संरक्षण:

इस्पात क्षेत्र का विकास किसी भी देश के विकास का मापदंड माना जाता है। लेकिन यह भी सच है कि सिर्फ सर्वश्रेष्ठ इस्पात बनाने और उच्चतम उत्पादन करने से हमारा काम खत्म नहीं हो जाता। पर्यावरण और प्राकृतिक संतुलन को कभी भी अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। इसके भी दो पहलू हैं। पहला यह है कि हम अपने संसाधन, जो सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं, उनका बेहतर उपयोग करें, जिससे न्यूनतम मात्रा में उपलब्ध संसाधन, जैसे कोयला, लौह अयस्क, चूना पत्थर, गैसों, रसायनों आदि का उपयोग हो और ज्यादा उत्पादन हो। अत: पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए कर्मचारियों को हानिकारक रसायनों और गैसों के दुष्प्रभाव से अवगत कराना चाहिए और इनका सही उपचार करने के बाद ही इन्हें पर्यावरण में छोड़ना चाहिए। इस्पात कर्मचारियों का इस दृष्टि से भी कौशल विकास आवश्यक है।

5.0 ऊर्जा संरक्षण:

इस्पात कर्मचारियों को निरंतर ऊर्जा बचाने, लागत मूल्य कम करने की महत्ता समझाना चाहिए। विद्युत ऊर्जा बहुत महँगी और सीमित है। इसलिए उन्हें इसका कम से कम उपयोग और जब आवश्यक न हो तो विद्युत उपकरणों को बंदकर देने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इतना ही नहीं, वात्या भट्ठी और कोक ओवेन में कोयले की गुणवत्ता को बढ़ाने की प्रक्रिया हेतु भी कौशल विकास जरूरी है। निम्न स्तर के कोयले और लौह अयस्क के इस्तेमाल की प्रक्रिया के लिए भी कौशल विकास जरूरी है।

6.0 व्यावसायिक स्वास्थ्य:

एक स्वस्थ कर्मचारी ही कुशल कर्मचारी बन सकता है। शारीरिक और मानसिक स्वस्थता दोनों ही बहुत जरूरी हैं। इस्पात उद्योग में काम करते समय दिमाग का उपयोग बहुत ही जरूरी होता है। पर यदि कर्मचारी के दिमाग में कई निजी समस्याएँ उमड़ रही हों तो कर्मचारी काम करते वक्त गलती कर सकता है और दुर्घटनाएँ हो सकती हैं। अत: यह जरूरी है कि कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य सुधार के लिए योगासन, प्राणायाम इत्यादि अध्यात्मिक पद्धतियों का भी प्रशिक्षण दिया जाए। इससे उनके सीखने और काम करने की क्षमता बढ़ेगी।

उपर्युक्त कथनों से यह साफ है कि इस्पात क्षेत्र में बहुआयामी कौशल का विकास बहुत जरूरी है। नई तकनीकों का सही इस्तेमाल एवं सभी सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए पर्यावरण से तालमेल के साथ सर्वश्रेष्ठ इस्पात बनाया जा सकता है। जरूरत है तो बस इन सभी क्षेत्रों में पर्याप्त और उचित प्रशिक्षण की। प्रशिक्षण निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है और यदि यह सही दिशा में चलता है तो भारत इस्पात उत्पादन के क्षेत्र में बहुत प्रगति कर सकता है और विश्व का सर्वश्रेष्ठ इस्पात उत्पादक बन सकता है।

- सहायक प्रबंधक
वायर रॉड मिल
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम
मोबाइल: **+91 9701348038**

डॉ जय शंकर शुक्ल की कविताएँ

(1)

अंधियारी रातों में ये मन
दूर देश तक हो आता है

कभी ढूँढ़ लेता अवसादें
अपने अंत: में अनजानी
कभी मोर पंखों पर चढ़कर
नील गगन में फिर अमानी

मान-अमान भरे पलछिन के
अपने-पन में खो जाता है।

कभी दौड़ना चाहे खुलकर
लेकिन पग सोये रहते हैं
आस-निरास भरे लम्हों में
अनदेखे साये पलते हैं

परछाई के मोहपाश में
हँसता हँसता रो जाता है

कभी शाह अपनी मर्जी का
नूतन अपने रूप दिखाये
कभी दीन-हीन बनकर यह
आसमान से नीचे आये

धूप-छाँव के गलियारे में
मस्त कलंदर सो जाता है

पाप-पुण्य की जड़ता छायी
अवचेतन के मृदु भावों में
नाव नदी की लहर ले चली
चेतनता के सद्भावों में

भाव-कुभावों की झंझा में
बीज कर्म के बो जाता है।

(2)

भयातुर हूँ रोशनी से
और तम भाने लगा है
भोर का तारा हृदय में
पीर उपजाने लगा है
प्यार के बोझिल अंधेरों
में सगुन अब ढूँढ़ता हूँ
आह भरती प्रवास में क्यों
शांति का पथ ढूँढ़ता हूँ
टिमटिमाते तारकों में
चित्त भरमाने लगा है
शांत नीरव शर्वरी में
मौन मन के गीत चलते
हर तरफ तन्हाइयों में
प्रीति के सरगम निकलते
प्रेम का नव अंकुरण
मरुभूमि पर छाने लगा है
नींद सौतन बन नयन की
दूर नभ में ही विचरती
आँख के सूने किनारे
चेतना निस्तेज करती
वेदना का स्वर अचानक
अश्रु बन जाने लगा है
अब अंधेरों की शरण में
चित्त के उद्गार पलते
शर्वरी की शांत बोझिल
वेश में अनुराग फलते
नेह मधु के आगमन से
चमन मुस्काने लगा है!

बाहर आने दो

आँचल में
इक कली मचलती
बाहर आने दो मुझको माँ
सिमटी
अपने ठाँव कह रही
भय विसराने दो मुझको माँ

गोदी में आने को आतुर
बिटिया विनय सुनाती प्रतिदिन
ममता की सौगंध दिलाकर
अपनी पीर जताती प्रतिदिन

माँ तुम भी तो
इक बेटी हो
यह जतलाने दो मुझको माँ
परा ध्वनि की तीव्र तरंगे
परिचय मुझसे पूछ रही हैं
मैं बालक हूँ या कि बालिका
चिह्न सभी वह ढूँढ़ रही है
माँ तुम तो
कितनी भोली हो
यह दिखलाने दो मुझको माँ

मैं तो बनी तुम्हारी रज से
हूँ तेरी पहचान सनातन
दादी, नानी, मौसी, चाची
मेरे ही प्रतिमान चिंतन
माँ मैं भी तो
रूप तुम्हारी
यह समझाने दो मुझके माँ

चाकू से मुझको डर लगता
सिहर सिहर जाती हूँ पूरी
भइया आए मैं भी चाहूँ
विन भाई के बहन अधूरी

माँ तुम मामा संग
खिलती हो
यह आजमाने दो मुझको माँ।

नातें रचता है

अक्सर मेरा मन
मुझसे कुछ, अधुनातन
बातें करता है...
उड़न खटोले में
बैठा वह, रोज नये
नातें रचता है...

मन मेरा प्रतिनिधि बन बैठा
संसारी नव व्यवहारों में
नये नये संयोग बनाता
विविध तरह के आचारों में

नूतन अनुभव के
साये में, संवंधित
घातें रचता है...

पल-पल साथ रहे यह मेरे
पर मुझको कुछ जान न पाया
कौन हूँ मैं? कैसी फितरत है?
चाहा पर पहचान न पाया

कर्मों के
परिणामों से मन, सदा
दिवस-रातें रचता है...

बंधन-मुक्ति कराये मन ही
कर्मों की परिभाषाओं से
संकल्पों की नव-धारा को
करें प्रदर्शित आशाओं से

जन्म मृत्यु के
बंधन के हित, श्वेत-श्याम
मातें रचता है...

सुख दुख के आभास सदा ही
होते मन के संदर्भों से
आभासित भावों की निजता
अर्थ बताती संबंधों से

मेरे लिए
मिलन के संग संग, पीड़ित...
सौगातें रचता है...

आराधना

अभय कर दो मातु मुझको
मैं करूँ आराधना
नेह की सरिता बहाकर
नित करूँ नव सर्जना

पा सकूँ तेरी कृपा का
दान, भरकर भाव में
रच सकूँ सुंदर सजीला
रूप, करके वंदना...

बुद्धि को विकसित करो माँ
बोध का दीपक जला
आचरण को श्रेष्ठ करके
पुष्ट कर दो भावना...

ज्ञान का दीपक जलाकर
दास मैं तेरा बनूँ
जगत को कर दूँ प्रकाशित
गीत की कर साधना...

जिस जगह तेरी छटा हो
परम पावन रूप हो
सकल कल्मष को मिटा दो
पुत्र की यह कामना...

आपका आशीष पाकर
जागरण के गीत दूँ मैं
सत्य का उद्घोष करके
दूर कर दूँ वासना...

हम सब एक बनें

आओ हम सब एक बनें
आओ हम सब नेक बनें
संकल्पित हों उम्मीदों से
भाव प्रवण प्रत्येक बनें
        भाव पिपास का अर्जन कर
        पायें अगणित बोध शब्द का
        उम्मीदों का नित तर्पण कर
        लायें नूतन शोष शब्द का
धरती, गगन, नीर मारुत से
सजे, स्वच्छ परिवेश बने...
        अधुनातन का दीप जलायें
        जीवन में प्रकाश फैलायें
        दीन दुखी बेबस वंचित की
        पीड़ा हरें, शक्ति उपजायें
दोषों को कर दूर जगत से
अभिनव अमल विवेक बनें...
        सदा सरलता के बाने को
        मानें, पूजें सच्चाई को
        जग से दुर्गुण दूर हटायें
        जगमग कर दें अच्छाई को
कष्टों से छुटकारा देना
सीखें सुखी प्रदेश बनें...

प्रणय का सवेरा

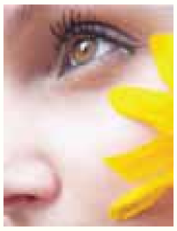

विरह का प्रहरी नहीं हूँ
मैं प्रणय का हूँ सवेरा
रात का चंदा नहीं पर
चाँदनी का हूँ लुटेरा
        सोचता हूँ इस निशा में
        फिर कभी होगा अंधेरा
रूप का मनुहार करती
आ रही मेरी निगाहें
बादलों की वल्लरी में
सुप्त हैं मेरी भुजाएँ
        कौंधती सौदामिनी की
        छाँह में मेरा बसेरा...
चंचला तुझको कहे जग
मैं अंचल साधक प्रणय का
मैं सदा जलता रहूँ, तुम -
दो मुझे ईंधन हृदय का
        रात-दिन के श्वेत-काले
        पृष्ठ पर हो नाम तेरा

इस दौर में

संपदाएँ नग्न होती जा रहीं
इस दौर में
आचरण खोया न जाने कब कहाँ
किस शोर में
पार्टियों में मय थिरकता
पश्चिमी संगीत में
नृत्य करती युवतियाँ
मदहोश होकर प्रीत में
नशे के सौदागरों की छवि न
मिलती भोर में

पारकर ड्योढ़ी समय की
तितलियाँ मुखरित हुईं
नाचती-फिरती पबों में
शान से गर्वित हुईं
चोट खाकर झलमलाया, जल
नयन के कोर में

पहन बहुरंगे बस नूतन
दिखातीं तन-बदन
अर्ध सत्यों से प्रकाशित
हो रही जैसे कथन
कैट करती वाक, मंचों पर
समय की जोर में

शयन कक्षों में चहकती, पात्र
डेली सोप से
महाल जेवर वस्त्र में छजती
निखरती होप से
देख वातायन
सिमटता मनुज अंधे खोर में।

- भवन सं.49, पथ सं.06
बैंक कालोनी
दिल्ली-110093
मोबाइल: +91 9968235647

श्री सुरेंद्र प्रबुद्ध की कविताएँ

वह संक्रांति की रात चल पड़ी है ...

राजपथ की भीड़ से अभी-अभी
स्वयं को छिटकाकर
पगडंडी पर उतर
वह कर ही रहा है
यात्रा का आरंभ
क्षिति की असीमता की ओर
जहाँ संक्रांत दिनकर मिल सकेगा
थोड़ा सा विरमित
हल्का सा चिंतित
तनिक सा विचलित

उसे मिलेगा ही जरूरी नहीं
उससे मिल पाएगा ऐसा भी नहीं
पर तय है
जो पगडंडी राजपथ से विमत हो
विप्लव की लय में लहरीला भाग रही है
अंतिम तक जाने
उसमें अपना कैवल्य पाने की जिद
उसका तीखा बंकिम तेवर है
हम वहाँ उस आदमी में
ओज-तेज देख सकते हैं
जो बहुत कुछ छोड़ने का संकल्प लेकर
आगे बढ़ रहा है

वह जा रहा है और जाएगा
वह चल रहा है और चलेगा
भले ही हमारे लिए पगडंडी
एक क्षरणशील विकल्प हो....
नहीं कोई जानता यह
पगडंडी सचमुच खत्म हो गई होगी
आगे रहस्य के बीहड़ में
या कि वह सदा सदा के लिए
कंकाल में बदल गया होगा
जिसपर सूर्य-किरणें
अपनी ताप सेंकने ठहरेंगी

शायद सूर्य
उस आदमी के अस्तित्व पर
ज्यादा कुछ कहे न सुने
लेकिन उसको अपनी यात्रा
अनथक जारी रखने
किन्हीं आज्ञात गुफाओं में सही
सूर्य नमस्कार करते रहना है।

यह भी हो सकता है
आदमी जो हो चुका है ओझल
सबकी दृष्टि से
गुमसुम नहीं बैठ सकता
बिल्कुल नहीं बैठा होगा
कुछ न कुछ कर रहा होगा।
निश्चित ही मौलिक नया होगा
यों ही नहीं उतरा है वह
राजपथ से - सूर्य की ओर

मौन और मृत्यु को
ढोए अलग-अलग कंधे पर
वह अकेला चला है
पर नहीं है अकेला
आदमी है आदमी की तलाश में
कौन कहाँ कैसा अकेला
हम नहीं करेंगे उसकी प्रतीक्षा
उसे झक्की या पागल घोषित कर
डूब जायेंगे राजा के जलसा घरों में
परस्पर उलझते
वीर गाथाएँ गाते मिलेंगे/रह जायेंगे
इतिहास में

सूर्य आदमी के इतिहास से
कोई वास्ता कब रखता है
हाँ रात संक्रांति की ही है
करवट बदली है
उत्तरमुखी/उत्तरजीवी होकर जागी है
आदमी ने काफी सोच समझकर
सही समय चुना है चल पड़ने का

एक स्त्री और दो बुद्ध

क्षितिज था कोरा
अनंत तक दूर दिगंत फैला हुआ
अवनि और अंबर के रतनार ओठों की बीच
एक निस्तब्ध मौन था
सिवाय इसके कि अभी-अभी
एक चिड़िया गुजरी बीचों बीच
उसकी उड़ान की कमसिन लिपि में
उसी के कंठ स्वर का मद्दिम राग
वहाँ तरंगित था
थी रही टपकती शनैः शनैः
मकरंद की बूँदें
विशालता के सिरे में
एक मासूम छाया
सूर्य क्या चमका
खड़ी हुई वामा

था पुरुष ही
जो बुद्ध हुआ
जानता था
उसे अपनी नियति में
ईश्वर बनाये जाने का खतरा था
इसलिए क्रुद्ध था
क्योंकि करुण धरा पर
वह बुद्ध था

हम जाते हैं
करते हैं प्रार्थनाएँ
बुद्ध के सामने
उसकी मूर्ति की परिक्रमा कर
करते हैं किसम किसम के
अनुनय विनय
खासकर तब और ज्यादा
जब वह ईश्वर बना दिया जाता है
लेकिन
बुद्ध भी प्रार्थनाएँ किया करता था
किसकी
कम से कम ईश्वर की नहीं।

कितना छोटा पड़ता है!

सारी कविताओं में लिखित पठित
पीड़ा के संदर्भों को
कर लें एकत्र
शायद बन जाए हिमालय
पर कितना छोटा पड़ता है
अपने अपने घुटनों के दर्द से
विश्व भर में बोले सुने
प्यार के सारे विस्तारों को
बाँध दें प्रवाह में

छोड दें एक दिशा में
शायद बज जाए गंगा का संजाल
पर कितना छोटा पड़ता है
माँ के स्तन को बच्चे के ओठों की छुअन से

कितनी कितनी किताबें
रच बांच ली जाए एक साथ
कितनी छोटी पड़ती हैं
नापने को अपनी अपनी अनुभूतियाँ

कितनी कितनी बार रुकें हम
रीचार्ज होते रहें तब भी
कितना अनंत रह जाता है
हमारी यात्राओं के अपने अपने क्षितिज

क्या करें न करें
द्विविधाओं की आकाश गंगा में
कहाँ कहाँ खोली जाती हैं
रहस्यों की परतें
अपनी काया की नाव से

पर कितना कम पड़ता है
समय हमारे लिए

पेड़ का विलोम संबंध

आदमी ने काटना
तब सीखा होगा
जब वह खुद
कटा या काटा जा रहा हो

सोचना ऐसा
समय को आदिम युग में
खुला छोड़ देना है
जब कि आदमी
कटना काटने का हुनर
सीख रहा था गोकि जरूरी था
जिंदा रहने के लिए
आज भी वह सब
दोहराया जा रहा है उन्हीं क्रियापदों को
पेड़ के संबंध में खासकर
बात सही लगती है
देख रहे हैं उतना बड़ा सच
आज तक निष्प्राण हुआ नहीं है
आदमी के भीतर
माने कम प्रेम करता है पेड़ से
और घिन ज्यादा
हैं पेड़ अभी भी कटते हुए
सच नहीं बोल पाते
बोलना नहीं आता
दूसरों को समझाते कैसे
कई बार देखा गया है
कि आदमी जब जब पेड़ काट रहा होता है
तब तब अपना एक पैर भी काटता जाता है
ऐसे सच को और कितना
खोलें कि सच लगे/दिखे...

पेड़ उसका
कुल्हाड़ी उसकी
औजार की खोज भी उसकी
हसरत उसकी
हवस उसकी
तब क्या औकात पेड़ की
जबकि है जरूरत सबकी
इसलिए
होता नहीं कभी पेड़ से रक्तपात
करता नहीं कभी पेड़ चीख-पुकार
कट जाता है लगातार
मृत्यु का ऐसा नीरव निषेध
व्यक्ति की संवेदना को बेध नहीं पाता
जबकि
पेड़ हर हत्या के विरुद्ध है
पेड़ हर मृत्यु-दंड का प्रतिकार है
पेड़ हर हिंसा का प्रतिशोध है

इतना होते हुए भी
इतना जरूर है
काटते हुए आदमी हमेशा
शर्म से झुका झुका रहता है
कटता हुआ पेड़ हमेशा
सहमकर थरथराता रहता है
कटना काटने का अध्यादेश
संबंधों के संविधान में
तब से जारी रहा है
जब से आदमी को
अपना दिल
पत्थर सा भारी लगा है

सुबह शाम का पता

सुबह का पता
सूरज से पहले
गौरेया से पूछ लेना

सूरज की मेहनत की तपिश
आकाश में जब से फैलती है
तब सबसे पहले
ऊर्जस्वित होती है जो
वही ... गौरेया ही है सामने
कहती है - सुबह हो गई
उसी तरह सूरज जब
विराम के लिए
समुद्र में उतरता है
शाम का पता देती है
सुबह शाम की पहचान के
मामले में आदमी से आगे
निकल गई है

रोको मत उसे
समय का रोना मत रोओ
व्यस्तता का ढिंढोरची बनो मत
उसमें देखो झांककर
कितनी गहराई में बचा रखा है
गौरेया ने ऐसा अहसास
कि पूरी प्रकृति घबराती नहीं
नाप लेती है पूरा का पूरा आकाश
अपने छोटे डैनों से
और माप लेती है पूरी पृथ्वी
फुदक फुदककर अनगिनत बार
नन्हें पैरों की जोड़ी से
उससे पूछने के पहले
कर लो दोस्ती
वह चहककर बता देगी
सुबह शाम का पता
जीने का/के लिए सही सलीका

- अक्षरा
तोषगाँव-493558
जिला महासमुंद, छत्तीसगढ़
मोबाइल: +91 9669274393

संगठन में अक्टूबर-दिसंबर, 2015 तिमाही के दौरान राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के

गांधी जयंती समारोह संपन्न

उक्कुनगरम में 2 अक्टूबर को गांधी जयंती समारोह मनाया गया। संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने सेक्टर-8 में स्थित महात्मा गांधी पार्क में महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर फूलमाला चढ़ाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कार्यक्रम में एकत्रित भीड़ को संबोधित करते हुए उन्हें महात्मा गांधी जी के त्याग व बलिदान, राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओं एवं नैतिक मूल्यों का स्मरण दिलाया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए अपने लक्ष्यों की प्राप्ति का प्रयास करना होगा। उन्होंने 'स्वच्छ भारत विषय पर वार्षिक प्रतिवेदन' का विमोचन किया। तत्पश्चात उन्होंने निगमित सामाजिक दायित्व गतिविधि के अधीन स्कूली बच्चों की 'स्वच्छता साइकिल रैली' का शुभारंभ किया। निदेशक (परियोजना) श्री पी सी महापात्रा, निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद, निदेशक (प्रचालन) श्री डी एन राव, निदेशक (वित्त) श्री टी वी एस कृष्ण कुमार ने भी महात्मा गांधी जी को पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात सभी ने स्वच्छता अभियान में भाग लिया।

चेपलपालेम में नई सुविधाओं का उद्घाटन

आर आई एन एल की निगमित सामाजिक दायित्व गतिविधि की 'ग्राम विकास' योजना के अंतर्गत संगठन के परित: गाँव चेपलपालेम में सीमेंट रोड व बस शेल्टर के निर्माण कार्य का उद्घाटन किया गया। संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन, निदेशकगण, वरिष्ठ कार्यपालक व श्रमिक संघों के नेताओं की उपस्थिति में पेंदुर्ति निर्वाचन क्षेत्र की विधान सभा के सदस्य माननीय श्री बंडारु सत्यनारायण द्वारा इसका उद्घाटन किया गया।

संगठन द्वारा एन एम डी सी के साथ समझौता

छत्तीसगढ़ के नागरनार में एन एम डी सी द्वारा स्थापित किये जानेवाले नागरनार इस्पात संयंत्र (एन एस पी) के नये कर्मचारियों को आर आई एन एल में आवश्यक प्रशिक्षण दिये जाने हेतु संगठन एवं एन एम डी सी के बीच समझौता ज्ञापन किया गया। आर आई एन एल के निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद और एन एम डी सी के कार्यपालक निदेशक (कार्मिक व प्रशासन) श्री संदीप तुला ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। इस समझौते से दोनों संगठनों के बीच सहयोग एवं बेहतर संबंध स्थापित होने की उम्मीद है।

ICQCC 2015 Korea

गुणवत्ता चक्र समूहों की जीत

दक्षिण कोरिया में कोरियन स्टैंडर्ड असोसिएशन द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता नियंत्रण चक्र समारोह में संगठन के इस्पात गलन शाला के गुणवत्ता चक्र समूह द्वारा 'टी के स्टैंड टॉप व बॉटम रोलर रोटरी यूनियन्स में सुधार' एवं कोक ओवेन व पी ई एम विभाग के गुणवत्ता चक्र समूह द्वारा 'विभिन्न गतियों पर रोटरी-ड्रम रोटेशन की जाँच' विषय पर अपने केस स्टडी हेतु क्रमश:रजत व कांस्य पदक प्राप्त हुआ। समारोह में निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद, महाप्रबंधक (प्रबंधन सेवा) श्री वी नारायणन, महाप्रबंधक (लौह) प्रभारी श्री वी करुप्पसामी, सहायक महाप्रबंधक (प्रबंधन सेवा) श्रीमती एन भानु ने भाग लिया।

सी एस आर, कृषिवानिकी व माल सत्यापन विभागों में हिंदी कार्यान्वयन दिवस

निगमित सामाजिक दायित्व, कृषिवानिकी एवं माल सत्यापन विभागों में 16 दिसंबर, 2015 को हिंदी कार्यान्वयन दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रावधानों से संबंधित प्रस्तुतीकरण दिया। कार्यक्रम में उप महाप्रबंधक (सी एस आर) श्री जी गांधी एवं वरिष्ठ

साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया गया, जिनका विवरण नीचे प्रस्तुत है।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
विशाखपट्टणम
हिंदी
दिवस

प्रबंधक (माल सत्यापन) श्री के वी सुव्वराजु भी उपस्थित थे। प्रतिभागियों के लिए हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। कनिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री एम बी पडाल एवं वरिष्ठ सहायक (राजभाषा) श्रीमती के एन एल वी कृष्णवेणी ने इस कार्यक्रम का संचालन किया। शाम को आयोजित समापन समारोह में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिये गये।

आंतरिक लेखापरीक्षा व माल सत्यापन विभाग में हिंदी कार्यक्रम

वित्त व लेखा विभाग के आंतरिक लेखापरीक्षा व माल सत्यापन अनुभाग में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए 22 दिसंबर को हिंदी कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने सरकार की राजभाषा नीति के विभिन्न प्रावधानों की जानकारी देते हुए हिंदी के प्रयोग से संबंधित उनके सभी संदेहों का निवारण किया। कार्यक्रम में महाप्रबंधक (आंतरिक लेखापरीक्षा व माल सत्यापन) श्री एम वी राव एवं अनुभाग के 32 कार्यपालक, राजभाषा विभाग के प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती जे रमादेवी एवं वरिष्ठ सहायक (राजभाषा) श्री जी आर ए नायुडु उपस्थित थे।

हैदराबाद शाखा कार्यालय में हिंदी दिवस :

हैदराबाद स्थित कार्यालय में 9 व 10 नवंबर, 2015 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के कर्मचारियों को हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु आवश्यक दिशानिर्देश दिये गये। इस संबंध में कार्यालय में हिंदी कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति का जायजा लिया गया और उपयुक्त सुझाव दिये गये। कंप्यूटरों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु यूनिकोड का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही हिंदी में प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। 10 नवंबर को आयोजित समापन समारोह में प्रतियोगिताओं के विजेता पुरस्कृत किये गये। प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती जे रमादेवी ने कार्यक्रम का संचालन किया। प्रबंधक (संपर्क) श्रीमती ए उगादि एवं कार्यालय के कर्मचारियों ने भरपूर सहयोग दिया।

कोच्चि शाखा बिक्री कार्यालय में हिंदी दिवस :

कोच्चि शाखा बिक्री कार्यालय में दिनांक 19 से 20 अक्टूबर 2015 को हिंदी दिवस मनाया गया। संसदीय राजभाषा समिति को दिये गये आश्वासन के अनुपालन में इस कार्यक्रम के दौरान यूनिकोड प्रशिक्षण, हिंदी कार्यशाला आयोजित किए गए और अनुवाद, सामान्य ज्ञान एवं यूनिकोड के माध्यम से पॉवरप्वाइंट प्रस्तुतीकरण बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई। 19 अक्टूबर को कार्यक्रम का उद्घाटन शाखा के सहायक महाप्रबंधक श्री जी अजीत ने किया। श्री अजीत ने कंपनी द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार के कदमों की सराहना करते हुए कहा कि प्रबंधन के पूर्ण सहयोग के कारण कोच्चि शाखा बिक्री कार्यालय सुदूर दक्षिण में होते हुए भी राजभाषा के क्षेत्र में बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहा है। कर्मचारियों ने इन कार्यक्रमों में बड़े उत्साह से भाग लिया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि महोदया एवं भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्रीमती सुनीता यादव ने संबोधन में सभी को राजभाषा के प्रति ईमानदार बनने तथा एक सच्चे भारतीय के रूप में इसको व्यवहार में लाने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में सहायक महाप्रबंधक एवं शाखा प्रबंधक श्री जी वी एन प्रसाद एवं हिंदी समन्वयक श्री जोसेफ थॉमस का विशेष योगदान रहा। उप प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती वी सुगुणा और वरिष्ठ सहायक श्री गोपाल कार्यक्रम का संचालन किया। राजभाषा विभाग द्वारा शाखा बिक्री कार्यालय का निरीक्षण भी किया गया।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
RASHTRIYA ISPAT NIGAM LIMITED
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
VISAKHAPATNAM STEEL PLANT
दिवस
DAY CELE

संगीत सरिता

की बोर्ड सीखने की प्रविधि

इस अंक में 'खूबसूरत' फिल्म के 'प्रीत न करियो कोई' गाने का नोटेशन नीचे प्रस्तुत है। यह 'भीमपलासी' राग पर आधारित गाना है। फिल्म 'मेरा साया' का 'नैनों में बदरा छाये', शर्मीला का 'खिलते हैं गुल यहाँ' और दिल से 'ऐ अजनबी तू भी कभी आवाज दे कहीं से' गाने इसी राग पर आधारित हैं। इसके सुर हैं 'नि स ग म प ध नि सं'। इसमें 'ग' और 'नि' कोमल स्वर हैं।

स स गा ग मा   गा मा प प मा ग ग मा   गा मा प प मा गा मा प प मा ग   पा प प गा ग सा
जो मैं जानती   कि प्रीत करे दु:ख होय   तो नगर ढिंढोरा पीटती कहती   प्रीत न करियो कोई
स स गा ग मा   गा मा प प मा ग ग मा   गा मा प प मा गा मा प प मा ग   पा प प गा ग सा
जो मैं जानती   कि मन खुद बैरी होय   हर नगर ढिंढोरा पीटती कहती   प्रीत न करियो कोई
स स गा ग मा   गा मा प प मा ग ग मा   गा मा प प मा गा मा प प मा ग   पा प प गा ग सा
जो मैं जानती   कि प्रीत करे दु:ख होय   तो नगर ढिंढोरा पीटती कहती   प्रीत न करियो कोई
स स गा ग मा   गा मा प प मा ग ग मा   गा मा प प मा गा मा प प मा ग   पा प प गा ग सा
जो मैं जानती   कि मन खुद बैरी होय   हर डगर ढिंढोरा पीटती कहती   प्रीत न करियो कोई
सां सां नी नी पा पा गा   गा मा प प मा गा मा प प मा ग   पा प प गा ग सा
आ ....   तो नगर ढिंढोरा पीटती कहती   प्रीत न करियो कोई
सां सां नी नी पा पा गा   गा मा प प मा गा मा प प मा ग   पा प प गा ग सा
आ ....   हर डगर ढिंढोरा पीटती कहती   प्रीत न करियो कोई
सां सं नी प म ग मा   सां सं नी प ध नी नी
काश कि यूँ हो जावे   नींद मेरी खुल जावे
सां सं नी प नी पा मा   रे रे रे मा गा
और कोई कह दे हमसे   कि सपना था

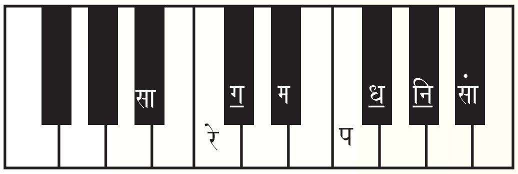

सां सं नी प म ग मा   सां सं नी प ध नी नी   सां सं नी प नी पा मा   रे रे रे मा गा   रे रे रे मा गा
काश कि यूँ हो जावे   नींद मेरी खुल जावे   और कोई कह दे हमसे   कि सपना था   कि सपना था
पा ध नी प नी   सां सां नी पा नी नी पा मा   मा प प मा रे गा
पर यह सच न था   क्या जानूँ मैं कौन है सपना   और सच कैसा होय
स स गा ग मा   पा ध नि नी धा प प मा   गा मा प प मा गा मा प प मा ग   पा प प गा ग सा
जो मैं जानती   कि प्रीत में पागल होय   तो ढोल नगाड़ा पीटके कहती   प्रीत न करियो कोई
गा ग मा प धा   पा ध नि नी धा प प मा   पा ध नि नी धा पा ध नि नी धा पा   नी सं सं गा रे सा
जो मैं जानती   कि मन खुद बैरी होय   हर डगर ढिंढोरा पीटती कहती   प्रीत न करियो कोई
सां सं नी प म ग मा   सां सं नी प ध नी नी   सां सं नी प नी पा मा   रे रे रे मा गा
नैन वने बंजारे   फिरते मारे-मारे   हर पल तेरी बात निहारे   पल-पल भर-भर आये
सां सं नी प म ग मा   सां सं नी प ध नी नी   सां सं नी प नी पा मा   रे रे रे मा गा   रे रे रे मा गा
नैन वने बंजारे   फिरते मारे-मारे   हर पल तेरी बात निहारे   पल-पल भर-भर आये   पल-पल भर-भर आये
पा ध नी प नी   सां सां नी पा नी नी पा मा   मा प प मा रे गा
मन मोरा मुरझाये   काहे तरसे बदरा बरसे   दिल से निकले हाय
स स गा ग मा   पा ध नि नी धा प प मा   गा मा प प मा गा मा प प मा ग   पा प प गा ग सा
जो मैं जानती   कि प्रीत में पागल होय   तो ढोल नगाड़ा पीटके कहती   प्रीत न करियो कोई
गा ग मा प धा   पा ध नि नी धा प प मा   पा ध नि नी धा पा ध नि नी धा पा   नी सं सं गा रे सा   नी सं सं गा रे सा
जो मैं जानती   कि मन खुद बैरी होय   हर नगर ढिंढोरा पीटती कहती   प्रीत न करियो कोई   प्रीत न करियो कोई

इस गाने के राग व स्वरों की जानकारी सी आर जी (रीफ्रैक्टरी) के सहायक महाप्रबंधक श्री रविदास एस गोने और नोटेशन विज्ञान इंजीनियरिंग कालेज की छात्रा सुश्री वी नंदिता ने दिया है।

मान बहादुर सिंह की कविता: सृजन के रंग

- श्री सुरेश चंद्र शर्मा -

जन जीवन का यथार्थ चित्रण करने वाले प्रखर जनवादी कवि मान बहादुर सिंह निराला, मुक्तिबोध, धूमिल, त्रिलोचन, शमसेर और केदारनाथ अग्रवाल जैसे कवियों की श्रृंखला के कवि थे। इनका जन्म सन् 1938 में विजय दशमी के दिन सुल्तानपुर जनपद के कादीपुर तहसील के अंतर्गत आने वाले गाँव बरुवारीपुर के एक संभ्रांत क्षत्रिय परिवार में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गाँव के ही पाठशाला में संपन्न हुई। मिडिल स्कूल से लेकर इंटरमीडियट तक की शिक्षा कादीपुर के नेशनल इंटर कालेज में संपन्न हुई। उन्होंने बी.ए. एवं एम.ए. (अंग्रेजी) की डिग्री इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। इलाहाबाद में शिक्षा ग्रहण करते समय इनके तरुण मन पर वहाँ के साहित्यिक वातावरण ने प्रभाव डाला। कवि सम्मेलन में जाना एवं साहित्यकारों से मिलना इनकी दिनचर्या का अंग वन गया। एम.ए. करने के वाद 1966 में आपकी नियुक्ति सुल्तानपुर के बेलहरी जनता इंटर कालेज में अंग्रेजी प्रवक्ता के पद पर हो गई। उसी पद पर 25 वर्ष तक कार्य करते हुए जुलाई 1988 में आप उसी इंटर कालेज में प्रधानाचार्य बने और 24 जुलाई 1997 (मृत्यु पर्यन्त) तक सेवारत रहे।

अकबर इलाहाबादी दुश्मन का सामना करने के लिये तोप नहीं, अखबार निकालने पर बल देते हैं। लगभग उसी से मिलती-जुलती विचारधारा मान बहादुर सिंह की भी है। वे सामाजिक लड़ाई जीत लेने के लिये मजदूरों और दलितों को ललकारते हैं। मजदूरों के जब तक छेनी-हथौड़ी वाले हाथ संगठित नहीं होंगे, शोषक वर्ग तुम्हारा शोषण करता ही रहेगा।

काव्य सृजन के भाव विश्वविद्यालयीन शिक्षा के मध्य ही जागृत हुए और आप निरन्तर सृजनरत रहे। नवें दशक की पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से छपने वाली उनकी कविताएँ साहित्य में हलचल पैदा करती रहीं। हिंदी साहित्य की सेवा करने वाले कवियों में सुल्तानपुर के प्रमुख जनवादी कवि मान बहादुर सिंह का अपना स्थान है। उन्होंने खरी-खरी कहने वाली परंपरा का आजीवन निर्वहन किया। एक ग्रामीण को गुलाब की सुगंध से क्या तात्पर्य है? चैत्र माह में पकने वाली बालियाँ, जिनमें समय गुजारता, वह श्रमजीवी जीवन को आगे बढ़ाता है। मान बहादुर सिंह को आज की पाश्चात्य संस्कृति पसंद नहीं है। उन्हें ग्राम्य जीवन की संस्कृति ही पसंद है। उनके पिकनिक और क्लब, खेत खलिहान हैं। उनके काव्य का नायक हलवाही करने वाले मजदूर मटरू, कर्मू, रामफल, बेरतंती सूरी जैसे दलित लोग हैं, जिनके बीच कवि की कविता प्रतिवाद करती है। परकीया नहीं, स्वकीया ही तो उनकी जीवन संगिनी है। श्रम ही उनके मनोरंजन के सह-साधन हैं। ये श्रमशील जीवन साथी के दुख से दुखी और सुख से सुखी होते हैं। दांपत्य जीवन में ग्रामीण विवक्षताएँ और श्रमजीवी जीवन में आने वाली यथार्थ कठिनाइयों का अपनी रचनाओं में विवेचन किया है। कवि ने स्वयं स्वीकर किया है कि कविता का जन्म आनंद और संपन्नता के मध्य नहीं होता, उसका जन्म अभाव, गरीबी, लाचारी, बेवसी के मध्य होता है,

‘मुझे नहीं मिली कविता मिठाई की तरह
दोस्त की बारात में,
मैं ही गया हूँ उसके पास
फटे हाल भूखा प्यासा
खेत से लौटा मजूर जैसे जाता है
टुकड़ा भर सूखी रोटी के पास।।’

मान बहादुर सिंह की कविता मजदूर, किसान, दलित, पीड़ित और शोषित की व्यथा-कथा का एक जीवंत दस्तावेज है। उनकी कविताएँ सामंती वर्ग और सफेदपोश को सामने से ललकारती प्रतिवाद करती हैं और उनकी साजिशों का पर्दाफाश करती हैं। मान बहादुर सिंह स्वयं मजदूरों, भुक्त भोगियों की वकालत करते उनके दाहिने खड़े दीखते हैं। रसराज कवि बिहारी के दोहों से भी अधिक काट और तेवर समाहित मान बहादुर सिंह की कविताएँ हमेशा जोखिम उठाने का कार्य करती

हैं। आज लघु कविताओं के दौर में मान बहादुर की कविताएँ लंबी हैं, जिनमें समस्याएँ भी हैं और उनका निदान भी। उनमें आत्मीय जीवन की जीवंतता है, श्रम है और एक-दूजे के लिए त्याग और समर्पण भी। प्रिय-भक्ति और श्रम साधना साथ-साथ चलते हैं। प्रकृति, ग्रामीण, गरीबी, रूढ़िवादिता, दु:ख, सुख विवशता, मजबूरी, वफादारी, भूख-प्यास, नारी श्रम, आशा-निराशा से भरी कविताओं में मानव जीवन मुखरित हुआ है।

मान बहादुर सिंह मार्क्सवादी विचार धारा के कवि हैं। उनकी निगाहों में सर्वत्र फैला भ्रष्टाचार, लूट, घोटाले, शोषण, अत्याचार का दृश्य समाया है। उनका मानना है कि अगर पूरी दुनिया में मार्क्सवादी (मजदूर एकता) विचारधारा स्थापित हो जाए तो यह भ्रष्टाचार, लूट का खेल बंद हो जाएगा। कविता को वे धारदार हथियार मानते हैं कि उसी से भ्रष्टचार, लूट और अन्याय का सफाया किया जा सकता है। इसीलिए उन्होंने संघर्ष को प्रमुखता से स्वीकारा है,

'निश्चित उगेगा संभावित सूर्य,
उस सुबह में जिसके लिए
अंधेरी जिंदगी से मैं गया हूँ,
रोशन कविता के पास।।'

प्रखर जनवादी कवि मान बहादुर सिंह दलित, शोषित निम्नवर्ग के हमदर्द थे। उन्होंने भूख, मजबूरी, गरीबी, अन्याय, अत्याचार को देखा ही नहीं, झेला भी था। वे गरीबों के सच्चे हिमायती थे। उन्होंने सत्तासीन, राजनीतिज्ञों को अपने विचारों से अवगत कराने के लिए एक निबंध में लिखा है, 'भूख, बेकारी, इज्जत की हिफाजत और तालीम जैसी अनेक जरूरी बातें, जिन पर कोई सार्थक पहल नहीं हो रही है, जाति, संप्रदाय और बाहुबल के आधार पर सत्ता पर कब्जा जमाने वालों से उम्मीद नहीं करनी चाहिए। आज जरूरत है ऐसी सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था की, जो सब को रोटी, कपड़ा, मकान, न्याय और रोजी दिला सके।' सामाजिक व्यवस्था और जनजीवन को देखकर कवि का हृदय टूट जाता है। गरीबों की पीड़ा कवि-हृदय से फूट ही पड़ी। 'दुनिया का दर्द' शीर्षक से कवि की रचना विचारणीय है,

'तुम्हारे पास मेरे दर्द के अंदाज नहीं हैं।
एहसास है, पर कहने के अल्फाज नहीं हैं।
वह दर्द की दुनिया, मगर दुनिया का दर्द है।
गरमा रहे मौसम में हवा अब भी शर्द है।'

मान बहादुर सिंह के घनिष्ठ मित्र एवं चर्चित कहानीकार चित्रेश जी ने उनकी काव्य कला पर प्रकाश डालते हुए कहा है, 'मान बहादुर सिंह की रचनाओं में कलापक्ष जितना सशक्त है, उतना ही भाव पक्ष भी। जहाँ दलितों के प्रति सहानुभूति है, वहीं सामंती आभिजात्य वर्ग के प्रति रोष। संघर्षशील जीवन के साथ सड़ी-गली सामाजिक मान्यताओं के प्रति बगावत भी पायी जाती है। सूचनात्मक शब्दों में यही कहना उपयुक्त है कि उनकी कविताएँ दलित, शोषित, दीन-हीन, मेहनतकश मजदूरों की व्यथा-कथा का जीवंत दस्तावेज हैं।' मान बहादुर सिंह का कथ्य बहुत ही धारदार है। अपनी बात को बड़ी ही सहजता के साथ व्यंग्य की चाशनी में डुबो कर कहने में उन्हें कुशलता प्राप्त है। एक उदाहरण इस कथन की पुष्टि के लिये पर्याप्त है। 'ठाकुर मुस्कुराये, जैसे गेहुँअन साँप रेंग जाए।' अकबर इलाहाबादी दुश्मन का सामना करने के लिये तोप नहीं, अखबार निकालने पर बल देते हैं। लगभग उसी से मिलती-जुलती विचारधारा मान बहादुर सिंह की भी है। वे सामाजिक लड़ाई जीत लेने के लिये मजदूरों और दलितों को ललकारते हैं। मजदूरों के जब तक छेनी-हथौड़ी वाले हाथ संगठित नहीं होंगे, शोषक वर्ग तुम्हारा शोषण करता ही रहेगा। कवि को पूरी उम्मीद है कि अब धरती पर मजदूरों की विजय होने वाली है। सामंती गढ़ टूटने वाले हैं। कवि की आग उगलती कविता देखें, जो मिसाइलों का काम करती है,

'जागो दुनिया के तमाम अग्नि बेटों? हत्यारे -
अंधेरे के दुर्ग में अपने मुर्गो को संगठित कर रहे हैं कि
वे बांग न दें तुम्हारी सुबह न हो,
उन्हें पता नहीं, तुम खुद आग हो जलो
और यह साबित कर दो।'

मान बहादुर सिंह के मन में गाँव का प्राकृतिक सौंदर्य पूरी तरह समाया है। गाँव के पास की प्रकृति उनको सदैव प्रेरित करती है। आम, महुआ, नीम, पीपल, बरगद आदि के वृक्ष कवि की कविता के मुख्य आधार हैं। जेठ महीने की भीषण गर्मी से व्याकुल पशु-पक्षी की पीड़ा कवि के मन में उथल-पुथल मचाती है। नीम की घनी और शीतल छाँव में गर्मी से त्रस्त कौवे का यथार्थ चित्र तथा जेठ महीने की तपन युक्त दोपहरी का हृदयस्पर्शी चित्र इन पंक्तियों में देखा जा सकता है-

'सामने नीम के टेढ़े पेड़ ने
अपनी बेपनाह छाँह को
धरती पर जाल की तरह फैला दिया था,
और छितरा दी थी धूप की कनियाँ
उसकी डाल पर बैठा कौवा हाँफ रहा था,
चारों तरफ जेठ दुपहरी की मुर्दानी शांति
चिता जैसी दहक रही थी
कभी किसी कुएँ पर घिर्री की चीं.....चूँ।'

सुख की अपेक्षा कवि को दु:ख अधिक प्रिय है। दु:ख में ही सगे-संबंधी, मित्र, पत्नी आदि सभी की पहचान हो जाती है। दु:ख ही कवि का सच्चा साथी है। सुख में मनुष्य इतना डूब जाता है कि अपने अतिरिक्त दूसरे के बारे में सोचता ही नहीं। दु:ख में मनुष्य की दृष्टि व्यापक हो जाती है। कबीर ने ठीक ही कहा है कि 'दुखिया सब संसार है।' कबीर की काव्य चेतना से कविवर मान बहादुर सिंह अत्यधिक प्रभावित हैं। दीन-दु:खियों, शोषितों और मजदूरों के साथ ही कवि का गहरा जुड़ाव है। यह जुड़ाव ही कवि की कविता में सर्वत्र देखा जा सकता है। कवि की कविताएँ दीन-हीन, गरीबों की पीड़ा का यथार्थ चित्रांकन करते हुए सृजनात्मक संसार बनाने का प्रयास करती हैं। दु:ख और सुख की सत्ता का कवि ने इस प्रकार चित्रण किया है,

'एक सुंदर सौम्य दु:ख, समय की हलचलों से दूर
तन्हा खड़ा, सुख के आंसुओं का मौन आचमन करता हुआ
एक विस्मृत कोमल गंध डव्वे में बसी है,
जिसमें कभी महफिल के घुंघरू महकते हैं
कभी रेशमी घूंघट की हिना
कभी मलमल की कुर्ती से गोरी
छातियों की बास छलक पड़ती है-
एक खूबसूरत उदासी सारंगी स्वर की पूर्णमासी में
गजल की प्यारी पंक्ति सी,
मीठे-मीठे तड़पती करवटें बदलती हैं।'

मान बहादुर सिंह की कविता का मूल स्वर श्रमिक वर्ग के यथार्थ की ओर अधिक दिखाई देता है। अथक परिश्रम के बावजूद उसे भर पेट भोजन नहीं मिलता, उसके श्रम पर मुनाफा कमाने वाले पूँजीपतियों की विकृत मनोवृत्ति का चित्रण भी अपनी कविता में उन्होंने किया है। बरसों पुरानी मान्यताओं को उखाड़कर उन्होंने श्रमिकों के प्रति एक चेतना जगायी है। मान बहादुर सिंह ने आजादी के पूर्व और बाद के सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ को देखा है। उनकी राजनीतिक चेतना, मार्क्सवादी दर्शन के अध्ययन, चिंतन और भारत की जनता के दु:ख-दर्द आदि का अनुभव करके प्राप्त की हुई है। उनकी राजनीतिक चेतना यथार्थ का स्वरूप लिए हुए है। वे मानते हैं कि राजनीति ऐसी होनी चाहिए, जो किसानों, मजदूरों और श्रमशील जनता को समाज में अधिकार दिला सके। मान बहादुर सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध कार्य करने वाले डॉ रामप्यारे प्रजापति ने ठीक ही कहा है, 'प्रखर जनवादी कवि मान बहादुर सिंह की जन-पक्षधरता अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। किसानी संवेदना के वे प्रमुख कवि थे। प्रकृति, प्रेम, किसान, मजदूर, शोषित नर-नारी ये सब मान बहादुर सिंह के काव्य के व्यापक सरोकार हैं।

मान बहादुर सिंह की कविताएँ सर्वत्र ऐसा सृजनात्मक संसार बनाने का प्रयास करती हैं, जहाँ बैर, कटुता, अन्याय, भ्रष्टाचार न हो और जहाँ सुख-शांति, अपनापन और प्रेम हो।

'मुझे पूरा भरोसा है कविता पर।
कविता ही रचेगी फिर से कोई देश।
कोई ईश्वर, जिसका न होगा कोई देश।
कोई जाति, सारी सृष्टि कहाँ छँहाये।'

मान बहादुर सिंह सूक्ष्म और स्वस्थ संवेदनाओं के कवि हैं। वे प्रखर जनवादी कवियों में प्रमुख है, जिन्होंने समय के साथ-साथ अपनी कविताओं के अपने ही बनाये हुए ढांचों को अतिक्रांत कर शिल्प के नये-नये प्रयोग किये हैं। उनकी कविताओं में अभिव्यक्ति के कई ऐसे नये-नये ढंग हैं, जो उनके सूक्ष्म और परिस्वीकृत सौंदर्यबोध के प्रतीक हैं। मान बहादुर सिंह के काव्य का गहन अनुशीलन करने पर यह ज्ञात होता है कि उनकी काव्य-नायिका आधुनिक नारी है, फिर भी वह पुरुषों से छल ली जाती है। जब उसके साथ अन्याय और दुराचार होता है तो सहनायिका पूछती है कि 'नारी जैसी सृजनात्मक सोच पुरुष क्यों नहीं रखता?' वैसे यह सवाल कवि संपूर्ण समाज से पूछता है,

'पर महंगीना जो खून औरत में-
दूध की तरह दौड़ता है।
मर्दों में पेशाब बन,
क्यों बह जाता है।'

मान बहादुर सिंह की पुण्यतिथि **24** जुलाई है। आज उन्हें संसार छोड़े **18** वर्ष हो गये। उनकी रचनायें ठेठ, देहाती और अनगढ़ अंदाज में हिंदी कविता के महानगरीय आभिजात्य के इन्हीं नये घरानों के लिये चुनौती हैं। उनमें एक जानी-पहचानी आंचलिक जीवंतता और सृजनशीलता का टटकापन है। मान बहादुर की रचनाओं में नये समाज परिवर्तन की क्षमताएँ हैं। जब-जब जनजीवन पर अन्याय का पहाड़ टूटेगा, तब-तब मान बहादुर सिंह अपनी इन्हीं कविताओं के लिए याद किये जाएँगे।

- ग्राम मिश्रौली
पत्रालय लंभुआ
जिला सुल्तानपुर-**222302**

चलो न पापा!

- श्रीमती लक्ष्मी रानी लाल -

सारी रात की मूसलाधार बारिश अब तक रिमझिम फुहारों में तबदील हो चुकी थी। श्यामल जी खिड़की के पास कब तक खड़े रहे, इसका उन्हें भान न था। नि:शब्द धुंधलाती बरसती आँखों को चुपके से उन्होंने पोंछा। खिड़की के पास खड़े-खड़े उनके पाँवों में ऐंठन सी होने लगी थी।

'पापा....चाय! आप कब जाग गए?' सुधीर ने कप पकड़ाते हुए कहा। 'बस... अभी... अभी नींद टूटी है।' बेटे से आँखें चुराते हुए कहा। सुधीर के जाने के बाद वे बहुत देर तक सोचते रहे। क्या उनका सुधीर बदल गया था? इस जमाने की विषाक्त हवा उनके घर भी घुस आई है? पत्नी की मृत्यु के बाद वे इस एकाकी जीवन से घबरा उठे थे। बहू मीना चाय नाश्ता पकड़ा जाती। खाना परोसकर खिला देती। बच्चों को स्कूल, होमवर्क तथा ट्यूशन से फुर्सत नहीं कि दादाजी के एकाकीपन को दूर कर सके। बेटे के कमरे से हँसने-बोलने की आवाजें आती रहतीं, जिससे यह एहसास होता कि उनका एक भरा पूरा संसार है।

जब भी वे अपने एकाकीपन से घबरा उठते, तभी स्मृति के वातायन से झांकता प्रिया का मासूम सा चेहरा याद आ जाता, जो प्राय: अपने पापा के घायल हृदय पर स्नेहल लेप लगा जाती। अपने पापा के रिसते नासूर को हर क्षण वह महसूस करती। कितनी बार उसने कहा था, 'चलो न पापा, हमारे साथ रहना! बेटी और बेटे में क्या फर्क? मैं क्या आपकी आत्मजा नहीं?' अपने पापा के मन के दर्द को कम करने के लिए वह रोज उन्हें फोन करती। हर बार एक ही अनुरोध 'चलो न पापा!'

अचानक उनकी तंद्रा टूटी तो उन्होंने प्रश्नसूचक आँखों से सुधीर की ओर देखा। 'पापा, आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ', झिझकते हुए सुधीर ने कहा। 'हाँ... हाँ... बोलो बेटे।' मन की उद्विग्नता छिपाकर उन्होंने कहा। 'पापा, मैं महसूस करता हूँ कि आप अकेलेपन से ऊब चुके हैं। हम सभी अपनी दिनचर्या में व्यस्त हैं। आपका एकाकीपन दूर नहीं कर पाते हैं।' सुधीर ने झिझकते हुए कहा।

'क्या करोगे, उम्र के इस मोड़ पर सबों के साथ ऐसा ही होता है। देखो न इन्हीं दिनों के अकेलेपन को मिटाने के लिए तो ये धार्मिक ग्रंथ हैं, डूब जाओ, इनमें फिर बाहरी दुनिया की कोई चिंता न रह जाएगी।' सिरहाने रखी 'गीता' उठाते हुए श्यामल जी ने कहा। सुधीर अपनी मंशा प्रकट करने में असमर्थ हो उठा। वह बेहद असमंजस में पड़ गया। तभी उसकी दृष्टि परदे की ओट से संकेत करती अपनी पत्नी पर पड़ गयी। श्यामल जी की दृष्टि से कुछ छिपा न रहा। 'अरे बहू, तुम वहाँ क्यों खड़ी हो? अंदर आ जाओ।' आत्मीयता भरे स्वर में उन्होंने कहा। मीना अंदर आकर चुपचाप खड़ी हो गई। मीना कुछ पल चुपचाप अपनी साड़ी के एक छोर को मरोड़ती खड़ी रही।

'क्या बात है कुछ बोलो तो। मीना तुम्हीं मदद करो सुधीर की। वह कुछ बोलना चाहता है, पर बोल नहीं पा रहा।' 'पापा... असल में बच्चों के बड़े होने से हमारी समस्या बढ़ गई है। इतने छोटे से फ्लैट में एक साथ सबों का रहना अब संभव नहीं। वृद्धाश्रम ही एक ऐसी जगह है, जहाँ हमउम्र के लोगों के बीच आपका मन भी लग जाएगा।' एक सांस में मीना सब कुछ कह गई। सुधीर अपने पाँव को स्थिर करते हुए अंगूठे से जमीन कुरेदने लगा।

'धत् तेरी की! इतनी छोटी सी बात! खोदा पहाड़ निकली चुहिया! तुमलोग चिंता न करो, मैं चला जाऊँगा।' श्यामल जी ने बहुत सहजता से कहा। पति-पत्नी अवाक एक-दूसरे को देखते रहे। उन्हें क्या पता कि उनकी पुत्री स्नेहा ने उनकी योजना से उन्हें अवगत करा दिया था। अपने दादाजी से लिपट कर वह बहुत रोई थी। इसलिए बहू का फरमान सुनकर न बिजली कड़की और न उनपर वज्रपात ही हुआ। स्नेहा के जाने के बाद ही उनपर वज्रपात हो गया था। सारी रात आँखें बरसती रही थीं। अब तो मन पथरा गया था।

कुछ रुककर उन्होंने वातावरण की बोझिलता हटाते हुए कहा। 'वृद्धाश्रम जाना तो हम वृद्धों के लिए अब गंगा-स्नान की तरह हो गया है। अधिकांश लोग अब जब डुबकियाँ लगा ही रहे हैं तो एक डुबकी मैं भी लगा लूँ।' हंसते हुए उन्होंने कहा। अश्रुपूरित आँखों से सुधीर वहाँ से खिसक गया। तभी सिसकियों की आवाज आई। सबने देखा कि एक कोने में पाँच वर्षीय स्नेहा सुबकियाँ ले रही थी। दादाजी ने अपनी लाड़ली पोती को उठाकर सीने से लगा लिया।

'दादाजी... मैं भी आपके साथ चलूँगी। यहाँ मुझे प्यार कौन करेगा? मेरा होम वर्क कौन कराएगा? बस स्टैंड से लाने-छोड़ने कौन जाएगा? मुझे अपने साथ ले चलो।' स्नेहा जोर जोर से रोने लगी। 'तुम्हारे मम्मी-पापा सब करायेंगे, चिंता न करो।' श्यामल जी ने समझाते हुए कहा। 'मम्मी-पापा गंदे हैं... मैं उनसे बात नहीं करूँगी।' स्नेहा ने क्रोधित होकर कहा। 'नहीं बेटा, अच्छे बच्चे ऐसा नहीं कहते हैं, दोनों बहुत अच्छे हैं।' श्यामल जी ने उसे चुप कराते हुए कहा।

रात तक स्नेहा को ज्वर ने आ घेरा। अपराध बोध से ग्रसित सुधीर तथा मीना उसके सिरहाने बैठे रहे। मीना लगातार बर्फ की पट्टियाँ बदलती रही। सुबह होने पर ज्वर कुछ कम

हुआ। स्नेहा हँसना-बोलना जैसे भूल गई हो। श्यामल जी ने अपने सामान बांध लिए। वे स्नेहा की दशा देखकर बहुत दु:खी थे। उनके जाने में अभी दो दिनों की देर थी। सभी स्नेहा के जल्द स्वस्थ हो जाने की कामना कर रहे थे। घर के सामने अचानक एक टैक्सी आकर रुकी। श्यामल जी ने चश्मा पहनकर खिड़की से झांका। 'अरे यह तो प्रिया है, अपने पति तथा दोनों बच्चों के साथ। अचानक ये लोग यहाँ कैसे?' श्यामल जी मन ही मन बोल उठे। उन्होंने शीघ्रता से अपनी अटैची तथा बैग को पलंग के नीचे छिपा दिया। बरामदे में श्यामल जी अभी पहुँचे ही थे कि प्रिया उनके चरण स्पर्श कर उनके सीने से लग गई। 'कैसे हो पापा?' प्रिया ने पूछा।

श्यामल जी के आहत मन पर मानो स्नेह लेप लग गई हो। मन के अंदर कुछ पिघलने सा लगा, जिसे आँखों की राह बाहर जाने से उन्होंने रोक लिया। यह मन भी अजीब है, कितने वार सह लेता है, पर प्यार का एक हल्का स्पर्श भी सहन नहीं कर पाता। मन की सुप्त भावनाएँ बाहर आने के लिए हलचल मचा देती है। आँखें बेचारी उनका रास्ता आखिर कवतक रोक सकती हैं? ऐसे समय में चश्मा कुछ सहायक होता है।

श्यामल जी ने अपने संघर्ष के दिन एक छोटे से कमरे के घर में बिताए हैं। दोनों बच्चों को पलंग पर सुलाकर पति-पत्नी फर्श पर बिस्तर बिछाकर सो जाते थे। उस छोटे से कमरे में उन्हें किसी तकलीफ का अनुभव नहीं हुआ। जगह मन में होती है, घर में नहीं। अपने ही घर में उन्होंने दादाजी का सम्मान देखा है। सभी भाई-वहन उन्हें घेरे रहते थे। घर के संरक्षक, सलाहकार सब कुछ वे ही थे। पिताजी उनकी सलाह के बिना कुछ नहीं करते थे। घर में एक अनुशासन था। अपने ही जन्मदाता को कृतघ्नों की तरह बुढ़ापे में घर से बाहर करने का यह कौन-सा नया फैशन चल पड़ा है? आज लोगों को ईश्वर के कोप का भी भय नहीं?

शाम को टहलने के पश्चात जब श्यामल जी अपने कमरे में गए तो वे अवाक् हो गए। बैग तथा अटैची खाली करके सारे साामान यथावत रखे हुए थे। उनकी समझ में आ गया कि प्रिया से कड़वी सच्चाई छिपाने के उद्देश्य से यह सब किया गया है। उन्हें यह देखकर भी बेहद आश्चर्य हुआ कि आज सुधीर तथा मीना की आँखों में पश्चात्ताप या शर्मिंदगी की झलक न थी। वे पहले की तरह बिल्कुल सामान्य थे। खाने की मेज पर अचानक प्रिया ने कहा, 'भैया! पापा की सेवा आपने वहुत कर ली। अव हमें यह मौका दें। पापा को हमलोग अपने साथ ले जाना चाहते हैं।' अपनी प्लेट में सब्जी डालते हुए उसके पति ने कहा, 'हाँ भई, हमें भी यह अवसर मिलना चाहिए, इस अकेलेपन से हम लोग ऊव गए हैं। बच्चों को भी वहुत अच्छा लगेगा। हमेशा जिद करते हैं कि नाना को यहाँ लाओ।'

सुधीर तथा मीना चौंक गए। दोनों के मन में यह बात उठी कि कहीं वृद्धाश्रम भेजने वाली बात इन्हें मालूम तो नहीं हो गई। उनके कुछ बोलने से पहले ही श्यामल जी बोल उठे, 'कहीं नहीं जाना मुझे, क्यों परेशान होते हो तुम लोग?' 'मैं भी तो आपका बेटा हूँ। भैया ने अपना दायित्व निभाया, अब मैं भी निभा लूँ। क्यों पापा मैं भी तो आपका बेटा हूँ। दामाद भी तो बेटा ही होता है, तभी तो आपको मैं 'पापा' कहता हूँ। आपका बेटा हूँ या नहीं, बोलिए पापा?' श्यामल के हाथ थामकर प्रिया के पति सुजय ने कहा।

'इसमें क्या शक है सुधीर एवं सुजय मेरे दो बेटे हैं', सुजय की पीठ पर हाथ रखकर श्यामल जी ने कहा। 'चलो न पापा! हम आपको लेने आए हैं, भैया आप अनुमति तो देंगे?' प्रिया बच्चों के समान मचल उठी। 'मैं अनुमति देने वाला कौन हूँ? ये तुम्हारे भी पापा हैं।' सहज होते हुए सुधीर ने कहा। 'मैं भी कुछ बोल सकती हूँ, क्योंकि ये मेरे भी पापा हैं', हँसती हुई मीना ने कहा। अब तक उसका हृदय भी परिस्थितिवश पिघल गया था।

'हाँ भई, इसे भी अपना मत प्रकट करने का अधिकार है।' श्यामल जी ने कहा। 'पापा, जीवन में मैंने बहुत सारी गलतियाँ की हैं, आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे। एक अनुरोध तो मैं भी कर सकती हूँ? कृपया आप स्नेहा की छुट्टियाँ खत्म होने तक अवश्य वापस आ जाइएगा। जैसे स्नेहा आपके विना नहीं रह सकती है, वैसे ही हम दोनों भी। प्लीज पापा मेरे अनुरोध को नहीं टालेंगे।' अवरुद्ध कंठ से मीना ने कहा।

श्यामल जी ने अवाक् होकर मीना को देखा। बैग तथा अटैची खाली करके सारे समान यथास्थान रखने की बात याद आई। उसके पश्चात्ताप एवं ग्लानि को वे महसूस कर रहे थे। 'ठीक है, मैं सुजय तथा प्रिया के घर अगर जाऊँगा भी तो महीने भर में लौट आऊँगा। मैं भी तो तुम लोगों के विना अब रह नहीं सकता।' मीना के सर पर हाथ रखते हुए श्यामल जी ने कहा। 'मम्मी हम लोग जल्दी लौट आएँगे, स्कूल खुलने से पहले।' स्नेहा ने खुशी से उछलते हुए कहा। 'तुम?' एक साथ सुधीर तथा मीना ने आश्चर्य से पूछा। 'हाँ! जहाँ दादाजी जायेंगे, वहीं मैं भी। दादाजी मंजूर है न?' श्यामल जी से लिपटते हुए स्नेहा ने कहा। 'मैं अगर जाऊँगा...' श्यामल जी ने इतना ही कहा था कि उन्हें रोकते हुए प्रिया ने कहा, 'अगर-मगर नहीं, चलो न पापा!' श्यामल जी के चेहरे पर आत्मतुष्टि के भाव थे। उनकी आँखों में एक चमक थी। बेटी के घर वे जा अवश्य रहे थे, पर लौटने का आश्वासन देकर।

- **24**, एम आई जी
आदित्यपुर-**2**, जमशेदपुर-**831013**
मोवाइल: **+91 9334826858, 9955997656**

रोजर उर्फ कोठी वाला कुत्ता

- श्री अशोक गौतम -

अपने मुहल्ले में कोठी वालों को छोड़ मुहल्ले के सारे लोग शाम होते ही एक दूसरे के घर शान से लहसुन-प्याज, नमक, सलाद के लिए हरी मिर्च, तड़के के लिए टमाटर आदि माँगने निकल पड़ते हैं। जिस दिन हम एक दूसरे पर प्याज, टमाटर, हरी मिर्च के लिए निर्भर रहना छोड़ देंगे, उस दिन हम भी अमीरों की तरह अकेले हो जाएँगे।

इस कोठी की भी अजीब कहानी है। कई सालों तक इस कोठी में कोई न बसा। पर शुक्र खुदा का, अब की बार कोठी बस गई। कोठी बसी तो हम मुहल्ले वालों को अच्छा लगा कि 'चलो कोई कोठी वाला' हमारे मुहल्ले में भी है। अब हम भी अपने मुहल्ले का पता देते वक्त कोठी का ही पता दिया करेंगे।

एक दिन कोठी वाले कहीं से कुत्ता ले आए। कुत्ता भी ऐसा कि पैदा हुआ ही हमारे जवान कुत्तों जैसा! जरूर बाहर देश का ही होगा! हमारे यहाँ का तो हर जीव पूरा जवान हो जाने पर भी बच्चों-सा अंगूठा चूसता ही दिखता है। तब पहली बार अपने और कोठी वालों के बीच की कुछ दूरी का पता चला।

एक दिन मौका मिलते ही मैंने कोठी के मालिक से विनम्र निवेदन करते हुए कहा, 'साहब! जिस तरह से हमारे देश के एम.पी. एक-एक गाँव गोद ले रहे हैं, आप भी देश हित में मुहल्ले का कोई कुत्ता गोद ले लेते तो... कम से कम हमारे मुहल्ले के एक कुत्ते का तो भविष्य सुधर-सँवर जाता,' तो कोठी के मालिक ने मुझसे अधिक मेरी सोच पर गुस्सा होते कहा, 'हम तुम्हारे मुहल्ले में रहने आ गए, इसे ही गनीमत समझो। वरना इस मुहल्ले को जानता ही कौन था? रही बात किसी मुहल्ले के कुत्ते को गोद लेने की। हम कोई एम.पी.-वैंपी तो हैं नहीं, और...हमें कौन-से चुनाव लड़ने हैं?' अब आगे मेरी और हिम्मत न हुई कि मैं कुछ और कह पाता।

कोठी का कुत्ता था कि बाहर अपने नौकर के बिना आता ही न था। कोठी वालों को नौकरों की आदत तो समझ आती थी, पर कुत्ता भी नौकर का आदी होगा, सोचा न था।

जब कोठी वाला कुत्ता चारदीवारी के भीतर अकेला बोर होता तो रोने लगता। जैसे भौंकना उसे आता ही न था। पर उसकी अकड़ कि वह जब मार्निंग वॉक पर अपने नौकर के साथ होता तो हमारे मुहल्ले के कुत्तों की ओर देखना तो छोड़िए, हमारी ओर भी न देखता। तब लगता कि चाहे लाख कोशिश कर लो, इस देश में सब कुछ आ सकता है, पर समाजवाद सतिजुग में भी नहीं आ सकता। आदमी की तो छोड़िए, कुत्तों में भी छोटे-बड़े का फर्क तो यहाँ हर युग में रहेगा ही।

एक रोज मेरे मुहल्ले के एक समझदार कुत्ते ने मुझसे आग्रह किया, 'मित्र! इस कोठी के कुत्ते को बंदीगृह से बाहर नहीं निकाल सकते क्या?'

'क्यों, इसके ठाठ से जलन हो रही है? एक हाई सोसाइटी के कुत्ते को क्या तुम लोग अपनी तरह का सड़क छाप बनाना चाहते हो? अरे, शर्म करो शर्म! खुद ऊपर नहीं उठ सकते तो कम से कम दूसरों को तो अपनी लेवल पर मत लाओ!' मैंने कुत्ते को फटकारा। तो उसने सानुनय कहा, 'नहीं मित्र! किसी को नीचे लाने की बात नहीं। आदमियों की तरह हममें ईर्ष्या भाव नहीं होता। हम आपस में लड़ते जरूर हैं, पर रहते इकट्ठे ही हैं। असल में हम इस कुत्ते को अपने रस्मों-रिवाज सिखाना चाहते हैं। हम इसे इसकी संस्कृति से जोड़ना चाहते हैं।' 'तो...?' 'अगर तुम इसे इसके समाज से जोड़ने में हमारी सहायता कर दो तो हम तुम्हारा यह एहसान जिंदगी भर नहीं भूलेंगे।'

और एक दिन मैंने देखा कि वह कोठी वाला कुत्ता बिल्कुल अकेले मेरे घर के सामने खड़ा चार दिन की बासी पड़ी उस रोटी को जिसे मुहल्ले के कुत्ते छोड़ आगे हो लिए थे, बड़े शौक से खा रहा है। उसे शान से वह रोटी खाते देखा तो मुझे चक्कर आ गया। हद है यार! जिस रोटी को मुहल्ले तक के कुत्तों ने नकार दिया, उसी रोटी को ये कोठी का कुत्ता! आखिर रहा न गया तो मैंने कोठी वाले कुत्ते से अपनी जिज्ञासा को शांत करने हेतु पूछा, 'ये क्या हो रहा है मेरे भाई?' 'फार यूअर काइंड इंफर्मेशन, आई हैव नो ब्रदर, नो सिस्टर! नो फादर, नो मदर, माई नेम इज रोज़र! देखते नहीं, मैं स्वीट सिक्स्टी फाइव का आनंद ले रहा हूँ', कह चटकारे लेता वह उस बासी रोटी को खाता रहा। फिर भी मुझसे नहीं रहा गया 'पर यार! इस रोटी को तो मुहल्ले के कुत्तों तक...'

'यही तो पूँजीवाद और समाजवाद में बेसिक अंतर है। समाजवादी जिसे बेकार समझते हैं, वह पूँजीवादियों के लिए अमृत होता है अमृत।' 'पर...भाई...' 'अब क्या बे...'

'मुहल्ले के कुत्ते कह रहे थे कि तुम...भौंकने की जगह रोते हो। बीच-बीच में कोठी से निकलकर उनसे मिल लिया करो तो कम से कम अपनी जमीन से तो जुड़े रहोगे!'

'देखो! मैं ठहरा कोठीवादी कुत्ता! गलीवादियों से मुझे क्या लेना देना... मेरे भौंकने के बदले रोने से जब पूँजीवादियों को ही शिकायत नहीं है तो तुम्हें क्यों है?' मेरी बोलती बंद हो गई।

- गौतम निवास
अप्पर सेरी रोड, सोलन-173212
हिमाचल प्रदेश

तकनीकी सेवा विभाग

90 के दशक के दौरान राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड की अनुरक्षण कार्यनीति की योजना निरोधक अनुरक्षण आधारित थी। उस समय संयंत्र की सभी इकाइयों से प्रचालन आरंभ हो चुका था। इसी अनुरक्षण कार्यनीति के अनुरूप अभियंताओं द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदनों के निरीक्षण एवं उपस्कर निर्माताओं द्वारा अपने अनुरक्षण नियम-पुस्तकों में सुझाये गये कार्यों के आधार पर कार्य निर्धारित किये जाते थे। इस प्रणाली से कार्य की मात्रा बढ़ जाती थी, जिसके निष्पादन हेतु कुशल कामगार, अनुभवी पर्यवेक्षकों तथा उपस्कर के अधिक डाउनटाइम की आवश्यकता होती थी।

चूँकि राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड की मानवशक्ति भारत के अन्य इस्पात संयंत्रों की तुलना में बहुत ही कम थी तथा अधिकांश कर्मचारी कालेज एवं अन्य संस्थानों से डिग्री हासिल करते हुए संयंत्र में भर्ती हुए। अत: अनुरक्षण से संबंधित इन कार्यों का निष्पादन उनके लिए कठिन था। इसके अलावा संयंत्र में अन्य इस्पात संयंत्रों की तुलना में बहुत ही आधुनिक उपस्करों की स्थापना की गई थी, जिनपर कार्य करते हुए उपरोक्त निरोधक अनुरक्षण समयसीमा के अनुपालन हेतु कुशलता एवं विशेषज्ञता की आवश्यकता होती थी। कभी-कभी अनुभव की कमी के कारण अनुरक्षण के ठीक पश्चात उपस्कर का ब्रेकडाउन हो जाता था। इस प्रकार अनावश्यक अनुरक्षण के कारण ज्यादातर ब्रेकडाउन की समस्या उत्पन्न होने लगी थी। परिणामस्वरूप उपस्कर के ब्रेकडाउन का समय अधिक और उसकी उपलब्धता का समय कम हो जाता था।

वर्ष 1994 में संयंत्र में स्थिति के अनुकूल अनुरक्षण की पद्धति लागू की गई। इससे यंत्रों की सहायता से उपस्कर की कार्य-स्थिति के अनुश्रवण के माध्यम से अनुरक्षण के कार्य भार को कम करने, अर्थात वैज्ञानिक तौर पर उपस्कर की कार्य-स्थिति के मूल्यांकन में सहयोग मिला। इस प्रकार अनुरक्षण गतिविधियों की प्राथमिकता के निर्धारण में सुविधा हुई तथा अनावश्यक अनुरक्षण कार्यभार को भी कम किया गया। इसके अलावा मानवशक्ति, हिस्से-पुर्जे तथा मरम्मत के समय की योजना में भी सुविधा हुई। समयसीमा के अनुरूप अनुरक्षण के बजाय उपस्कर की वास्तविक कार्य-स्थिति के अनुरूप आवश्यकता के हिसाब से मरम्मत कार्य किया जाने लगा।

तकनीकी सेवा विभाग द्वारा संचालित प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं:

1. कन्वेयरों व क्रेनों का निरीक्षण
2. महत्वपूर्ण ड्राइवों के वाइब्रेशन का अनुश्रवण
3. शॉक पल्स अनुश्रवण (विभिन्न विभागों से बनाये गये एंटि-फ्रिक्शन बेयरिंग की स्थिति की जानकारी हेतु)
4. महत्वपूर्ण गेयरबॉक्सों का वेयर डेबरिस विश्लेषण (बाह्य अभिकरण द्वारा विश्लेषण)
5. थर्मोग्राफी
6. इंडस्ट्रियल एंडोस्कोपी
7. वॉल्वों का अल्ट्रासोनिक लीक डिटेक्शन
8. प्रमुख उपस्कर के ब्रेकडाउन तथा उसकी पुनरावृत्ति का अध्ययन
9. क्रेन, लिफ्ट, टैकिल, प्रेशर वेसल आदि के वस्तुगत निरीक्षण का संचालन
10. केंद्रीय अभिकरण द्वारा उपस्कर की स्थिति के अनुश्रवण हेतु यंत्र की अधिप्राप्ति
11. ट्राइबॉलजी अध्ययन (किसी उपस्कर के फास्ट वेयरिंग का अध्ययन)
12. महत्वपूर्ण उपस्कर के अनुरक्षण मानक
13. अनुरक्षण की लेखापरीक्षा
14. मासिक व वार्षिक अनुरक्षण निष्पादन संबंधी प्रतिवेदनों की तैयारी

प्रारंभ में विभिन्न उत्पादन विभागों के सभी महत्वपूर्ण क्रेनों व कन्वेयरों का आवधिक निरीक्षण किया जाता है तथा प्रतिवेदन आवश्यक सुधार हेतु संबद्ध विभाग को भेजा जाता है। क्रेनों के निरीक्षण में व्हील फ्लेंज की मोटाई का मापन तथा क्रेन में कोई खराबी, जो दृष्टिगोचर हो, शामिल हैं। इस्पात गलन शाला के

कुछ महत्वपूर्ण क्रेनों के मामले में वाइब्रेशन रीडिंग्स भी दर्ज किये जाते हैं। ऐसे ही बेल्ट, आइड्लर, पुल्ली आदि की कार्य-स्थिति की जानकारी हेतु कन्वेयरों का निरीक्षण किया जाता है तथा कुछ कन्वेयरों के लिए ड्राइव्स के वाइब्रेशन का भी अनुश्रवण किया जाता है।

केंद्रीय अभिकरण जैसे सीधे उत्पादन से जुड़े हुए अन्य विभागों में प्रयुक्त महत्वपूर्ण ड्राइवों को भी पहचाना गया। **1998** से वाइब्रेशन विश्लेषकों का उपयोग किया जा रहा है। इन विश्लेषकों की सहायता से उपस्कर का वाइब्रेशन सिग्नेचर प्राप्त किया जाता है। इन ड्राइवों का वाइब्रेशन विश्लेषकों के माध्यम से नियमित अनुश्रवण किया जाता है तथा सिग्नेचर दर्ज करके सुरक्षित रखा जाता है।

सॉफ्टवेअर के माध्यम से प्रारंभिक दशा में इन सिग्नेचरों का उपयोग करके त्रुटियों का विश्लेषण किया जाता है। तत्पश्चात संबद्ध विभागों द्वारा सुधारात्मक कार्रवाई की सिफारिश की जाती है। कंप्रेसर तथा ब्लोअर जैसे उच्चगति वाले उपस्कर की त्रुटियों के विश्लेषण हेतु मल्टी चैनल वाइब्रेशन विश्लेषकों का उपयोग किया जाता है। वाइब्रेशन संबंधी विश्लेषण से समस्याओं तथा उसके मूल कारणों को पहचानने में सुविधा होती है, जिससे भारी ब्रेकडाउनों की रोकथाम में सहायता मिलती है।

थर्मोग्राफी से हॉट स्पॉट को पहचाना जाता है। विद्युतीय पैनलों में संभावित त्रुटियों को पहचानने में उपस्कर की कार्य-स्थिति से संबंधित इस तकनीक का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, जिससे ब्रेकडाउन व फ्लेशओवर से बचा जा सकता है। विद्युतीय पैनलों के ढीले अवयवों/फैसनरों से हॉट स्पॉट्स उत्पन्न होते हैं। तत्पश्चात इलेक्ट्रिकल ब्रेकडाउन भी होती है। थर्मोग्राफी के उपयोग के माध्यम से तप्त धातु लैडलों, मिक्स्चर व कन्वर्टरों में रिफ्रैक्टरी वेयर आउट का अनुश्रवण किया जाता है। इससे न्यूनतम जोखिम सहित तप्त धातु वेसलों का कार्यकाल बढ़ाने में सहयोग मिलता है।

शॉक पल्स अनुश्रवण (एस पी एम) पद्धतियों से सही अंतराल पर बेयरिंग्स के पुन:लूब्रिकेशन एवं उनके कार्यकाल को बढ़ाने में सुविधा होती है।

इंडस्ट्रियल एंडोस्कोप के माध्यम से उपस्कर/असेंब्ली के अवयवों, जो दृष्टिगोचर न हों, का वस्तुगत निरीक्षण किया जा सकता है। उपस्कर को खोलकर उसका निरीक्षण किया जाता है। साथ ही उपस्कर के अवयवों, जो दृष्टिगोचर न हों, के संयोजन का निरीक्षण किया जा सकता है। वर्तमान में बड़े आकार के वॉल्व, गेयरबॉक्स आदि की आंतरिक स्थिति के निरीक्षण हेतु उपरोक्त पद्धति का उपयोग किया जा रहा है।

स्ट्रोब लाइट के उपयोग के माध्यम से कपलिंग्स, फैन इंपेलर्स, वी-बेल्ट्स आदि की चलती स्थिति में निरीक्षण किया जाता है। निरीक्षण हेतु उपस्कर पर कार्य बंद करने की आवश्यकता नहीं है।

संरक्षात्मक इंडक्शन मोटरों के रोटर बार के दरारों की जाँच हेतु मोटर करेंट सिग्नेचर विश्लेषण का उपयोग किया जाता है। इस विश्लेषण से त्रुटिपूर्ण मोटरों को समय रहते पुन:स्थापित किया जा सकता है अथवा उसकी मरम्मत की जा सकती है। अल्ट्रासोनिक लीक डिटेक्शन के माध्यम से वाल्व में गैस के प्रवाह एवं त्रुटिपूर्ण स्टीम ट्रैप की जाँच की जाती है।

विभिन्न महत्वपूर्ण गेयरबाक्सों के लूब्रिकेशन तेलों के वेयर डेबरिस विश्लेषण से गेयरबाक्स से छूटे अवयवों को पहचानने तथा ऐसे उनके छूटने के कारणों का पता लगाकर सुधारात्मक कार्रवाई की जा सकती है।

मशीनों की कार्यस्थिति के अनुश्रवण से संबंधित उपरोक्त सभी तकनीकों के कारण ब्रेकडाउन की संख्या तथा उनकी गंभीरता एवं अनुरक्षण कार्य की मात्रा को कम करने में सहायता मिली है और परिणामस्वरूप अनुरक्षण कार्य की गुणवत्ता बढ़ी है। साथ ही वर्ष दर वर्ष उपस्कर की उपलब्धता एवं कार्य-क्षमता में वृद्धि हुई है।

सहज पके तो मीठा होय

- मास्टर लक्ष्मी नारायण -

(स्कूली बच्चों (सीनियर्स) के लिए आयोजित कहानी लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कहानी)

एक गाँव था। उस गाँव के लोग खेती-बारी का काम बहुत मन लगाकर करते थे। इसलिए उनकी खेती में बहुत अच्छी पैदावार होती थी और वे बहुत खुशहाल रहते थे। गाँव में एक किसान था, उसका नाम रामगिरि था। रामगिरि के दो बेटे भी थे। बड़े बेटे का नाम श्यामगिरि तो दूसरे का महानगिरि था। थे तो दोनों एक ही माँ-बाप के संतान, पर दोनों के स्वभाव में धरती-आसमान का फर्क था। रामगिरि का बड़ा बेटा श्यामगिरि बहुत ही मृदु स्वभाव और निष्कपट व्यवहार वाला था। वह हमेशा अपने पिता की खेती में हाथ बँटाता रहता था। जो खेती से उपजता था, उसमें संतुष्ट रहता था। लेकिन महानगिरि ठीक उसके विपरीत था और वह हमेशा खूब धन कमाने के बारे में ही सोचता रहता था, लेकिन उसके बदले में मेहनत करना उसे बिल्कुल पसंद नहीं था।

रामगिरि अपने दोनों बेटों के स्वभाव से भलीभाँति परिचित था। इसलिए श्यामगिरि के प्रति उसका झुकाव बन गया था। इससे महानगिरि दुखी होता और विरोध भी करता था। जब विरोध अधिक होने लगा तो रामगिरि ने दोनों बेटों को अलग-अलग रहने और कमाने का इंतजाम करना अधिक श्रेयस्कर समझा और अपने खेत को दो हिस्सों में बाँट दिया और वह खुद श्यामगिरि के साथ रहने लगा। महानगिरि ने सोचा चलो यह और भी अच्छा हुआ, बूढ़े बाप के खर्च के बोझ और रोज-रोज बाप के नुक्ताचीनी से भी वह बच गया।

श्यामगिरि अपने बूढ़े बाप के अनुभवों और सलाह से खेती करता था और प्रकृति तथा पशु-पक्षियों के खाने के बाद जो कुछ बचता, उसे ही अपने हिस्से का मानकर प्रसन्नचित्त खेती करता रहता था। महानगिरि को खेत में सोना उगाने की लालच पकड़ी हुई थी। वह रामगिरि से रसायनिक खाद आदि डालकर खेती करता। उसकी भी खेती में पैदावार कुछ कम नहीं थी, बल्कि उसकी पैदावार श्यामगिरि से अधिक होती थी। इससे उसके पाँव जमीन पर नहीं पड़ते। लेकिन उसकी खेती कुछ वर्षों तक तो अच्छी जमी, अधिक रसायनिक खादों और कीटनाशकों के अधिक उपयोग के कारण बाद में उसके खेत की पैदावार कम होने लगी। लेकिन श्यामगिरि की खेती सामान्य ढंग से चलती रही। वह अपने खेतों में पारंपरिक खादों, नीम की खली और मौसम के अनुसार पारंपरिक तरीके से जमीन का उपचार करते हुए करता था।

महानगिरि को भाई के स्थाई विकास को देख झल्लाहट होती थी। भाई से आगे निकलने के लिए उसने खेती छोड़ व्यापार करने की ठानी। एक बार फिर बाप से लड़-झगड़कर उसने कुछ पैसे ऐंठ लिए और व्यापार करने लगा। लेकिन व्यापार में भी सहनशीलता, संयम और मेहनत की जरूरत होती है, जो महानगिरि के पास बिल्कुल नहीं थी। उसे तो जल्दी से अमीर बनना था। इसीलिए उसने अनाप-शनाप के व्यापार में पैसे लगाकर सब कुछ फिर से स्वाहा कर दिया।

महानगिरि को अपनी विफलता पर खुन्नस आती थी, लेकिन अपने भाई के सामने वह झुकना नहीं चाहता था। लेकिन अब उसकी सहायता करने के लिए कोई और था भी नहीं। इसलिए एक दिन वह अपने पिता रामगिरि के पास आया और अपनी विफलता की बात बताई। रामगिरि ने मन ही मन समझ लिया कि अब इसे आटे-दाल का भाव मालूम हो चुका है। यही मौका है जब इसे सच्चाई का दर्शन कराया जाए।

रामगिरि ने महानगिरि को समझाते हुए कहा, 'बेटा! तुम्हारी गलतियों के कारण तुम्हारे हिस्से की जमीन की उर्वराशक्ति खत्म हो चुकी है। तुमने अपने आलस्य और जिद के कारण मेरे व श्यामगिरि द्वारा कमाए धन को भी व्यापार में डुबो दिया है। हम लोगों ने तुम्हें बहुत मौका दिया कि तुम हमारी बात सुनोगे और हमारे अनुभवों का लाभ उठाओगे, लेकिन तुमने किसी की नहीं सुनी। सब अपनी मर्जी का करते रहे। आज परिणाम तुम्हारे सामने हैं। तुम चाहो तो भाई के साथ मिलकर उसके अनुभवों का लाभ उठा सकते हो।'

इस पर महानगिरि ने हामी भरते हुए कहा कि 'ठीक है पिता जी मुझसे गलती हो गई। अब मैं आप लोगों की बात मानूँगा और आपके और भैया के सुझाव के अनुसार ही जिंदगी को आगे बढ़ाऊँगा।' रामगिरि को यह बात बहुत अच्छी लगी। इससे उत्साहित होकर वह प्रवचनकर्ता की तरह कहने लगा, 'बेटा सहज पके तो मीठा होय वाली कहावत सुने हो? अगर नहीं सुने हो तो जान लो कि घबराने से कुछ नहीं होता। तुमने जल्दी और ज्यादा धन कमाने के चक्कर में जिस खेत की उवर्राशक्ति को खराब कर दिए हो, उसे पुन: पारंपरिक तरीके से उपचारित करो। इससे तुम्हारे खेत की उवर्राशक्ति पुन: वापस आ जाएगी और हाँ समय का इंतजार करते हुए मेहनत करो। एक दिन तुम्हारे पास भी धन दौलत आ जाएगा और तुम्हारी जिंदगी भी सुधर जाएगी।' महानगिरि बाप के चरणों में गिर गया और फफक कर रो पड़ा।

- दसवीं कक्षा 'सी'
चैतन्या पब्लिक स्कूल, उक्कुनगरम
विशाखपट्टणम-530032

एक और एक ग्यारह

- मास्टर मयंक राज -

(स्कूली बच्चों (जूनियर्स) के लिए आयोजित कहानी लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कहानी)

आज टी वी पर बार-बार एक गाँव रामपुर की तारीफ प्रसारित हो रही थी, क्योंकि रामपुर आज एक आदर्श गाँव बन चुका था। क्योंकि उसके निवासियों ने स्वच्छ भारत अभियान को बड़ी सफलतापूवर्क चलाकर अपने गाँव को एक साफ-सुथरा और सभी सुविधाओं से संपन्न बना डाला था। इसके पीछे उस गाँव की नई पीढ़ी के नौजवानों का हाथ था। टी वी पर नौजवानों की बातों को सुनकर लग रहा था कि उन्होंने बहुत कुछ तो नहीं किया है, हाँ एक बात जरूर है कि उन्होंने संगठित होकर इस पूरे अभियान को चलाया है और आज एक आदर्श गाँव के रूप में छा गए हैं।

माधव ने जब से इस खबर को देखा है, उसका चैन कहीं खो गया है। वह अपने घर में बैठे-बैठे ही अपने गाँव को भी एक आदर्श गाँव के रूप में प्रतिष्ठित करने के बारे में सोचना आरंभ कर दिया है। इसके पहले भी इसके मन में स्वच्छ भारत अभियान की बात आ रही थी, लेकिन वह इसे किस तह साकार करे, सोच नहीं पा रहा था। लेकिन आज रामपुर की खबर से यह बात उसकी समझ में आ गई है कि इस में अधिक लोगों को शामिल करना पड़ेगा, क्योंकि वह जानता है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

माधव अपने दिल की बात कुछ झिझकते-झिझकते ही अपने सबसे घनिष्ठ मित्र रघु को बताया। उसने कहा 'रघु! मैं चाहता हूँ कि अपने गाँव में भी सफाई अभियान चलाया जाना चाहिए। क्योंकि हमारे गाँव में भी बहुत गंदगी है। उसको हटाना बहुत जरूरी है।' उसने कहना जारी रखा, 'अपने गाँव में हमेशा लोग बीमार पड़ते रहते हैं। इससे गाँव का विकास रुक रहा है और गाँव के लोग कष्ट झेल रहे हैं। सबसे बुरा हाल बच्चों और बूढ़े लोगों का है। बच्चों और बूढ़ों के बीमार होने से गाँव के जवान और प्रौढ़ लोग काम नहीं कर पा रहे हैं और कभी-कभी तो वे लोग भी बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं। मेरा ख्याल है कि हम लोग अपने गाँव के लिए कुछ समय निकालें तो अच्छा होगा।'

रघु ने माधव से सहमत होते हुए कहा कि 'हाँ! यार तुम ठीक कह रहे हो। राम कई दिनों से विद्यालय नहीं आ रहा था। एक दिन मैं घर गया तो देखा कि वह खाट पर पड़ा है और बहुत कमजोर हो गया है। मैंने उसके घर में देखा कि साफ-सफाई पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। उसके घर में इधर-उधर रोटियाँ गिरी हुई मिलीं। घर में जगह-जगह पर जूठा गिरा हुआ था। उनपर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। तुम्हारा कहना सही है कि बच्चों और बूढ़ों की तबीयत खराब रहने से घर के जवान और प्रौढ़ लोग भी कुछ काम नहीं कर पाते। वहाँ राम के माँ-बाप भी पिछले दस दिनों से कोई काम नहीं कर पा रहे हैं।'

वह कहता रहा, 'माधव सच कहता हूँ दोस्त! ऐसे माहौल में आदमी तो क्या जानवर भी बीमार पड़ सकते हैं।' इस बात पर माधव की आँखें चमक उठीं और उसने कहा, 'अब हम लोगों को बाकी सभी दोस्तों को भी यह बात समझानी होगी, ताकि हम जो भी काम करें, उसे एक समूह में करें और संगठित होकर एक अभियान की तरह करें तो हमें सफलता मिलेगी।'

माधव अपनी सोच को अपने मित्र रघु के समक्ष रखने में कामयाब रहा और उसको पता था कि विज्ञान के शिक्षक भास्कर सर हमेशा साफ-सफाई पर ध्यान देने पर क्यों जोर देते रहते हैं तथा पर्यावरण, प्रदूषण, वृक्षारोपण की बात हमेशा क्यों समझाते रहते हैं। माधव ने रघु को लेकर आज ही लंच ब्रेक में भास्कर सर से मिलने का प्लान बनाया।

लंच ब्रेक में माधव और रघु दोनों ने भास्कर सर के कमरे में जाकर अपने मन की सारी बात बता दी तथा उनके सुझाव के अनुसार एक कार्य-योजना भी बना डाली। भास्कर सर ने खुशी से झूमकर कहा, 'माधव तुम्हारी योजना बहुत अच्छी है और मुझे खुशी है कि मैं भी तुम्हारी इस योजना का हिस्सा हूँ।'

भास्कर सर ने विद्यालय के कुछ उत्साही बच्चों की एक बैठक बुलाई और उन्हें माधव व रघु की कार्य-योजना के बारे में बताई। योजना के मुताबिक सभी विद्यार्थियों ने शनिवार को आधा पहर और रविवार को पूरे दिन पूरे गाँव में सफाई के लिए श्रमदान करने और घर-घर जाकर लोगों को अपने घरों में साफ-सफाई पर ध्यान देने की बात समझाने के लिए हामी भर दी।

गाँव की हर गली के लिए एक टोली बनाई गई। हर शनिवार और रविवार को पूरे गाँव की सफाई की जाने लगी। जानवरों की धुलाई अब तालाब में नहीं, बल्कि बाहर होने लगी। गाँव की खाली जमीन पर वृक्षारोपण किया गया, नालियों की सफाई नियमित होने लगी, सामूहिक शौचालयों का निर्माण कराया गया। अब गाँव में मच्छरों का प्रकोप लगभग समाप्त हो गया, सामूहिक शौचालय बनने से मल-मूत्र की बदबू नदारद हो गई। अब लोग कम बीमार पड़ने लगे और गाँव हरा-भरा और स्वच्छ दीखने लगा। लोग मान गए कि 'एक और एक ग्यारह होते हैं।'

- आठवीं कक्षा 'ई'
चैतन्या पब्लिक स्कूल
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम-530032

एक और एक ग्यारह

- सुश्री फिजा तहसीन -

(स्कूली बच्चों (जूनियर्स) के लिए आयोजित कहानी लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कहानी)

एक गाँव में रामलाल नाम का एक आदमी रहता था। उसके तीन बेटे थे। पहले बेटे का नाम था मोहन, दूसरे बेटे का नाम था सोहन और तीसरे बेटे का नाम था रोहन। रामलाल के तीनों बेटों की शादी हो गई थी और वे अलग-अलग घरों में रहते थे। लेकिन रामलाल सब के साथ मिलकर एक ही घर में रहना चाहता था। लेकिन रामलाल के बेटे एक से बढ़कर एक थे। तीनों भाई मिलकर नहीं रहते थे। जब कोई समस्या भी आती तो वे एक दूसरे की बिल्कुल मदद नहीं करते, बल्कि जिस पर समस्या आती, उसे देखकर मन ही मन खुश होते। तीनों परिवारों में अक्सर शीत युद्ध चलता ही रहता था। लेकिन जिस पर समस्या आती, वह सोचता था कि 'जब हम मिलकर रहते तो शायद यह समस्या मुझ पर नहीं आती।' वह एकता से रहने की राग अलापने लगता। लेकिन समस्या से निजात पाते ही पुन: अपनी ईर्ष्या-द्वेष की पुरानी कहानी रचने लगते।

एक दिन रामलाल के बड़े बेटे मोहन के पास एक पहलवान आया और उससे एक लाख रुपया उधार माँगा और बदले में अपने भाइयों से नहीं डरने का अभय दान भी दिया। काफी दिन हो गए। जब मोहन से नहीं रहा गया तो उसने उस पहलवान से अपने एक लाख रुपए माँगे तो पहलवान बिगड़ गया। उसने मोहन को हड्डी-पसली तोड़ देने की धमकी दी। अब मोहन किससे कहे कि पहलवान पैसा नहीं दे रहा है? और बदले में हड्डी-पसली तोड़ने की धमकी भी दे रहा है। मोहन चुपचाप घर में दुबक गया।

इसी तरह रामलाल का दूसरा बेटा सोहन एक दिन बाजार से सब्जियाँ लेकर आ रहा था, तो रास्ते में उसे एक गुंडा मिल गया। उसने सोहन से सारा सामान छीन लिया और दो-चार झापड़ रसीद भी कर दिया। सोहन बेचारा क्या करता? भाइयों में एकता नहीं होने की बात को कोसते हुए चुपचाप हो लिया। इस पर मोहन और रोहन ने सोहन की खूब खिल्लियाँ उड़ाई।

रामलाल के तीसरे बेटे की एक दूकान थी। उसकी दूकान अच्छी चलती थी। वह एक अच्छा व्यापारी बन चुका था। वह मटकों का व्यापार करता था। वह खुद भी मटके बनाता था और दूसरों के द्वारा बनाए गए मटकों को खरीद कर बेचता भी था। उसका व्यापार लाखों में था तथा उसकी गिनती अच्छे पैसे वालों में होती थी। उसे बहुत घमंड था कि उसकी बराबरी में उसके भाई नहीं हैं और उसकी अच्छी जान-पहचान है। इसलिए उसका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

संयोगवश वह भी एक समस्या में फँस गया। उसकी समस्या यह थी कि एक बड़े दूकानदार ने उसे आठ सौ मटकों का आर्डर दिया, क्योंकि उसके पास मटके खत्म हो रहे थे और गर्मी का मौसम आने वाला था। उस समय मटकों की माँग बढ़ती है। बड़े दूकानदार ने रोहन को तीन दिन में ही मटकों की आपूर्ति करने के लिए कहा और रोहन ने उसे मान भी लिया था। लेकिन रोहन के लिए अकेले आठ सौ मटके बनाना आसान नहीं था। उसने बहुत कोशिश की, लेकिन मुश्किल से सौ मटके ही आपूर्ति कर सका। इस पर बड़े दूकानदार ने रोहन को सबक सिखाने की ठान ली। बड़े दूकानदार ने धीरे-धीरे रोहन से आठ सौ मटके बनवा लिए और आधा-अधूरा पैसा देकर टाल दिया। जब भी रोहन अपना पैसा माँगता, वह उसे बहला-फुसलाकर भेज देता। एक दिन तो हद ही हो गई। दूकानदार ने रोहन को पैसे माँगने के बदले जान से मार देने की धमकी भी दे दी। रोहन को अब कुछ नहीं सूझ रहा था। उसने अपने भाइयों से मदद माँगी तो भाइयों ने भी धमकाकर भगा दिया। रोहन ने सभी दोस्त-मित्रों से मदद माँगी तो उन्होंने भी उसे ठेंगा दिखा दिया। थक-हार कर रोहन अपने पिता रामलाल के पास गया और फूट-फूटकर रोने लगा। रामलाल ने उससे कहा कि 'मैं तुम्हारे भाइयों से भी बात करूँगा।'

रामलाल ने अपने तीनों बेटों को अलग-अलग समय पर बुलाया। उनकी बातें सुनीं और उनके साथ उनकी समस्याओं पर भी विचार किया। साथ ही उन्हें विश्वास में लेकर उनके भाइयों से भी उनकी मदद का भरोसा दिया। रामलाल ने बड़ी चालाकी से तीनों बेटों की समस्याओं को जाना और उन्हें समस्याओं से निजात दिलाने के लिए ऐसी योजना बनाई कि तीनों एक दूसरे की समस्याओं में सहयोग देंगे और तीनों की समस्याएँ हल हो जाएँगी।

योजना के अनुसार तीनों भाई सबसे पहले पहलवान के घर पहुँचे और अपना पैसा माँगना शुरु किया। पहले तो पहलवान थोड़ा अकड़ जरूर दिखाया। लेकिन तीनों को देखकर सकपका गया और तुरंत एक लाख का चेक देकर अपनी जान बचाई। अगली चढ़ाई बड़े दूकानदार पर हुई तो वह गिड़गिड़ाने लगा और सारे हिसाब-किताब का निपटारा कर दिया। अब तीनों भाई गुंडे के घर की ओर बढ़े तो पता चला कि वह गाँव छोड़कर कहीं और भाग गया है। रामलाल ने अपने बेटों को 'एक और एक ग्यारह' का मतलब ठीक से समझाया था।

- आठवीं कक्षा
डी ए वी सी पब्लिक स्कूल
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम-530032

दान

दानशीलता एक गुण है। अधिकांश दानशील लोग करुणावान होते हैं। जिसके हृदय में करुणा का भाव नहीं हो, वह दानी नहीं हो सकता। दानी व्यक्ति में त्याग और सत्कर्म के गुण अनायास ही आ जाते हैं। भारतीय संस्कृति में कई ऐसे दानी लोगों की दंतकथाएँ मिलती हैं, जिन्होंने अपनी दानशीलता के बल पर ख्याति प्राप्त की और कष्ट भी भोगे। इनमें से राजा हरिश्चंद्र, कर्ण, राजा शिबि और राजा रंतिदेव जैसे लोगों का नाम बड़े ही सम्मान से लिया जाता है।

इस संदर्भ में अथर्ववेद के एक श्लोक का उल्लेख करना आवश्यक है। उस श्लोक के अनुसार सैकड़ों हाथ से कमाना चाहिए और करोड़ हाथ से दान करना चाहिए। क्योंकि हमारे सत्कर्मों का विस्तार इसी जन्म में होना चाहिए, इसी जन्म के कर्मो के आधार पर हमारा परलोक निर्भर होता है। साथ ही यदि हम ईश्वर के प्रति वास्तव में कृतज्ञ हैं तो हमें ईश्वर द्वारा सृजित उसकी संतानों के प्रति उदार और दयावान होना चाहिए तथा उनमें से जरूरतमंदों की सहायता करनी चाहिए। क्योंकि ईश्वर द्वारा सृजित बहुत से सृजनों में अतुलनीय दानशीलता और करुणाभाव है। जैसेकि वृक्ष और नदी परोपकार के निमित्त ही अपने फल और जल इस संसार को देते हैं।

वेदों में तीन तरह के दान का उल्लेख मिलता है तथा इसके लिए दान की श्रेणियों का निर्धारण किया गया है। जब धर्म के विस्तार अथवा उन्नति, सत्य को बढ़ावा या विद्या अथवा ज्ञान के विस्तार के लिए दान दिया जाता है तो उसे श्रेष्ठतम श्रेणी में रखा गया है और इसे उत्तम दान की संज्ञा दी गई है। इसी प्रकार कुछ लोग दान तो करते हैं, लेकिन उनमें अपना कुछ निजी स्वार्थ निहित होता है। यथा, कीर्ति अथवा स्वार्थ के मद्देनजर किये गए दान को मध्यम श्रेणी में रखा गया है। वेश्याओं, भाड़ों, भाटों और पंडों को दिए गए दान को तो निकृष्ट श्रेणी में रखा गया है, अर्थात नि:स्वार्थ भाव से जग कल्याण को दिए गए दान को ही उत्तम माना गया है।

वैसे तो अन्नदान, विद्यादान, अभयदान और धनदान जैसे कई प्रकार के दान समाज में प्रचलित हैं। लेकिन जरूरतमंदों को दान देना ईश्वर से प्रेम करने के समान माना गया है। ऐसे ही सभी धर्मो में सुपात्र को दान देना परम कर्तव्य माना गया है। आधुनिक संदर्भ में दान का अर्थ किसी वस्तु पर से अपना अधिकार समाप्त करके उस पर किसी अन्य के अधिकार को स्थापित करना होता है। साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि दान दी हुई वस्तु के बदले किसी भी प्रकार का विनिमय नहीं होना चाहिए, अन्यथा वह दान की श्रेणी में नहीं आएगा।

दान की व्याख्या करते समय विद्वानों ने सात्विक, राजस और तामस दान को भी लगभग उसी प्रकार से परिभाषित किया है, जैसे ऊपर उत्तम, मध्यम और निकृष्ट दान को परिभाषित किया गया है। इसी प्रकार स्वर्ण, रजत आदि के दान करने को कायिक दान कहा गया है तथा किसी भयभीत व्यक्ति द्वारा अभय दान की याचना पर अभय के लिए वचन देने को अभय दान कहा गया है और जप एवं ध्यान प्रभृति का जो अर्पण किया जाता है, उसे मानसिक दान कहा जाता है। इसी प्रकार जैन धर्म के अनुसार दान के चार प्रकार बताए गए हैं। पात्र लोगों को दिया हुआ दान पात्र, दीनदुखियों को दिया हुआ दान करुणा, सहधार्मिकों को कराया गया भोजन आदि को सम तथा अपनी संपत्ति आदि को अपने किसी उत्तराधिकारी को सौंप देने को अन्वय दान कहा गया है।

दान देने वाले के लिए कुछ विधानों का भी उल्लेख किया गया है। यथा, दान देने वाले को शुद्धचित्त होकर दान करना चाहिए। दान देते समय उसके मन में दान लेने वाले के प्रति श्रद्धा, भक्ति, क्षमा और सत्य का भाव होना चाहिए एवं उसके मन में दंभ, तुष्टि, लोभ और किसी प्रकार के असत्य का भाव नहीं होना चाहिए।

ऐसे ही इस्लाम धर्म में भी जकात और पवित्र दान पर बल दिया गया है। रमजान के पाक महीने में तो दान को आवश्यक संस्कार के रूप में परिभाषित किया गया है। प्रभु ईसामसीह ने भी अपने अनुयायियों को शुद्धचित्त और बिना किसी दिखावे के अपनी कमाई में से दान करने पर बल दिया है। बौद्ध, सिख और जैन धर्म भी दान करने की प्रवृत्ति के विस्तार पर बहुत जोर देते हैं। लेकिन सभी धर्मो में दान करने की मानसिकता के पीछे शुद्धता और पवित्रता को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है और व्यक्तिगत लाभ अथवा दान के बाद कुछ प्राप्त करने की भावना को हतोत्साहित किया गया है।

मनोवैज्ञानिक रूप से भी दान के महत्व को स्वीकार किया गया है। दान के संबंध में मनोवैज्ञानिकों की मान्यता है कि इससे विचार और मन में खुलापन आता है और किसी धारणा के प्रति हमारी आसक्ति कम होती है। इससे हमारी इच्छाओं की तीव्रता में कमी आती है, हमें मोह-माया से मुक्ति की ओर ले जाती है और हम आसान तथा दु:ख रहित भावना से इस संसार को अलविदा कह पाते हैं।

पड़ोसी

- श्री शैलेंद्र तिवारी -

शाम.... थका-हारा घर पहुँचा था कि पत्नी ने तुरंत शिकायत दागी, 'सामने के मकान में जो नये किरायेदार आये हैं, उनके बेटे ने हमारे मुन्ने को पीटकर रख दिया।' 'क्यों...?' अपने बेटे के पिटने की बात सुनकर मैं भड़क उठा। एक तो थकावट की वजह से दिमाग पहले ही चिड़चिड़ा हो गया था। उस पर बेटे के पिटने की बात सुनकर मुझे क्रोध आ गया। पत्नी ने बताया, 'दोनों गली में खेल रहे थे। किसी बात पर लड़ बैठे।' मैंने अपना क्रोध पत्नी पर उतारा, 'जब तुम्हें पता है कि वे लोग झगडालू हैं तो उनके साथ मुन्ने को क्यों खेलने दिया। क्या वह घर पर नहीं खेल सकता था। फिर खेलना कोई जरूरी था।' मेरे क्रोध को देखकर पत्नी का चेहरा उतर गया। वह सहमे स्वर में बोली, 'हाँ, गलती मेरी ही थी। मुझे मुन्ना को उनके साथ खेलने नहीं जाने देना था। अब आइंदा कभी उनके साथ खेलने नहीं दूँगी।'

मैं बड़बड़ाने लगा था, 'कहीं भी दो घड़ी की शांति नहीं। दिन भर आफिस में जानवरों की तरह खटो और घर पहुँचते ही तुम शुरु हो जाती हो। तुमसे घर और दो बच्चे संभाले नहीं जाते। पता नहीं, दिन भर क्या करती रहती हो!' पत्नी सहज स्वर में बोली, 'मैंने अपनी गलती मान ली है।' 'गलती मानने से क्या होता है?' मैंने क्रोध में कहा, 'कुछ भी उल्टा-सीधा करो और कह दो कि गलती हो गयी। इससे क्या होता है?' 'अब आप शांत हो जायें। गुस्से को थूक दें। आपके लिए चाय बनाकर लाती हूँ।' पत्नी का स्वर एकदम नर्म और प्यार भरा था। वह मेरे लिए चाय बनाने किचन में चली गयी। मैं भी चुप हो गया था। मैं चुप था, परंतु मन अभी भी इधर-उधर दौड़ रहा था। बार-बार ध्यान आ रहा था कि पड़ोसी के बेटे ने मेरे बेटे को पीटा है। मेरे मन में उस पड़ोसी के लिए सैकड़ों गालियाँ निकली थीं। कोई तीन महीने पहले ये लोग हमारे पड़ोस में आये थे। मेरी गली में मेरे सामने के मकान में किरायेदार हैं। उनके परिवार में कुल पाँच सदस्य हैं। घर के मुखिया मिस्टर गुप्ता, उनकी पत्नी और तीन बच्चे। दो बेटे और एक बेटी।

मिस्टर गुप्ता किसी सरकारी विभाग में काम करते थे। उनकी पत्नी मिसेज गुप्ता घर संभालती हैं। तीनों बच्चे पढ़ते हैं। मिस्टर गुप्ता जहाँ शरीर से दुबले-पतले और कमजोर से दीखने वाले व्यक्ति हैं, वहीं मिसेज गुप्ता नाटे कद की मोटी, थुलथुल और बात-बात में झगड़ा करने वाली औरत हैं। उनके बच्चे भी माँ पर गये हैं। पढ़ाई से ज्यादा शरारत करने और लड़ाई-झगड़े में सिद्धहस्त हैं। मिसेज गुप्ता परिवार में सब पर हावी रहती हैं। यहाँ तक गुप्ता जी भी पत्नी के सामने भीगी बिल्ली बने रहते हैं। मुहल्ले में आते ही मिसेज गुप्ता चर्चा का विषय बन गयी थीं। अपनी अहंकार भरी बातें और लड़ाकू स्वभाव के कारण मुहल्ले में जल्दी ही बदनाम हो गयीं। मुहल्ले के लोग हमेशा उनकी निंदा करते रहते हैं और उनसे दूर रहने का प्रयास भी। कोई भी उनसे बात करना पसंद नहीं करता है। धीरे-धीरे पास-पड़ोस के हर व्यक्ति से उनकी लड़ाई हो चुकी है।

एक बार मेरी भी टकराहट हो चुकी है। आज की तरह उस दिन भी शाम को ऑफिस से लौटा था। पहुँचते ही पत्नी ने मिसेज गुप्ता की शिकायत की, 'हमारी जो नयी पड़ोसन आयी है। इसने तो नाक में दम कर दिया है।' 'क्या हुआ?' मैंने पत्नी की तरफ देखा था, 'तुमसे भी लड़ाई हो गयी?' 'नहीं.... मुझसे लड़ाई नहीं हुई। लेकिन उसका स्वभाव और आदत मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है।' 'क्या किया उसने?'

'अपने घर का सारा कूड़ा-करकट बाहर बटोरकर हमारे दरवाजे के सामने इकट्ठा कर जाती है।' 'तुमने कुछ कहा नहीं?' 'नहीं।' 'क्यों? तुम्हें पूछना चाहिए था कि मेरे घर के सामने अपने घर की गंदगी क्यों फैला जाती है।'

रुककर पत्नी ने कहा, 'उससे बातें करना बेकार है। बात करने का मतलब झगड़ा करना। अब कौन उसके मुँह लगे।' 'कमाल है। झगड़े के डर से हम चुप रहें, उसे कुछ न कहें और वह रोज-रोज अपने घर की गंदगी हमारे घर के सामने फैला जाये। नहीं.... ये नहीं हो सकता। उससे बात करनी होगी। उसे एक बार समझाना होगा कि अब ऐसे नहीं चलेगा।' मेरी बात सुनकर पत्नी डर गयी थी। वह समझ रही थी कि अगर मैंने मिसेज गुप्ता से बात की तो लड़ाई हुए बगैर बात नहीं टलेगी। मैं मिसेज गुप्ता से न उलझूँ, इसलिए पत्नी ने प्यार से कहा, 'जाने दीजिए, क्या फर्क पड़ता है। मैं कूड़ा-करकट हटा दिया करूँगी। अब आप शांत हो जाइये। मैं आपके लिए चाय बनाकर लाती हूँ।' आज की तरह ही उस दिन भी वह चाय बनाने किचन में चली गयी थी।

'चाय!' मेरी तन्द्रा टूटी थी। सामने पत्नी चाय लिए

> मैं अपनी जगह बैठा सोच रहा था। क्या आज की घटना से मिसेज गुप्ता को यह एहसास हुआ होगा कि पड़ोसियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। उनके बीच किस तरह रहना चाहिए। उनकी झगड़ालू प्रवृत्ति के कारण आज कोई भी उनकी मदद करने सामने नहीं आया था। क्या इस बात को वह समझ पायी होंगी। अब तो आने वाला समय बतायेगा, मिसेज गुप्ता कितनी समझदार हुई हैं। उनके अंदर एक अच्छे पड़ोसी का गुण आया है कि नहीं...!

खड़ी थी। मैंने चाय की प्याली थाम ली और एक गर्म घूँट लिया और फिर मिसेज गुप्ता के बारे में सोचने लगा। बड़ी ही अजीब औरत हैं मिसेज गुप्ता। जरा भी तमीज नहीं है। जरा भी व्यवहारिक नहीं है। मेरी पत्नी चाय थमाने के बाद भी मेरे सामने खड़ी थी। शायद वह मेरे चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रही थी। मैंने नजर उठाकर देखा तो हमारी नजरें आपस में टकराई थीं। नजरें मिलते ही वह अचकचा गयी थी, फिर जल्दी से होठों पर मुस्कान ले आयी। मैंने यूँ ही पूछ लिया, 'ऐसे क्या देख रही हो?' 'कुछ नहीं।' वह मुस्कुराती रही।

'बात तो.... कुछ है।' 'हाँ, बात तो है। वह मेरे करीब सोफे पर बैठ गयी, 'मैं आपके चेहरे को देख रही थी। गुस्से में कितना भयानक हो जाता है आपका चेहरा। आपसे मुझे भी डर लगने लगता है।' पत्नी के कहने के अंदाज पर मुझे हँसी आ गयी। मुझे हँसते देखकर पत्नी का चेहरा खिल उठा था। वह प्रसन्न से फिर बोली, 'आप सिर्फ हँसते हुए अच्छे लगते हैं। आपको क्रोध नहीं करना चाहिए।' जब तक मैं चाय पीता रहा, वह पास बैठकर न जाने क्या-क्या नसीहत देती रही। मैं चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा, बल्कि कहिए कि सुनने का अभिनय करता रहा। चाय खत्म हो गयी। जूठी प्याली मैंने उसकी ओर बढ़ा दी। जूठी प्याली उठाये वह किचन की तरफ चल पड़ी।

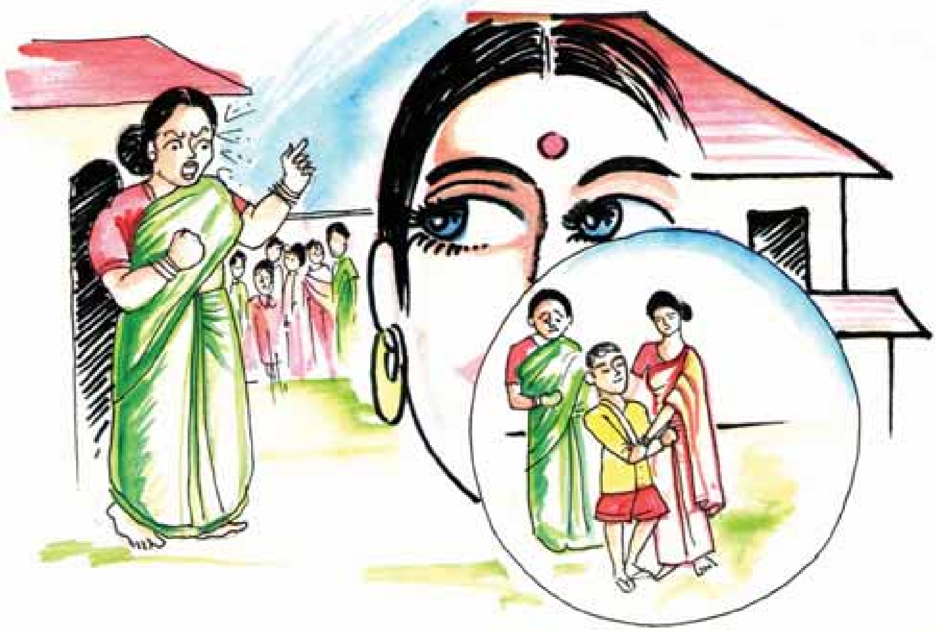

अब उसे पूरा इत्मीनान हो गया था कि मेरा गुस्सा खत्म हो गया है। पत्नी के जाने के बाद अब मैं उसके बारे में सोचने लगा। मेरी पत्नी बड़े ही शांत स्वभाव की है। उसे लड़ाई-झगड़ा जरा भी पसंद नहीं है। वह लड़ाई-झगड़े से हमेशा दूर रहती है। उसे तेज आवाज से भी डर लगता है। अगर किसी ने उसे डांटा-फटकारा भी तो वह चुपचाप सुन लेती है। मुझे भी किसी से बात करते देखकर घबरा जाती है।

मुझे याद है। एक दिन शाम को लौट रहा था। मेरे दो पड़ोसी गली में खड़े किसी बात पर लड़ रहे थे। मुझे वहाँ से गुजरते देखकर उन लोगों ने रोक लिया। वे दोनों अपनी-अपनी बातें अपने-अपने ढंग से कहने लगे। मतलब साफ था। मैं एक जज की भूमिका में था और वे दोनों वकीलों की तरह अपनी-अपनी सफाई दे रहे थे और मैं चुपचाप खड़ा उन दोनों की बातें सुन रहा था। वे दोनों मुझे बोलने का एक भी मौका नहीं दे रहे थे। समझ में नहीं आ रहा था कि उन दोनों को क्या कहूँ, कैसे समझाऊँ?

इस बीच न जाने कैसे मेरी पत्नी को पता चल गया कि मैं वहाँ हूँ। वह घबराई सी दौड़ती हुई मेरे पास आयी। मेरी बाँह पकड़कर वह मुझे खींचने लगी, 'आप यहाँ क्या कर रहे हैं, अब घर चलिये।' वह मुझे खींचती हुई घर तक लायी। आते हुए मैंने मुड़कर देखा था। दोनों पड़ोसी अभी भी लड़ रहे थे। घर पहुँचकर पत्नी ने मेरी बाँह छोड़ी और बोली, 'क्या जरूरत थी आपको उनके बीच पड़ने की?' 'मैं जान-बूझकर थोड़े ही खड़ा हुआ था।' 'आपको वहाँ नहीं रुकना था।' 'रुक गया तो क्या हुआ?' 'कुछ नहीं हुआ।' पत्नी का स्वर सख्त हो गया था, 'लेकिन दूसरों की लड़ाई में आपको पड़ने की कोई जरूरत नहीं है। वे आपस में जैसे लड़ रहे हैं, वैसे ही अपना फैसला कर लेंगे। आपको उनसे कोई मतलब नहीं था।'

मैं इस बात को यहीं खत्मकर देना चाहता था, 'ठीक है बाबा। अब आपस में कोई भी लड़े, हमें उनसे कोई मतलब नहीं रखना है।' 'आपको चुपचाप आफिस जाना चाहिए और चुपचाप घर आना चाहिए।' 'ठीक है, मैं चुपचाप आफिस जाऊँगा और चुपचाप घर आऊँगा। कहाँ क्या है और कहाँ क्या हो रहा है? नजर उठाकर भी नहीं देखूँगा। अब खुश?' मेरे कहते ही वह मुस्कुराने लगी थी। मेरी बातों से उसे इत्मीनान हो गया था। अब ऐसी है मेरी पत्नी। अगले दिन आफिस जाने से पहले पत्नी के पास पहुँचा, 'सुनो।' 'जी।' 'आज अगर मिसेज गुप्ता अपने घर का कूड़ा-करकट हमारे घर के सामने लाकर रख दें तो वैसे ही पड़ा रहने देना। साफ करने की जरूरत नहीं है।' 'क्यों?' 'मैंने कहा न.... उसे साफ करने की जरूरत नहीं है। शाम को लौटकर उसे मिसेज गुप्ता से ही साफ कराऊँगा।'

पत्नी ने सशंकित निगाहों से मेरी तरफ देखा, 'क्या आप झगड़ा करना चाहते हैं?' 'नहीं मेरा झगड़ा करने का कोई इरादा नहीं है। बस मैं उसका शहूर उसके पति और पड़ोसियों को दिखाना चाहता हूँ।' 'कोई फायदा नहीं होगा।' 'फायदा हो या न हो। लेकिन मैं जो कह रहा हूँ, उसे करना। आखिर उसके पति को यह एहसास होना चाहिए कि उसकी पत्नी कैसी है।' 'उसके पति को सब मालूम है। वे बेचारे इतने दबे हुए हैं कि अपनी पत्नी के सामने जुबान नहीं खोल सकते।'

मुझे लगा मेरी पत्नी भी मिसेज गुप्ता की तरह मुझे परास्त करना चाहती है। मैंने झल्लाकर कहा, 'मुझे उनकी जुबान से कुछ लेना-देना नहीं है। मैं जो कह रहा हूँ, वही करना.... समझी। शाम को जब मैं आफिस से लौटूँ...।' पत्नी बात काटकर बोली, 'मैं जानती हूँ, आप झगड़ा करना चाहते हैं। लेकिन मुझे यह सब बिल्कुल पसंद नहीं है। मैं शांतिपूर्ण ढंग से जीना चाहती हूँ।' मैंने व्यंग्य भरे स्वर में कहा, 'यह तो बहुत अच्छी बात है। मगर तुम शांति से तभी जी सकोगी, जब मिसेज गुप्ता तुम्हें शांति से जीने देगी, समझी? और मिसेज गुप्ता जैसी औरत तुम्हें कभी शांति से जीने नहीं देगी।' वह चुप रही और मेरी तरफ देख रही थी। तनिक ठहरकर मैंने फिर कहा, 'अब मेरी सुनो। आज कूड़ा-करकट यूँ ही पड़े रहना देना। मैं आफिस से लौटने के बाद मिसेज गुप्ता से बातें करना चाहता हूँ और अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो....।' मैं पत्नी को धमका गया।

शाम को बस से उतरने के बाद मैं जल्दी-जल्दी घर की ओर चल पड़ा। मैं नहीं चाहता था कि मेरी पत्नी मेरे पहुँचने के पहले मेरे घर के सामने मिसेज गुप्ता का फैलाया कूड़ा-करकट साफ कर दे। मिसेज गुप्ता से मेरी लड़ाई न हो, इसलिए मेरी पत्नी वह कूड़ा हटा सकती थी। मैं काफी तेज कदमों से चलते हुए घर के सामने पहुँचा। देखा, घर के सामने कूड़ा करकट पड़ा है। समझ गया कि मेरी धमकी काम कर गयी। मेरी धमकी से डरकर पत्नी ने इसे साफ नहीं किया। यह देखकर मैं खुश था।

कूड़े-करकट के ढेर पर निगाह दौड़ाने के बाद मैंने मिसेज गुप्ता के दरवाजे की तरफ देखा और पुकारा, 'गुप्ताजी... गुप्ताजी....।' मेरे पुकारने पर भी गुप्ता जी का दरवाजा नहीं खुला। लेकिन मेरी आवाज सुनकर पत्नी अपना दरवाज खोलकर मेरे पास आ खड़ी हुई। मेरी बाँह पकड़ते हुए कहा, 'क्या कर रहे हैं आप। अंदर चलिए।' 'चलता हूँ।' मैंने पत्नी की तरफ देखा। 'फिर चलिए न', वह मुझे खींचने लगी। 'क्या कर रही हो। मुझे छोड़ो।' मैंने अपनी बाँह छुड़ाते हुए मिसेज गुप्ता को फिर आवाज दी, 'गुप्ताजी।' इस बार मेरी आवाज पर दरवाजा खुला था। दरवाजे पर मिसेज गुप्ता खड़ी थी। मेरी तरफ कठोर निगाहों से देखते हुए, 'क्या बात है? काहे आवाज दे रहे हो?' मैंने कहा, 'मुझे गुप्ता जी से कुछ बात करनी है।' 'जो बात करनी है मुझसे करो।' मिसेज गुप्ता ऐंठन भरे स्वर में बोली थी। मैंने देखा, उनके पीछे मिस्टर गुप्ता भीगी बिल्ली की तरह खड़े थे। वे चाहकर भी दरवाजे से बाहर निकल नहीं सकते थे। दरवाजे के बीचों-बीच टुनटुन जैसी मोटी उनकी पत्नी रास्ता रोके खड़ी थी।

'ठीक है, आपसे ही बातें कर लेता हूँ। अब आप बतायें। मेरे घर के सामने अपने घर का कूड़ा-करकट फैलाने का क्या मतलब?' मेरा स्वर सख्त और तेज था। 'कैसा मतलब?' 'मैडम', इस बार और तेज स्वर में मैंने कहा, 'मैंने किसी विदेशी भाषा का प्रयोग नहीं किया है कि आपको मतलब भी समझाना पड़े। आपने ये कूड़ा-करकट मेरे घर के सामने क्यों फैलाया।' मैंने कूड़े के ढेर की तरफ इशारा किया। मेरी बात सुनते ही मिसेज गुप्ता भड़क उठीं। 'आपको औरतों से बात करने की तमीज नहीं है।' 'मेरे पास तमीज है कि नहीं, यह सवाल नहीं है। लेकिन आपके पास जरा भी शउर नहीं है।' मैं तिलमिला उठा था, 'अगर आपके पास शउर होता तो बात करने के लिए मैंने आपके पति को बुलाया था, आप उन्हें भेजतीं। स्वयं सामने आकर इस तरह तनकर खड़ी नहीं हो जातीं। अब बताइये तमीज किसके पास नहीं है।' 'ये आप क्या कर रहे हैं, अब अंदर चलिए।' पत्नी लगातार बाहें पकड़कर खींच रही थी। मैंने अपनी बाँह छुड़ाई, पत्नी को डाँटा। वह सहमकर खड़ी हो गयी। हमारी बातें सुनकर कुछ पड़ोसी भी आ गये। वे जानना चाहते थे कि बात क्या है? कुछ लोग मजे लेने के लिए आये थे। पड़ोसियों को देखकर मिसेज गुप्ता तेज-तेज स्वर में बोलने लगी, 'देख रहे हैं भाई साहब, देख रही हैं बहन जी। मर्द होकर औरत से कैसे लड़ रहे हैं।'

मिसेज गुप्ता की बात सुनकर मुझे क्रोध आ रहा था, 'अगर मेरी बात तुम्हें इतनी बुरी लग रही है तो, तुम क्यों आगे आयी! अपने पति को क्यों नहीं भेजती! तुमने तो उसे नामर्द और हिजड़ा बनाकर रखा है। लेकिन हम हिजड़े नहीं हैं।' 'क्या करोगे मेरे पति को', मिसेज गुप्ता बेहद बदतमीजी पर उतर आयी, 'लीजिए, आगे कर रही हूँ। हिम्मत है कुछ कहने की!' उसने अपने पति को पीछे से खींचकर सामने करना चाहा। लेकिन दरवाजे में जगह नहीं मिल रही थी। उसका पति पीछे खड़ा बकरी की भांति नजर आ रहा था।

कुछ पड़ोसी मेरे पास आकर मुझे समझाने लगे कि मैं इस औरत के मुँह न लगूँ। फिर पड़ोस में रहकर इस तरह लड़ाई-झगड़ा करना अच्छी बात नहीं है। तभी एक औरत ने कहा, 'यह औरत बहुत झगड़ालू है। जब से मुहल्ले में आयी है, यहाँ की शांति भंग हो गयी है। हर किसी से लड़ती रहती है। उस दिन किसी तरह पड़ोसियों ने बीच-बचाव किया। मामला शांत हुआ, तब मेरी पत्नी मुझे खींचकर अंदर ले आयी। अंदर पहुँचते ही खूब फटकार लगाई। कुछ देर वह स्वयं रोने लगी। उसे रोते

देखकर पूछना पड़ा, 'अब तुम्हें क्या हो गया, जो रो रही हो?'

'आप किसी से क्यों लड़ते हैं?' रोते हुए वह क्रोध में बोली, 'कूड़ा ही तो फेंका था। मैं उसे साफ कर लेती।' 'ठीक है।' मैंने चिढ़ते हुए खीझ भरे स्वर में कहा, 'कल से सबको बोल देना कि अपने घर की गंदगी मेरे घर के सामने कर जायेंगे। तुम आराम से साफ करते रहना।' कहने के बाद मैं दूसरे कमरे में जाकर कपड़े बदलने लगा। उस दिन से न जाने क्यों मुझे मिसेज गुप्ता से नफरत सी हो गयी। सिर्फ मिसेज गुप्ता से ही नहीं, उनके पूरे परिवार से नफरत हो गयी। वे लोग अब मुझे फूटी आँख भी नहीं सुहाते थे। मैंने उन लोगों की तरफ देखना भी बंद कर दिया। अगर कभी निगाह पड़ गयी, नफरत से मैं मुँह फेर लेता था।

और आज फिर उनके बच्चे ने मेरे बेटे को पीटा है। यह सुनने के बाद मुझे बरदाश्त नहीं हो रहा था। जी में आ रहा था कि उनके घर जाऊँ और उनके बेटे को बाहर खींचकर, गली में खड़ा करके खूब पीटूँ। फिर मन में ख्याल आया कि 'यह गलत है।' क्रोध में उठाया गया कोई भी कदम सही नहीं होता। क्रोध पाप का मूल है। इससे बचकर रहना ही उचित है। कुछ देर बाद मेरा क्रोध कम हो गया। लेकिन उन लोगों के प्रति नफरत कम नहीं हुई। फिर, लगभग पंद्रह दिन बीत गये। अब सब सामान्य चल रहा था। पत्नी और बच्चों को मैंने समझा रखा था कि मिसेज गुप्ता और उनके घर के किसी भी सदस्य से कोई भी संबंध न रखे। 'मुझे कतई पसंद नहीं होगा कि तुम लोग उनके साथ बातें करो।' इस बीच एक दिन शाम को जब मैं घर पहुँचा तो देखा, पत्नी घर पर नहीं थी। सिर्फ दोनों बेटे ही थे। मैंने उनसे पूछा, 'तुम्हारी मम्मी कहाँ गयी?' बेटे ने बताया, 'दीपू की मम्मी के साथ गयी हैं।' 'दीपू की मम्मी...' सुनकर चौंक पड़ा। दीपू तो मिसेज गुप्ता के बेटे का नाम है। वह उनके साथ कैसे गई? मेरे मना करने के बावजूद भी...। मुझे पत्नी पर बहुत तेज क्रोध आया। सोचा, 'आने दो, फिर बताता हूँ।' सोफे पर बैठा मैं कुछ देर तक सोचता रहा। फिर बेटे को पास बुलाकर पूछा, 'तुम्हारी मम्मी दीपू की मम्मी के साथ कहाँ गयी है?'

'डाक्टर के यहाँ गयी हैं।' 'क्यों?' 'दीपू सीढ़ियों से गिर पड़ा था। उसका हाथ टूट गया। उसी को लेकर मम्मी डाक्टर के पास गयी हैं', बेटे ने बताया। मिसेज गुप्ता के दुष्ट बेटे दीपू का हाथ टूट गया है, यह सुनकर मुझे खुशी हुई। लेकिन यह जानकर कि मेरी पत्नी उस झगड़ालू और बदतमीज औरत की मदद करने गयी है, मुझे क्रोध आ रहा था। क्रोध में न जाने क्या-क्या बड़बड़ाता हुआ मैं पत्नी के लौटने की प्रतीक्षा करता रहा। कोई एक घंटे की प्रतीक्षा के बाद बाहर रिक्शा रुकने की आवाज आयी। साथ ही पत्नी का स्वर भी सुनाई पड़ा। मैं समझ गया कि वह अस्पताल से लौट आयी है। मैं अपनी जगह क्रोध में उबलता बैठा रहा। कुछ देर बाद काल बेल बजी। बेटे ने जाकर दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही पत्नी सामने आकर खड़ी हो गयी, 'आप कब आये?' 'जब रोज आता हूँ।' मैंने क्रोध से उसे घूरा। वह समझ गयी कि मैं क्रोध में हूँ। उसने अपना बाण चलाया और मुस्कुराते हुए पास बैठ गयी। अपनी मुस्कराहट से, अपनी बातों से वह मेरा क्रोध ठंडा करना चाहती थी। लेकिन उसके बाणों का मुझपर कोई असर नहीं हुआ।

मैंने पत्नी की तरफ देखते हुए गंभीर स्वर में कहा, 'बच्चों के ऊपर पूरे घर की जिम्मेदारी छोड़कर तुम्हें कहीं नहीं जाना चाहिए। तुम जानती हो कि समय कितना खराब है। ये बच्चे कितने छोटे हैं। अगर कोई बात हो जाती तब? फिर मिसेज गुप्ता जैसी बदमिजाज औरत की मदद करने की बात जरा भी नहीं सोचनी चाहिए।' 'क्या करती!' 'घर से धक्के मारकर बाहर कर देती।' 'ये आप...।' 'मैं सही कह रहा हूँ, ऐसी औरत को पास फटकने नहीं देना था। उस दिन तुमने देखा नहीं था कि मुझे क्या कह रही थी?'

'अब पुरानी बातें जाने दीजिए।' 'कैसे जाने दूँ। मैं कैसे भूल जाऊँ उस औरत को, जो मेरे साथ बदतमीजी पर उतर आयी थी। तुम कैसे भूल गयी कि उस औरत ने तुम्हारे पति का अपमान किया था।' 'मैं कुछ नहीं भूली थी। मुझे सब याद था। बस, उनके आँसू देखकर मैं इन्कार नहीं कर सकी। बेचारी बहुत परेशान थी। यहाँ के लिए वह बिल्कुल नयी है, कुछ भी नहीं जानती हैं। कई लोगों के पास वह मदद माँगने गयी। लेकिन किसी ने भी उसकी नहीं सुनी। तब वे मेरे पास आयीं। मैं इन्कार नहीं कर सकी। उसके बच्चे को तड़पते देखकर मुझसे नहीं रहा गया। तब .... उन्हें लेकर हास्पिटल चली गई। उन लोगों की मदद करके मैंने कोई गुनाह नहीं किया?' 'मिसेज गुप्ता जैसी औरत की मदद करना सबसे बड़ा गुनाह है।' 'आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए। आखिर हम पड़ोसी हैं, दुश्मन नहीं। हमें अपने पड़ोसियों की मदद करनी चाहिए। यही तो मानवता है।' 'ऐसा तुम सोचती हो। मिसेज गुप्ता नहीं।' 'छोड़िये इन बातों को...। माना मिसेज गुप्ता जैसे सभी नहीं होते। आप बैठें, मैं चाय बनाकर लाती हूँ।' उठकर वह किचन की तरफ चली गयी।

मैं अपनी जगह बैठा सोच रहा था। क्या आज की घटना से मिसेज गुप्ता को यह एहसास हुआ होगा कि पड़ोसियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। उनके बीच किस तरह रहना चाहिए। उनकी झगड़ालू प्रवृत्ति के कारण आज कोई भी उनकी मदद करने सामने नहीं आया था। क्या इस बात को वह समझ पायी होंगी। अब तो आनेवाला समय बतायेगा, मिसेज गुप्ता कितनी समझदार हुई हैं। उनके अंदर एक अच्छे पड़ोसी का गुण आया है कि नहीं...!

- 657/2, सिविल लाइन-1
शिवाजी नगर, पी डब्ल्यू डी के समीप
सुल्तानपुर-228001
मोबाइल: +91 9616887292, 8181079091

भारत में सौर ऊर्जा के बढ़ते कदम

- श्री नीरज हंस -

सूर्य से सीधे प्राप्त होने वाली ऊर्जा को सौर ऊर्जा कहते हैं। जैसाकि हम जानते हैं सूर्य भी सभी देशों में समान रूप से नहीं चमकता है। लेकिन भारत में सूर्य की किरणें लगभग सभी मौसम में लोगों को उपलब्ध होती हैं। हमारे देश में सौर ऊर्जा का सीधा प्रयोग तो सदियों से होता आया है। उनमें से कुछ प्रमुख हैं:

1. कपड़े सुखाना - धोने के बाद कपड़े सुखाने के लिए।
2. अनाज सुखाना - अनाज को छिलके से अलग करने तथा कई अन्य प्रयोजनों के लिए।
3. जल ऊष्मन - सर्दी में नहाने के पानी को हल्का गरम करने के लिए बाल्टी व टब में पानी रखा जाता था।
4. धूप सेंकना - सर्दियों में लोग धूप में बैठना पसंद करते हैं। यह विटामिन डी का एक बड़ा स्रोत है।
5. मछलियों को सुखाना - समुद्र तटीय प्रदेश में लोग मछलियों को सुखाकर लंबे समय तक प्रयोग में लाते हैं।
6. पुराने कपड़े, गद्दे, रजाई, कंबल जो काफी समय तक बंद रहते थे, उन्हें धूप में रखकर सीलन व बैक्ट्रिया दूर करना।

इस तरह सौर ऊर्जा को विविध प्रकार से प्रयोग में लाया जाता रहा है, किंतु सूर्य की ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदलना ही मुख्य रूप से सौर ऊर्जा के रूप में जाना जाता है। भारत में सूर्य को साक्षात देवता माना जाता है तथा बड़े ही आस्था के साथ सूर्य की पूजा की जाती है अर्थात भारत में सूर्य निर्विवाद ऊर्जा के देवता हैं। सूर्य की किरणों में कई प्रकार के रोग निवारक एवं कुछ विशेष समय के अनुसार नुकसानदायक तत्व भी होते हैं। सूर्य किरणों में अंतर्निहित ऊष्मा से वैज्ञानिक अब विद्युत उत्पादन पर जोर दे रहे हैं, क्योंकि यह ऊर्जा उत्पादन पर्यावरण के अनुकूल और आसानी से उपलब्ध होने वाला है। सौर ऊर्जा को दो प्रकार से विद्युत ऊर्जा में बदला जा सकता है-

1. प्रकाश-विद्युत सेल की सहायता से
2. किसी तरल पदार्थ को सूर्य की ऊष्मा से गर्म करने के बाद इससे विद्युत जनित्र चलाकर

सूर्य एक दिव्य शक्ति का स्रोत है। शांत व पर्यावरण के अनुकूल होने के कारण नवीकृत सौर ऊर्जा को लोगों ने अपनी संस्कृति व जीवनयापन के तरीकों के अनुकूल पाया है। सूर्य से सीधे प्राप्त होने वाली ऊर्जा में कई विशेषताएँ हैं, जो इस स्रोत को और आकर्षक बनाती हैं। इनमें इसका अत्यधिक विस्तारित होना, अप्रदूषणकारी होना व अक्षुण्ण होना प्रमुख है। संपूर्ण भारत की जमीन पर 5000 लाख करोड़ किलोवाट/घंटे के बराबर सौर ऊर्जा आती है, जो विश्व की संपूर्ण विद्युत खपत से कई गुना अधिक है। साफ धूप वाले दिनों में (बिना धुंध या बादल के) प्रतिदिन औसत सौर-ऊर्जा की प्राप्ति 4 से 7 किलोवाट/घंटा प्रति वर्गमीटर तक होती है। भारत की भौगोलिक बनावट ऐसी है कि देश में 250 से 300 दिन ऐसे होते हैं, जब सूर्य की रोशनी पूरे दिन उपलब्ध रहती है और भारतीय जनमानस उसे पारंपरिक तरीकों से उपयोग करता रहता है।

सौर फोटो वोल्टायिक कार्यक्रम :

सौर फोटो वोल्टायिक तरीके से ऊर्जा प्राप्त करने के लिए सूर्य की रोशनी को सेमीकंडक्टर की बनी सेल पर डाल कर बिजली पैदा की जाती है। इस प्रणाली में सूर्य की रोशनी से सीधे बिजली प्राप्त कर कई प्रकार के कार्य संपादित किये जा सकते हैं। फोटो वोल्टायिक प्रणाली माड्युलर प्रकार की होती है। इसमें किसी प्रकार की जीवाश्म ऊर्जा की खपत नहीं है तथा इनका प्रचालन व रखरखाव अत्यंत सुगम है। इसके साथ-साथ ये पर्यावरण को नुकसान भी नहीं पहुँचाते हैं। दूरस्थ स्थानों, रेगिस्तानी इलाकों, पहाड़ी क्षेत्रों, द्वीपों, जंगली इलाकों आदि, जहाँ पर पारंपरिक विद्युत वितरण ग्रिड प्रणाली द्वारा बिजली आसानी से नहीं पहुँच सकती है, वैसी जगहों के लिए यह एक आदर्श प्रणाली है। अत: यह प्रणाली दूरस्थ और दुर्गम स्थानों में बिजली की दशा को सुधारने में अत्यंत उपयोगी है।

भारत उन अग्रणी देशों में से एक है, जहाँ फोटो वोल्टायिक प्रणाली प्रौद्योगिकी का समुचित विकास किया गया है एवं इस प्रौद्योगिकी पर आधारित विद्युत उत्पादक इकाइयों द्वारा अनेक प्रकार के कार्य संपन्न किये जा रहे हैं। देश में 11 कंपनियों द्वारा सौर सेलों एवं 38 कंपनियों द्वारा फोटो वोल्टायिक माड्यूलों का निर्माण किया जा रहा है। लगभग 100 कंपनियाँ फोटो वोल्टायिक प्रणालियों के अभिकल्पन, समन्वयन व आपूर्ति के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। सन् 2013 के दौरान देश में 1962 मेगावाट के माड्यूल स्थापित किये जा चुके हैं। भारत सरकार का गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय सौर लालटेन, सौर-गृह, सौर सार्वजनिक प्रकाश प्रणाली, जल-पंप एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एकल फोटो वोल्टायिक ऊर्जा संयंत्रों की विकास

संस्थापना आदि को प्रोत्साहित कर रहा है।

भारत सरकार के गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय के सहयोग से देश के विभिन्न भागों में 'आदित्य सौर कार्यशालाएँ' स्थापित की जा रही हैं। नवीकृत ऊर्जा उपकरणों की बिक्री, रखरखाव, मरम्मत एवं तत्संबंधी सूचना का प्रचार-प्रसार इनका मुख्य कार्य है। सरकार इसके लिए एकमुश्त धन और दो वर्षो तक कुछ आवर्ती राशि उपलब्ध कराती है। यह अपेक्षा रखी गयी है कि ये कार्यशालाएँ ग्राहक-अनुकूल कार्य करेंगी एवं अपने लिए धन स्वयं जुटाएँगी।

सौर ऊर्जा को फोटो वोल्टायिक तरीके से कई माध्यमों द्वारा उपयोग में लाया जा सकता है। जिनमें से कुछ का उल्लेख निम्नलिखित प्रकार से है:

1. सौर लालटेन:

सौर लालटेन एक हल्का, ढोने योग्य फोटो वोल्टायिक तंत्र है। इसके अंतर्गत लालटेन, रखरखाव रहित बैटरी, इलेक्ट्रानिक नियंत्रक प्रणाली व 7 वाट का छोटा फ्लोरोसेन्ट लैंप/एल ई डी लैंप माड्यूल तथा एक 10 वाट का फोटो वोल्टायिक माड्यूल आता है। यह घर के अंदर व घर के बाहर प्रतिदिन 3 से 4 घंटे तक प्रकाश दे सकने में सक्षम है। इससे न तो धुआँ निकलता है, न आग लगने का खतरा है और न स्वास्थ्य के दुष्प्रभावित होने का। अब तक कई लाख सौर लालटेनें देश के ग्रामीण व दुर्गम इलाकों में बेची/वितरित की चुकी हैं।

2. सौर जल-पंप-फोटो वोल्टायिक प्रणाली:

इसके द्वारा पीने व सिंचाई के लिए कुआँ आदि से जल का पंप किया जाना भारत के लिए एक अत्यंत उपयोगी प्रणाली है। सामान्य जल पंप प्रणाली में 900 वाट का फोटो वोल्टायिक माड्यूल, एक मोटर युक्त पंप एवं अन्य नियंत्रण उपकरण होते हैं। अब तक 6,000 से अधिक सौर जल पंप स्थापित किये जा चुके हैं।

3. एकल बिजली घर:

इन बिजली घरों में अनेक सौर सेलों के समूह, स्टोरेज बैटरी एवं अन्य आवश्यक नियंत्रण होते हैं। इन संयंत्रों से ग्रिड स्तर की बिजली व्यक्तिगत आवासों, सामुदायिक भवनों व व्यापारिक केंद्रों को प्रदान की जा सकती है। इनकी क्षमता 1.25 किलोवाट तक होती है। अब तक लगभग 186 मेगावाट की कुल क्षमता के ऐसे संयंत्र देश के विभिन्न हिस्सों में लगाये जा चुके हैं।

4. सार्वजनिक सौर प्रकाश प्रणाली:

ग्रामीण इलाकों में सार्वजनिक स्थानों, गलियों, सड़कों आदि पर प्रकाश हेतु ये उत्तम प्रकाश स्रोत है। इसमें 74 वाट का एक फोटो वोल्टायिक माड्यूल, 75 एंपीयर घंटा की कम रखरखाव वाली बैटरी तथा 11 वाट का एक फ्लोरोसेन्ट लैंप होता है। आजकल एल ई डी लैंप का भी प्रयोग हो रहा है। इससे कम ऊर्जा की खपत में अधिक प्रकाश मिलता है। शाम होते ही यह अपने आप जल जाता है और प्रात: काल बुझ जाता है। देश के विभिन्न भागों में अब तक 40,000 से अधिक ऐसी इकाइयाँ लगायी जा चुकी हैं।

5. घरेलू सौर प्रणाली:

घरेलू सौर प्रणाली के अंतर्गत 2 से 4 बल्ब (या ट्यूब लाइट) जलाये जा सकते हैं। इस प्रणाली में 37 वाट का फोटो वोल्टायिक पैनेल व 40 एंपीयर घंटा की अल्प रखरखाव वाली बैटरी होती है। अब तक पहाड़ी, जंगली व रेगिस्तानी इलाकों के लगभग एक लाख घरों में यह प्रणाली लगायी जा चुकी है।

जल का ऊष्मन:

सौर-ऊष्मा पर आधारित प्रौद्योगिकी का उपयोग घरेलू, व्यापारिक व औद्योगिक इस्तेमाल के लिए जल को गरम करने में किया जा सकता है। देश में पिछले दो दशकों से सौर जल-ऊष्मक बनाये जा रहे हैं। देश में लगभग 4.5 लाख वर्गमीटर से अधिक क्षेत्रफल के सौर जल ऊष्मा संग्राहक संस्थापित किये जा चुके हैं, जो प्रतिदिन लगभग 220 लाख लीटर जल को 60-70 सेंटीग्रेड तक गरम करते हैं।

भारत सरकार का गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय, ऊर्जा के इस उपयोग को प्रोत्साहन देने हेतु प्रौद्योगिकी विकास, प्रमाण, आर्थिक एवं वित्तीय प्रोत्साहन, जन-प्रचार आदि कार्यक्रम चला रहा है। इसके फलस्वरूप यह प्रौद्योगिकी अब लगभग परिपक्वता प्राप्त कर चुकी है तथा इसकी दक्षता और आर्थिक लागत में भी काफी सुधार हुआ है। बृहद पैमाने पर क्षेत्र-परीक्षणों

द्वारा यह साबित हो चुका है कि आवासीय भवनों, रेस्तरों, होटलों, अस्पतालों व विभिन्न उद्योगों (खाद्य परिष्करण, औषधि, वस्त्र, डिब्बा बंदी, आदि) के लिए यह एक उचित प्रौद्योगिकी है।

जब हम सौर ऊष्मक से जल गर्म करते हैं तो इससे काफी बिजली की बचत होती है। 100 लीटर क्षमता के 1000 घरेलू सौर जल-ऊष्मकों से एक मेगावाट बिजली की बचत होती है। साथ ही 100 लीटर की क्षमता के एक सौर ऊष्मक से कार्बन डाई ऑक्साइड के उत्सर्जन में प्रतिवर्ष 1.5 टन की कमी होगी। इन संयंत्रों का जीवन-काल लगभग 15-20 वर्ष होता है।

सौर ऊर्जा को जल-ऊष्मक तरीके से कई प्रकार से उपयोग में लाया जा सकता है। इनमें से कुछ हैं-

1. सौर-पाचक (सोलर कुकर):

सौर पाचक द्वारा खाना पकाने से विभिन्न प्रकार के परंपरागत ईंधनों (जैसे-कोयला, लकड़ी, गैस इत्यादि) की बचत होती है। बाक्स पाचक, वाष्प पाचक व ऊष्मा भंडारक प्रकार के सौर पाचक विकसित किये जा चुके हैं। घरेलू एवं सामुदायिक, दोनों ही प्रकार विकसित किये गये हैं जो बरसात या धुंध के दिनों में दूसरे विकल्प जैसे बिजली से खाना पकाने हेतु उपयोग किये जा सकते हैं। भारत में अब तक लगभग पांच लाख सौर पाचक की बिक्री हो चुकी है।

2. सौर वायु ऊष्मन:

सूरज की गर्मी के प्रयोग द्वारा कटाई के पश्चात् कृषि उत्पादों व अन्य पदार्थों को सुखाने के लिए उपकरण विकसित किये गये हैं। इन पद्धतियों के प्रयोग द्वारा खुले में अनाजों व अन्य उत्पादों को सुखाते समय होने वाले नुकसान कम किये जा सकते हैं। चाय पत्तियाँ, लकड़ी, मसाले आदि को सुखाने में इनका व्यापक प्रयोग किया जा रहा है।

3. सौर-स्थापत्य:

कोई भी आवासीय व व्यापारिक भवन उसमें निवास करनेवाले व्यक्तियों के लिये सुखकर हो, यह आवश्यक है। 'सौर-स्थापत्य' वस्तुत: जलवायु के साथ सामंजस्य रखने वाला स्थापत्य है। भवन के अंतर्गत बहुत सी अभिनव विशेषताओं को समाहित कर जाड़े व गर्मी दोनों ऋतुओं में जलवायु के प्रभाव को कम किया जा सकता है। इसके चलते परंपरागत ऊर्जा (बिजली व ईंधन) की बचत की जा सकती है। भवन निर्माण में चूने के प्रयोग से यह संभव है। साथ ही दोहरी छत या प्लास्टर ऑफ पेरिस के झूठे (दोहरे) छत से भी काफी हद तक ऊर्जा की बचत की जा सकती है। भवन के रंग का भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान है।

कमियाँ:

सौर-ऊर्जा के इतने लाभों के बावजूद इससे कुछ समस्याएँ भी हैं। व्यापक पैमाने पर बिजली निर्माण के लिये पैनलों पर भारी निवेश करना पड़ता है। इसकी दूसरी कमी यह है कि दुनिया में अनेक स्थानों पर सूर्य की रोशनी कम आती है, इसलिए वहाँ पर सोलर पैनल कारगर नहीं हैं। तीसरा, सोलर पैनल बरसात के मौसम में ज्यादा बिजली नहीं बना पाते। फिर भी विशेषज्ञों का मत है कि भविष्य में सौर ऊर्जा का अधिकाधिक प्रयोग होगा। भारत सरकार भी सिलिकॉन वैली की तरह भारत में सोलर वैली बनाना चाहती है।

उपसंहार:

सूर्य एक दिव्य व अक्षय शक्ति स्रोत है। विज्ञान व संस्कृति के एकीकरण तथा संस्कृति व प्रौद्योगिकी के उपस्करों के प्रयोग द्वारा सौर ऊर्जा भविष्य के लिए अक्षय ऊर्जा का स्रोत साबित होने वाली है। बिजली की बढ़ती कीमतों ने आम आदमी के घरेलू बजट को बिगाड़ कर रख दिया है। ऐसे में सौर ऊर्जा लोगों के लिए एक अच्छा विकल्प बनकर उभरी है। इसकी मदद से न केवल बिजली का बिल कम किया जा सकता है, बल्कि ग्रिड ऊर्जा पर निर्भरता भी कम की जा सकती है। यह पर्यावरण और सेहत के लिए भी अनुकूल है।

- सहायक महा प्रबंधक
निर्माण विभाग
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
मोबाइल: +91 9949018775

आओ भाषा सीखें

'आओ भाषा सीखें' शीर्षक के तहत किट्टी पार्टी से संबंधित निम्नलिखित संवाद प्रस्तुत है। आशा है कि पाठक हमारे इस प्रयास से लाभान्वित होंगे।

जया : भारती! देर हो रही है! जल्दी चलो, सभी हमारी प्रतीक्षा कर रही होंगी।

జయా : భారతీ! దేర్ హో రహీ హై! జల్దీ చలో, సభీ హమారీ ప్రతీక్షా కర్ రహీ హోంగీ.

జయ : భారతీ! ఆలస్యమవుతోంది, త్వరగా రా, అందరూ మనగురించి ఎదురు చూస్తూ ఉంటారు.

जया : भारती! आलस्यमवुतोंदि, त्वरगा रा, अंदरू मनगुरिंचि एदुरु चूस्तू उंटारु।

भारती : आ रही हूँ यार। कुछ चीजें लेनी हैं!

భారతీ : ఆ రహీ హూఁ యార్. కుఛ్ చీజే లేనీ హైఁ!

భారతీ : వస్తున్నాను, కొన్ని వస్తువులు తీసుకోవాలి.

भारती : वस्तुन्नानु, कोन्नि वस्तुवुलु तीसुकोवालि।

जया : हाँ, हाँ, ले लो। मैं भी कुछ लेकर आ रही हूँ

జయా : హాఁ, హాఁ, లే లో. మైఁ భీ కుఛ్ లేకర్ ఆ రహీ హూఁ.

జయ : తీస్కో తీస్కో, నేను కూడా కొన్ని తీసుకు వస్తున్నాను.

जया : तीस्को तीस्को, नेनु कूडा कोन्नि तीसुकु वस्तुन्नानु।

भारती : अच्छा! यह बताओ, खेल के बारे में कुछ निर्णय हुआ?

భారతీ : అచ్ఛా! యహ్ బతావో, ఖేల్ కే బారే మేఁ కుఛ్ నిర్ణయ్ హువా?

భారతి : సరే! ఆటల గురించి ఏమైనా నిర్ణయించారా?

भारती : सरे! आटल गुरिंचि एमैना निर्णयिंचारा?

जया : सोच रही हैं कि अब की बार 'पार्टी' में कुछ नये खेल खेले जाएँ।

జయా : సోచ్ రహీ హైఁ కి అబ్ కీ బార్ 'పార్టీ' మేఁ కుఛ్ నయే ఖేల్ ఖేలే జాయేఁ.

జయ : ఈసారి పార్టీలో కొత్త ఆటలు ఆడించాలని అనుకుంటున్నాము.

जया : ईसारि पार्टीलो कोत्त आटलु आडिंचालनि अनुकुंटुन्नामु।

भारती : नये खेल... मतलब...

భారతీ : నయే ఖేల్... మత్‌లబ్.....

భారతి : కొత్త ఆటలు.... అంటే.....

भारती : कोत्त आटलु... अंटे...

जया : देखो, मैं हिंदी का एक शब्द बताऊँगी। उस शब्द के वर्णों से तुम कुछ शब्द बनाओगी। ऐसे जो ज्यादा शब्द बनाएगा, वह विजयी होगा।

జయా : దేఖో, మైఁ హిందీ కా ఏక్ శబ్ద్ బతావూంగీ. ఉస్ శబ్ద్ కే వర్ణోఁ సే తుమ్ కుఛ్ ఔర్ శబ్ద్ బనావోగీ. ఐసే జో జ్యాదా శబ్ద్ బనాయేగా, వహ్ విజయీ హోగా.

జయ : అంటే, నేను హిందీలో ఒక పదం చెప్తాను. ఆపదంలోని అక్షరాలతో నువ్వు కొన్ని పదాలను తయారుచేస్తావు. ఇలాగ ఎవరు ఎక్కువ పదాలను తయారుచేస్తే వాళ్ళు గెలుస్తారు.

जया : अंटे, नेनु हिंदी लो ओक पदम् चेप्तानु। आ पदंलोनि अक्षरालतो नुव्वु कोन्नि पदालनु तयारुचेस्तावु। इलाग एवरु एक्कुव पदालनु तयारुचेस्ते वाल्लु गेलुस्तारु।

भारती : यार... सुनने में तो अच्छा लग रहा है। ऐसे बहुत से शब्द बनाये जा सकते हैं।

భారతీ : యార్... సున్‌నే మేఁ తో అచ్ఛా లగ్ రహా హై. ఐసే బహుత్ సే శబ్ద్ బనాయే జా సక్‌తే హైఁ.

భారతి : ఇదేదో వినడానికి బానే ఉందే. ఇలాగ చాలా పదాలు తయారుచేయవచ్చు.

भारती : इदेदो विनडानिकि बाने उंदे। इलाग चाला पदालु तयारुचेयवच्चु।

जया : हाँ... यह एक दिमागी कसरत है।

జయా : హాఁ... యహ్ ఏక్ దిమాగీ కస్‌రత్ హై.

జయ : అవును.... ఇది మెదడుకు మేత.

जया : अवुनु... इदि मेदडुकु मेता।

भारती : ठीक कहती हो, हर पार्टी में एक ही तरह के खेलों से ऊबन होती है।

భారతీ : ఠీక్ కహ్‌తీ హో, హర్ పార్టీ మేఀ ఏక్ హీ తరహ్ కే ఖేలోఀ సే ఊబన్ హోతీ హై.

భారతి : నిజమే, ప్రతీ పార్టీలో ఒకలాంటి ఆటలే అంటే విసుగొస్తుంది.

भारती : निजमे, प्रती पार्टीलो ओकलांटि आटले अंटे विसुगोस्तुंदि।

जया : इसीलिए तो अब की बार कुछ अलग करने की सोच रही हूँ।

జయా : ఇసీలియే తో అబ్ కీ బార్ కుఛ్ అలగ్ కర్‌నే కీ సోచ్ రహీ హూఀ.

జయ : అందుకే ఈసారి ఏదైనా భిన్నంగా చేయాలని ఆలోచిస్తున్నాను.

जया : अंदुके ईसारि एदैना भिन्नंगा चेयालनि आलोचिस्तुन्नानु।

भारती : बचपन में त्योहारों के समय सब मिलकर तरह-तरह के खेल खेलते थे न!

భారతీ : బచ్‌పన్ మే త్యోహారోఀ కే సమయ్ సబ్ మిల్‌కర్ తరహ్-తరహ్ కే ఖేల్ ఖేల్‌తే థే న!

భారతి : చిన్నప్పుడు పండుగల్లో అందరం కలసి రక-రకాల ఆటలు ఆడుతూండేవాళ్ళం కదా.

भारती : चिन्नप्पुडु पंडुगल्लो अंदरम् कलिसि रकरकाल आटलु आडुतूंडेवाल्लम् कदा।

जया : हाँ... यार, आज उन खेलों के नाम तक सुनने को नहीं मिलते।

జయా : హాఀ... యార్, ఆజ్ ఉన్ ఖేలోఀ కే నామ్ తక్ సున్‌నే కో నహీఀ మిల్‌తే.

జయ : అవును, ఇప్పుడు ఆ ఆటల పేర్లు కూడా వినబడడం లేదు.

जया : अवुनु, इप्पुडु आ आटल पेर्लु कूडा विनबडडम् लेदु।

भारती : आज अपार्टमेंट संस्कृति का बोल-बाला है।

భారతీ : ఆజ్ అపార్ట్‌మెంట్ సంస్కృతి కా బోల్-బోలా హై.

భారతి : ఇప్పుడు అపార్ట్‌మెంట్ సంస్కృతి ఎక్కువగా కనిపిస్తుంది.

भारती : इप्पुडु अपार्टमेंट संस्कृति एक्कुवगा कनिपिस्तुंदि।

जया : ऐसा मत कहो, अपार्टमेंट में लोग अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं।

జయా : ఐసా మత్ కహో, అపార్ట్‌మెంట్ మేఀ లోగ్ అప్‌నే ఆప్ కో సురక్షిత్ మహసూస్ కర్‌తే హైఀ.

జయ : అలా అనకు, జనం అపార్ట్‌మెంట్‌లే సురక్షితం అని భావిస్తున్నారు.

जया : अला अनकु, जनम् अपार्टमेंटले सुरक्षितम् अनि भाविस्तुन्नारु।

भारती : 'किट्टी पार्टियों' का दौर यहीं से शुरू हुआ है।

భారతీ : 'కిట్టీ పార్టియోఀ' కా దౌర్ యహీఀ సే షురూ హువా హై.

భారతి : 'కిట్టీ పార్టీలు' ఇక్కడే మొదలయ్యాయి.

भारती : 'किट्टी पार्टीलु' इक्कडे मोदलय्यायि।

जया : इन पार्टियों में महिलाएँ अन्य महिलाओं से मिल सकती हैं।

జయా : ఇన్ పార్టియోఀ మేఀ మహిలాయేఀ అన్య మహిలావోఀ సే మిల్ సక్‌తీ హై.

జయ : ఈ పార్టీలలో మహిళలు మిగిలిన మహిళలను కలవవచ్చు.

जया : ई पार्टीललो महिललु मिगिलिन महिललनु कलववच्चु।

भारती : इससे टी.वी. के आगे बैठकर समय बरबाद करने से बचा जा सकता है।

భారతీ : ఇస్‌సే టి.వి. కే ఆగే బైఠ్‌కర్ సమయ్ బర్‌బాద్ కర్‌నే సే బచా జా సక్‌తా హై.

భారతి : ఈవిధంగా టి.వి. ముందు సమయం కూడా వృథా అవ్వదు.

भारती : ईविधंगा टी.वी. मुंदु समयम् कूडा वृथा अव्वदु।

जया : यही नहीं, किट्टी पार्टी जहाँ होती है, उसी घर में खिलाया-पिलाया जाता है।

జయా : యహీ నహీఀ, కిట్టీ పార్టీ జహాఀ హోతీ హై, ఉసీ ఘర్ మేఀ ఖిలాయా-పిలాయా జాతా హై.

జయ : అంతే కాదు, కిట్టీ పార్టీ ఏ ఇంట్లో జరిగితే అక్కడే భోజనం ఏర్పాటు చేయడం జరుగుతుంది.

जया : अंते कादु, किट्टी पार्टी ए इंट्लो जरिगिते अक्कडे भोजनम् एर्पाटु चेयडम् जरुगुतुंदि।

भारती : ऐसे तरह-तरह के पकवान भी सीखने का मौका मिलता है।

భారతీ : ఐసే తరహ్-తరహ్ కే పక్వాన్ భీ సీఖ్నే కా మౌకా మిల్తా హై.

భారతి : ఇలాగ రకరకాల వంటలు నేర్చుకోవచ్చు.

भारती : इलाग रकरकाल वंटलु नेर्चुकोवच्चु।

जया : अपार्टमेंट में बहुभाषी लोग रहते हैं। उनसे मिलकर हम उनके रहन-सहन, खान-पान आदि के बारे में जान सकती हैं।

జయా : అపార్ట్‌మెంట్ మేఁ బహుభాషీ లోగ్ రహ్తే హైఁ. ఉన్‌సే మిల్‌కర్ హమ్ ఉన్‌కే రహన్-సహన్, ఖాన్-పాన్ ఆది కే బారే మేఁ జాన్ సక్‌తీ హైఁ.

జయ : అపార్ట్‌మెంట్‌లో వివిధ భాషలకు చెందినవారు ఉంటారు. వాళ్ళతో కలిసి మనం వారి ఆచార-వ్యవహారాలను, ఆహారపు అలవాట్లను తెలుసుకోగలుగుతాము.

जया : अपार्टमेंटलो विविध भाषलकु चेंदिनवारु उंटारु। वाल्लतो कलिसि मनम् वारि आचार-व्यवहारालनु, आहारपु अलवट्लनु तेलुसुकोगलुगुतामु।

भारती : अच्छा, यह बताओ पिछली बार खेलों में तुम्हें कोई पुरस्कार मिला?

భారతీ : అచ్ఛా, యహ్ బతావో పిఛ్‌లీ బార్ ఖేలో మేఁ తుమ్హే కోయీ పురస్కార్ మిలా?

భారతి : అది సరే, క్రిందటి సారి ఆటలలో నీకేమైనా బహుమతి లభించిందా?

भारती : अदि सरे, क्रिंदटि सारि आटललो नीकेमैना बहुमति लभिंचिंदा?

जया : यार, कोई पुरस्कार मिले या न मिले, मुझे तो सभी के साथ समय गुजारना अच्छा लगता है।

జయా : యార్, కోయీ పురస్కార్ మిలే యా న మిలే, ముఝే తో సభీ కే సాథ్ సమయ్ గుజార్‌నా అచ్ఛా లగ్‌తా హై.

జయ : బహుమతి లభించినా, లభించకపోయినా నాకైతే అందరితో సమయం గడపడం ఆనందంగా ఉంటుంది.

जया : बहुमति लभिंचिना, लभिंचकपोइना नाकैते अंदरितो समयम् गडपडम् आनंदंगा उंटुंदि।

भारती : हाँ... तुम ठीक कहती हो।

భారతీ : హాఁ.... తుమ్ ఠీక్ కహ్‌తీ హో.

భారతి : అవును.... నిజమే.

भारती : अवुनु... निजमे।

जया : भारती! खाली मेरी ही बात नहीं है। ऐसी कोई महिला नहीं दीखी... जो पुरस्कार न मिलने की वजह से दु:खी हुई हो।

జయా : భారతీ! ఖాలీ మేరీ హీ బాత్ నహీఁ హై. ఐసీ కోయీ మహిలా నహీ దీఖీ... జో పురస్కార్ న మిల్‌నే కీ వజహ్ సే దుఖీ హుయీ హో.

జయ : భారతీ! నేనే కాదు, ఏ మహిళా బహుమతి లభించలేదని దు:ఖించిన దాఖలాలు లేవు.

जया : भारती! नेने कादु, ए महिला बहुमति लभिंचलेदनि दु:खिंचिन दाखलालु लेवु।

भारती : ठीक कहती हो। बच्चे और घर के बाकी लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त रहते हैं।

భారతీ : ఠీక్ కహ్‌తీ హో. బచ్చే ఔర్ ఘర్ కే బాకీ లోగ్ అప్‌నే-అప్‌నే కామోఁ మేఁ వ్యస్త్ రహ్‌తే హైఁ.

భారతి : నిజమే, పిల్లలు, ఇంకా ఇంట్లో మిగిలిన సభ్యులు వాళ్ళ-వాళ్ళ పనులతో సతమతమవుతూ ఉంటారు.

भारती : निजमे, पिल्ललु, इंका इंट्लो मिगिलिन सभ्युलु वाल्ल-वाल्ल पनुलतो सतमतमवुतू उंटारु।

जया : हम 'किट्टी पार्टी' के नाम पर व्यस्त हो जाती हैं।

జయా : హమ్ 'కిట్టీ పార్టీ' కే నామ్ పర్ వ్యస్త్ హో జాతీ హైఁ.

జయ : మనం 'కిట్టీ పార్టీ' తో బిజీ అయిపోతాము.

जया : मनम् 'किट्टी पार्टी' तो बिजी अयिपोतामु।

भारती : तो चलें।

భారతీ : తో చలేఁ.

భారతి : అయితే వెళ్దామా.

भारती : अयिते वेल्दामा।

जया : हाँ... चलो।

జయా : హాఁ... చలో.

జయ : పద వెళ్దాం.

जया : पद वेल्दाम्।

- प्रवंधक (राजभाषा), राजभाषा विभाग
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
मोबाइल: +91 9866321109

क्षेत्रीय व शाखा कार्यालयों में हिंदी दिवस

नई दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय :

नई दिल्ली स्थित उत्तरी क्षेत्रीय कार्यालय में 09-10 अक्टूबर, 2015 को हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यालय में हिंदी के प्रयोग का जायजा लिया गया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि एवं इस्पात मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री टी श्रीनिवास ने प्रतिभागियों को वर्तमान समय में राजभाषा के बढ़ते महत्व का विवरण दिया। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक डॉ जय प्रकाश कर्दम ने कर्मचारियों को केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के पारंगत एवं पाँच दिवसीय कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने का सुझाव दिया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अरविंद पांडे एवं महाप्रबंधक (संपर्क) श्री अशोक कुमार मखीजा का योगदान उल्लेखनीय रहा। प्रबंधक (राजभाषा) डॉ टी हैमावती एवं कनिष्ठ सहायक (राजभाषा) डॉ जे के एन नाथन ने इसका संचालन किया।

चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय :

चेन्नई स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में 13-14 नवंबर, 2015 को हिंदी दिवस, हिंदी कार्यशाला और यूनिकोड प्रशिक्षण आयोजित किए गए। प्रबंधक (राजभाषा) डॉ टी हैमावती और कनिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री एम बी पडाल के संचालन में प्रतिभागियों के लिए हिंदी में प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। कंप्यूटर पर यूनिकोड में हिंदी के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि एवं उप महा प्रबंधक, रेल्वे व चेन्नई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव डॉ डी एन सिंह ने कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रबंधक (दक्षिण) श्री सी एस तम्पी एवं सभी कर्मचारी उपस्थित थे।

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय :

क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई में दिनांक 20 और 21 नवंबर 2015 को हिंदी दिवस मनाया गया। क्षेत्रीय प्रबंधक श्री बी बी अर्स ने कर्मचारियों को इनमें बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान शाखा बिक्री कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय का निरीक्षण भी किया गया। समापन समारोह में हिंदी शिक्षण योजना के उप निदेशक डॉ विश्वनाथ झा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने कहा कि भाषा और संस्कृति से जुड़कर यदि हम अपना कारोबार करते हैं तो हमारे ग्राहक आह्लादित होते हैं और आत्मीयता का अनुभव करते हैं। इस अवसर पर सहायक महाप्रबंधक श्री टी के दास, वरिष्ठ प्रबंधक श्री मनीष कुमार माथुर और सहायक प्रबंधक राहुल कुमार चौधरी एवं सभी कर्मचारी उपस्थित थे। उप प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती वी सुगुणा और वरिष्ठ सहायक श्री गोपाल के संचालन में यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

हिन्दी दिवस समारोह
25
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड

जरा गौर करें

संयुक्त राज्य अमेरीका में ओहायो राज्य के मिलान शहर में एक विधवा रहती थी। उसे एक पुत्र था। वह पुत्र विधवा माँ की आँखों का तारा भी था और उसके जीवन का एकमात्र सहारा भी था। माँ के प्रयासों के बदौलत वह लड़का कुछ पढ़-लिख भी गया था। लेकिन माँ समझती थी कि उसका पुत्र उतना होशियार नहीं है, फिर भी वह उसे वैज्ञानिक के रूप में देखना चाहती थी। लड़के के मन में भी वैज्ञानिक बनने की उत्कंठा थी। एक दिन लड़के ने माँ के समक्ष अपनी इच्छा प्रकट कर दी।

माँ ने उससे कहा कि बेटा मैं तुम्हारी मदद तो अवश्य करूँगी, पर प्रयास तो तुम्हें ही करने होंगे। उस लड़के ने प्रयास के लिए अपनी माँ को भरोसा दिलाया। बेटे से भरोसा पाकर माँ एक वैज्ञानिक से बात की और बेटे को लेकर वैज्ञानिक के घर गई। वैज्ञानिक ने बेटे से की परीक्षा ली और उसमें अदम्य साहस पाया। वैज्ञानिक ने उस लड़के को और परखना चाहा और माँ से कहा कि ‘आप अपने बेटे को दो दिनों के लिए मेरे पास छोड़ दीजिए।’ माँ ने वैसा ही किया। वैज्ञानिक ने उस लड़के को अपनी प्रयोगशाला की सफाई का काम उस लड़के को सौंपा। लड़के ने प्रयोगशाला के यंत्रों की सफाई करके उन्हें चमका दिया तथा सभी उपकरणों को व्यवस्थित ढंग से रख दिया।

तीसरे दिन जब माँ अपने बेटे को लेने वैज्ञानिक के घर पहुँची तो वैज्ञानिक ने कहा, ‘महोदया! आपका बेटा महान वैज्ञानिक बनेगा। यह प्रतिभावान भी है और जीवन में सफलता के लिए बहुत जरूरी दो गुण स्वच्छता और सुव्यवस्था का ज्ञान भी इसे अच्छी तरह से मालूम है।’

यह लड़का कोई और नहीं, बल्कि महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडीसन थे, जिन्होंने बल्ब के आविष्कार से पूरी दुनिया को रोशनी का तोहफा दिया है। वे कहते थे, ‘व्यक्ति एक प्रतिशत प्रेरणा और निन्यानबे प्रतिशत पसीने से बनता है।’

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
RASHTRIYA ISPAT NIGAM LIMITED
VIZAG STEEL
Pride of Steel